नाम किताब ऐश्वारिक सत्य

First Edition 2021

Price 80/-

Written By Siddhartha chatterjee

Translate By JAHANGIR ALAM

PUBLISHER

इस किताब में कुरान की आयतें का हिंदी अनुवाद इन्टरनेट से download किया गया है इसकी ज़िम्मेदारी हमारी नहीं है ।
सर्व प्रथम ये पुस्तक उर्दू भाषा में लिखी गई थी भषा शेली की मर्यादा के हेतु उर्दू और हिंदी का मिश्रण लख्ख के मुख से निकली हुई भाषा को में लखित रूप दिया इस में अगर कोई गलती हुई तो में शमा परार्थी हूँ ।
जहाँगीर आलम

परिचेय

गायत्री मंत्र

'ऊं भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न: प्रचोदयात्।। ...

सब का रक्क्षा करने वाला प्राण धारक सर्व दुःख विनाशक सुख सरूप, सारे जगत की सिर्ष्टि करता ही केवल पुज्न्ये . प्रकाशमान पवित्र ज्योति को हम धारण करते हे जो सारे पाप को नाश करते है सत्य और पव्तिरता को परकाश करते है और यही ज्योति हमारे ज्ञान , धर्म ,अर्थ , काम ओत मोख्श प्राप्ति की प्रेरणा दान करते हैं

इस **मंत्र** का अर्थ होता है कि 'सृष्टिकर्ता प्रकाशमान परामात्मा के तेज का हम ध्यान करते हैं, परमात्मा का वह तेज हमारी बुद्धि को सद्मार्ग की ओर चलने के लिए प्रेरित करें।

इसका मतलब : प्राण स्वरुप , दुःख दूर करने वाले , ख़ुशी प्रदान करने वाले, दयावान , सृष्टि के अधिकर्ता , एक मात्र पुजन्ये . इन्ही के पवित्र और ज्ञान के पथ को हम धारण करते है यही हमारा धर्म है

सूरए फातेहा

सब तारीफ ख़ुदा ही के लिए सज़ावार है (2)
और सारे जहाँन का पालने वाला बड़ा मेहरबान रहम वाला है (3)
रोज़े जज़ा का मालिक है (4)
हम आपकी ही इबादत करते हैं और आपसे ही मदद चाहते हैं (5)
तो हमको सीधी राह पर साबित क़दम रखये (6)
उनकी राह जिन्हें आपने परुस्कार (आशीर्वाद) परदान किया है न उनकी राह जिन पर आपकी ग़ज़ब ढ़ाया गया और न गुमराहों की (7)
सूरा फातेहा

" तमाम तारीफें अल्लाह के लिए जो समस्त स्रष्टि का रब है बहुत मेहरबान रहम करने वाला बदले के दन का मालिक हम सिर्फ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ तुझ से मदद मांगते हैं हमें सीधे रास्तो की हिदायत दे उन लोगों का रास्ता जिस पर तुम ने इनाम किया ना उनका जन पर तेरा अज़ाब आया और न उनका जो गुमराह हुवे "

इन प्राचीन प्रार्थना मन्त्र का सन्मान और अदर करते हूवे किताब " ऐश्वारिक सत्य " का परिचेय (पेश) करवाता हूँ अल्लाह या इश्वर के आशीर्वाद से जी ज्ञान मुझे (हासिल) प्राप्त हुवा वोह मेरे दोस्त जहाँगीर आलम और बहन फोजिया जहाँगीर ने "ऐश्वारिक सत्य ' को पुस्तक का रूप प्रदान किया में इनका धन्यवाद करता हूँ ! " ऐश्वारिक सत्य " को बयान करते हूवे अगर कसी के आवेग और खयालात को तकलीफ हो तो में शामा प्रार्थी हूँ और ये सिर्फ मेरे ज़ाती ख़यालात हैं जिसका उत्तरदाई अल्लाह है मेरा अनुरोध है के "ऐश्वारिक सत्य" की गहराई को उदारता और अध्यत्मिक उपलब्धि से परखें .

किताब " ऐश्वारिक सत्य " का उदेश इंसानों के मध्ये की नफ़रत और झूटे रस्म व रवाज के साथ साथ अंधविश्वास और कुसंस्कार को दूर करना और समाज में धार्मिक पुस्तकों के साथ (मज़हबी किताबिं) के साथ जुड़े हूवे विशेष परकार के रस्म व रवाज की अनुसन्धान और धारमिक पुस्तकों के हवाले से (मज़हबी किताब) इन झूटे रस्म व रवाज की हकीकत को तलाश करना ही " ऐश्वारिक सत्य " का उदेश है .

(ना समझी) अग्यानता की कारण या जानबूझकर अपने मकसद के लिए समे के हर दोर में (मज़हबी किताबों) धार्मिक पुस्तकों के साथ विशेष पारकर की सोच लोगों ने जोड़े जिस का नतीजो ये है के इंसानों के

मध मज़हबी मतभेद ! दुनिया में मोजूद सारे खियालात और कानून इंसानों के बनाये हूवे हैं और जो ख्यालात और कानून इन्सान को शांति / सुकून परदान फरमाए वोही " ऐश्वारिक सत्य " है .

हर धर्म की बुन्याद एक होने के बावजूद इंसानों को आपसी इख्लाफात/ मतभेद में उलझा रखा है और इसे फसादी बना दिया है और इसकी वजह है गलत रस्म व रिवाज और अंध विश्वास.

इंसानों ने मज़हब की बुनयादी बातों को छोड़ कर मज़हबी रस्म व रवाज में उलझ कर आपस में नफरत और फसाद की बुनयाद कायेम की " ऐश्वारिक सत्य " सबूत के साथ प्रमाण देती है के कुछ मज़हबी रस्म व रवाज और अकीदत मज़हबी किताबों को (गुमराह) पथ भ्रष्ट करने का ज़रया है "ऐश्वारिक सत्य " इन सारे मज़हबी रस्म व रवाज को बे बुन्याद साबित करती है . मज़हबी किताबों के दुआरा (गैर अकली) अबोध , अधार्मिक और कुसंस्कार वाली बातों को दूर कर के मज़हब के बुनयादी असूलों को समाज में कायेम करना मेरा अहम मकसद है .

किताब "ऐश्वारिक सत्य " ये साबित करती है के कसी भी मज़हबी किताब की कोई भी आदर्श किसी तारीखी बन्दिश से बंधी हूई नहीं है .मज़हबी किताबों की हर आदर्श हर दोर और हर वक्त के लिए परिपूर्ण है सिर्फ इसे समझने की अविश्कता हे . धार्मिक पुस्तकों की ऐश्वारिक प्रक्रतिक और विज्ञानिक तःथो समझने में "ऐश्वारिक सत्य " मदद करेगी हक तो ये हे के हर कोई "ऐश्वारिक सत्य " का दावा करता है लेकिन सच्चाई और हकीकत वोही तलाश करते हैं जिन्हें परमेश्वर की मदद हासिल होती है , इंसानों की तमाम कोशिश के बावजूद इसे इतना ही मिलता है जितनी प्रक्रति की मर्ज़ी होती है .

ज़हीनी इख्तलाफत (विभिनता) इन्सान की फितरत(चरित्र) है और इस फितरत से इसके आपने रिश्ते दार भी आजाद नहीं चाहे वोह माँ बाप, भाई बहन मियां बीवी ही कियूं न हों! खयालात के बारे में हर कोई अपनी सोच(कर्मों) का ज़िम्मेदार (उत्तर्दाये) है और इस सोच से किसी को तकलीफ (कष्ट) ना पहोंचे यही इन्सान की बेहतरीन (उतम) कोशशि होनी चाहये .

हर सोच का फेसला इश्वर के इख्त्यार(अधिकार) में है और इस बात पर यकीन रखकर कोई किसी को बातिल ना ठहरौय याद रखें इश्वर ने अपने कामों की ज़िम्मेदारी कसी को नही सोंपी इसलिए कुरान में साफ तोर पर कहा है " लकुम दिनों कुम व्ल्यादीन " यानि तुम्हारा दीन तुम्हारे साथ और मेरा दीन मेरे साथ " यानि पूरा तरह जम्हूरियत (गणतंत्र) .

"ऐश्वारिक सत्य " के जरिया मेरी ये कोशिश रहेगी के इंसानों के आपसी इख्लाफत कम से कम हों और वो एक दुसरे के करीब औएँ , इन्सान इबादत(प्रार्थना) करता है तो सिर्फ अपने जेहनी स्कुंन (मानसिक शांति) के लिए .इबादत के तरिकात (पूजा पद्धति) में भी इन्सान को ज़ाती तरीका अपनाने की आज़ादी हो और मेरे खियाल से दुनया में मेजुद सारे इबादत के तरिकात प्रक्रति की मर्ज़ी से ही कायेम हैं और "ऐश्वारिक सत्य " इस सत्य को प्रमाण करता है .

नेक अमल इन्सान(पवित्र कर्म) को अपनी मेहनत और क़ुरबानी (त्याग) से हासिल करना पड़ते हैं और इन्सान का आपसी रिश्ता इंसानी अमाल (चरित्रक गुण) पर निर्भर करता है . नेक अमाल (पवित्र गुण) की बुनियाद पर नेक रिश्ते बनते हैं और बुरे अमाल की बदोलत बुरे रिश्ते .रिश्तों के बारे में कभी कभी ये भी देखने को मलता है की सगे आपस में दुश्मन बन जाते हैं और ग़ैर सगे से भी बढकर अपने बन जाते हैं . हर इन्सान दुनीया में अकेला आया है और जाने का सफर भी उसे अकेले ही तय करना होगा और इस आने जाने के दोरान इसके मुख्तलिफ (विशेष) रिश्ते कायेम होते हैं और वोही रिश्ता कामयाब होता है जिसे इन्सान दिल से निभाए .

वह सपर्क परिपूर्ण हिता है जिसे मानव अपनी आत्मा के साथ जोड़ कर ओस सम्पर्क के सारे करत्व का पालन करते हैं

" तुम क्या लेकर अये हो तुम्हारा क्या है और तुम कया लेकर जावगे "

तुम्हे मोत का मज़ा चखना है दोलत की सोच करने से बेदली (हताशा) और बेदली से खावाह्शत (अभिलाषा) और खावाह्शत पूरी ना होने से गुस्सा पैदा होता है और गुस्सा से बेवकूफी और बेवकूफी से बेचेनी होती है जो काम, क्रोध और इर्षा उत्पन होती है और यही ज्ञान का खात्मा करती है .

समाज में ज्यादा से ज़यादा गुनाहों (पाप) की जड़ है ज़रुरत से ज्यादा अभिलाषा (ऊँचाकंषा) इसलिए दुनया के सारे कानून ज़रूरत से ज्यादा अभिलाषा को काबू में करने की कोशिश में लगे हूवे हैं .इन्सान की जाएज़ व नाजयेज़ अभिलाषा जब अपनी हेसियत से बढ़ जाती हैं तब गुनाह के ख्यालात इन्सान के दिमाग में परवार्श (पर्बरिश) पाते हैं और इस बढ़ती हूई अभिलाषा पूरी ना होने पर इन्सान मायूस (हताश) हो जाता है और इस मायूसी के तहत वोह गुनाहों में उलझ जाता है और अभिलाषा पूर्ति की चाहत में गेब (अद्रिश) को अपना मकसद बना कर गेरअकली(अजुक्तिक) और कूस्रस्कार की अन्धेरी राह में गुम हो जाता है और नेक(पवित्र) रास्ता से भटक जाता है और ऐश्वारिक सत्य और प्रक्रितक अवस्था और फितरत को भूल जाता है .

इंसानी फितरत हमेशा गेब की तलाश में लगी रहती है और गेब की सही जानकारी ना होने पर अलग अलग कहानियाँ और ख्यालात इंसानी समाज में परवरिश पाते हैं .इन्सान के समाने जो चीज़ मोजूद है वोही इसकी असल हकीकत है और जो इसकी पोहंच से बाहर है वोह इसके लिए गेब है अल्लाह ने इंसानों को ज्ञान और बुधी देकर प्राणी श्रेष्ट बनया ताके वोह सृष्टी और प्रक्रति को समझ सके .

इन्सान की सुख सुविधा की लये इश्वर ने अपनी समस्त खूबियाँ दुनिया में मोजूद रखी और इसे वक्त ब वक्त (समे के साथ साथ) इंसानों को मोहिया (उपलब्ध) करवाते रहे और इस दोरान हर नये के साथ पुराने को बातिल करते रहे वक्त की गरदिश दुनिया में नुई नुई तब्दिलयां (बदलाव) लाती रही पुराने तजुर्बों से सबक हासिल कर के नई हालत की बुनयाद दुनिया में कायेम हूई और इंसानों ने इसे अपनी सहूलत (आवश्कता) के मुताबक अपनाया ज़रुरत और सुख सुभिदा के अनुसार अल्लाह ने हर इन्सान को अपनी अपनी पसन्द चुनने का अधिकार दिया और अपनी हेसियत के अनुसार प्रकृति को अपनाकर अपनी ज़रुरत पूरा करें . इसलिए ईश्वर ने हर मुक़र्र शुदा तहज़ीब (दी गई मानव स्भ्येता) को जो दुनया में मोजूद हे कोई भी बातिल नहीं हर मनुष अगर इसे मान कर चले तो फसाद ही न हो ईश्वर ने इन्सान को बुद्धि परदान कर के मानव श्रेष्ट बनाया और इस ताकत की बदोलत (द्वारा) इन्सान ने दुनया में अपनी अधिकार कायेम किया और इस ताकत का गलत इस्तेमाल ने इसका अपना ही सकून नष्ट कर दिया .

गिद्धों की तरह आपस में लड़ना इंसानी तहज़ीब (स्भ्येता) नहीं है , और ईश्वर की दी हुई हर युग की मानव सभ्येता इसकी मुखालफत (विरोध) करती है बदलते हुवे जमाने के साथ साथ इंसानों के रहन सहेन और तोर तरिका के बदलने की वजह से समाज ने मुख्तलिफ कसिम के(विशेष पारकर) रस्म व रवाज को बातिल टेहराया और इसे गेर अकली (अजोक्तिक) साबित किया, " ऐश्वारिक सत्य " भी इन सभ गेरअकली बातों को सबूत के साथ बातिल ठेराती है और इसे जांचना समस्त पाठक गानों का कम है .

ब्रहमांड के बारे में विध्वानो का धार्मिक वयेख्या का मोजुदा तर्जुमा (अर्थ) बिलकुल बेबुनयाद (अर्थ हीन) हे जो अविघ्यानिक हे , सत्य से कोसों दूर, इसका असल कारण है तर्जुमा (अनुवाद) करने वालों का अपरिपुन विज्ञानइक ज्ञान वेद और कुरान में कायेनात (ब्रहमांड) के बारे में जो आयतें (श्लोक) हैं इनकी गहराई को हासिल करने के लिए " ऐश्वारिक सत्य " इनकी मदद करेगी .

सच तो ये हैं के कोई भी किताब एक दुसरे से बढ़कर नहीं युग युग से ये गलत फ़हमी इंसानों के अंदर घुन की तरह लगी हूई है और हर कोई अपनी कताब को सर्व श्रेष्ट प्रमाणित करने पर लगा हूवा है .

धारमिक किताबों के अध्यन के दोरान हमें वोही बरह्मा शक्ति की जिसे कोई अल्लाह, कोई इश्वर और कोई गॉड कहकर पुकारता है , इसके बारे में थोड़ी सी ऐश्वारिक जानकारी मिली और इस बात का पूरी तरह से यकीन हो गया के जो तोहमत (अजोक्तिक) इस समाज में फेले हूवे हैं इन सारी बातों का मज़हबी किताबों में कोई वजूद नहीं और ये सिर्फ चन्द मतलब परस्त और स्वारथी इंनसानों की मनघडत और अविज्ञानिक ख़यालात हैं जो जानबुझकर अपने लाभ के लिए इंसानी समाज पर थोपे गये हैं किताबों की अछि बातें जो मेरे जहन को अछि लगती है इस किताब के जरया लोगों तक पोहचाने का फेसला लिया .

इश्वर की दया और मज़हबी किताबों के अध्यान से हमें जो शिख्शा प्राप्त हूइ मेरी कोशिश यही है के इस ज्ञान को " ऐश्वारिक सत्य " के ज़र्या लोगों तक ठीक ठीक पोहचाकर मानव समाज और स्भ्येता के के लिए अपने कर्ताव्व का पालन करु हर पाठक गणों से मेरा अनुरोध है के इस किताब की लिखी हूई हर बात को अपनी अंतरात्मा और बुधि से परखें और अनुसन्धान के दुआरा मेरी बातों की सच्चाई को अनुभव करें अविज्ञानिक और अजोक्तिक बातों को छोड़ कर सत्य और असत्य के मध् विचार करें .

"ऐश्वारिक सत्य" का अनुभव जिसे होगा वोह खुद बखुद मुझे पहचान लेगा ओत अनुभव क्र लेगा और इस्ल्ये अलग से में अपना परिचय देना सठिक नही समझता "ऐश्वारिक सत्य " ही मेरा पहचान है ,

परमेश्वर

शिष्टि का अधिकरता, सर्व रक्षक , भाग्य निरनायेक, सद्रोष्टा , आनंदस्वरूप , अविनाशी , अनंत , अशीम , जिसकी कोई शक्ल नही अद्द्रिश वोह पवीत्र ज्योति जो बरहमंड के कण कण में उपस्थित है ये शकती अजय अमर और निराकार है अतीत बर्तमान और भविष की सारी क्रय प्रक्रया यही शक्ति के दुवारा संघटित होती है बरहमंड के कण कण में है वोह सर्वो ज्ञानी सर्वो वयापी हैं हर प्राणी की प्रार्थना जो पवित्रता ज्ञान और शांति की तरफ हे वोही इस शक्ति को अनुभव कर सकता है

हर आकार इसी शक्ति से बनता हे तथापि ये निराकार है इसका कोई जोड़ नही .यही शक्ति अलग अलग रूप धारण करती है और अलग अलग कर्मों की निष्पति करती हैं सत्य ज्ञान और अनंत शक्ति की अधिकरता हर तःत्व का समाधान करते हैं सुवेम प्रकाशित विराजमान सत्य के अधिकर्ता यही शक्ती है

परमाणु (एटम) के अन्दर इलेक्ट्रान (Electron) प्रोटोन(Proton) और न्इटरोंन(Neutron) जिस शक्ति से बंधी हुई है वोह शक्ति ऐश्वारिक शक्ति है और इस शक्ति के दुआरा सिष्टि की हर क्रय पर्क्रीया निर्धारत होती है सनातन सर्वोवियापी ये शक्ति हर प्राणी के चरात्रिक गुणों को नियन्त्रण कर्ता

आकाश , जल अग्नि , वायु इन सभों की ताकत उस सर्व शक्ति मान की है

यह ज्योति मानव द्रष्टि सहन नही कर सकती ना ही मानव इसे ठीक ठीक व्येख्या क्र सकता है केवल वोह जिसे चाहे जितना चाहे अपनी उपस्थिथि का अनुभव करवाते हैं मानव सोच के बाहर सर्व वियापी अद्रिश शक्ति का थोडा सा ज्ञान ही मानव को पता चला समुन्दर से एक बूंद पानी की तरह .और इसे शक्ति को अवतार गण अलग लग नामों से पुकारा किसी ने अल्लाह किसी ने गाड और किसी ने भगवान / इश्वर पुकारा .

ये नाम सिर्फ इन्सान की सहूलात (सुविदा) के लिए है लेकिन इनकी बड़ाई के लिए कोई भी नाम संपूर्ण नहीं सब कुछ इन से है मगर वोह कसी से भी नहीं .

पैग़म्बर / अवतार

गीता अधयाये 4 श्लोक 7 / 8

जब कहीं और जहाँ कहीं भी धर्म में कमी होती है

और अधर्म में बढ़ोतरी होता है इस वक्त में जन्म लेता हूँ

सधूवों की रखशा करने और राखोशों का नाश करने और धर्म के

आदर्शों को फिर से पर्तिष्टिः करने के लिए में हर युग में अवतार लेता हूँ

मानव एक विशेष इश्वर निर्मत चक्र वियु में बंधे हुवे हैं और इस दायेरे के अनुसार हर इन्सान एक दुसरे से जूडा हूवा है और ये निर्धारित दायरे की वजह से इन्सान दुसरे प्राणियों से अलग है और इसे ही इंसानी समाज कहते हैं . इश्वर की करुना से इन्सान को ज्ञान बूढी के साथ साथ पाप पुनिया की भी पहचान दी , मानव चरित्र के अनुसार जिस वक्त समाज में बुराइयाँ फेलती हैं इस वक़्त परवरदीगर अपने रसूलों / अवतारों की माध्यम से इन्सान को अपना फर्ज़ याद दलाते हूवे इंसानों के जरये बुराई को ख़त्म करवा कर समाज को पाक और पवित्र बनाते हैं .

मानव का रहन सहेन का तरिका रूप रंग और भाषा भूगोलिक कारन की वजह से प्रथ्वी के अलग अलग प्रान्त में विभिन पारकर के समाजिक नीयम , खद्दो अभ्यास और कानून विभिन होते है

इन सारी बातों को सामने रखते हूवे परमेश्वर ने हर सम्पर्दय् के लिए एक स्थ्येता और पहचान रखी है , जो रास्ता मानव सम्पर्दय को पवित्रा और शांता का जीवन देते हैं इसी रास्ते की पहचान रसूलों (अव्तारगन) के दुआरा इश्वर ने इंसानों तक पोह्चाई रसूलों की " ऐश्वारिक रूप इश्वर की पवित्र ज्योति की झलक हे " इसलिए कुरान ने फरमाया " हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का "कियून्को अल्लाह के वजूद से ही रसूलों का रूहानी वजूद कायेम है इसलए अल्लाह ने रसूलों की जुबान से अपना हुक्म बियान किया है .

सूरा अह्कफ़ 46 आयत 9
तुम कह दो कि मैं कोई नया रसूल तो आया नहीं हूँ और मैं कुछ नहीं जानता कि आइन्दा मेरे साथ क्या किया जाएगा और न तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा मैं तो बस उसी का पाबन्द हूँ जो मेरे पास वही (आकाश वाणी) आयी है और मैं तो बस एलानिया आगाह (घोषित सुचना) करने वाला वाला हूँ (9)

सूरा मुज्ज़मल 73 आयत 15
हमने तुम्हारे पास एक रसूल को भेजा जो तुम्हारे मामले में गवाही दे जिस तरह फ़िरऔन के पास एक रसूल को भेजा था (15)

सुरह फुरकान 25 आयत 20
और हमने तुम से पहले जितने पैग़म्बर (अवतार) भेजे वह सब के सब यक़ीनन बिला शक खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते फिरते थे और हमने तुम में से एक को एक का आज़माइश बना दिया क्या तुम अब भी सबर करते हो और तुम्हारा परवरदिगार देख भाल कर रहा है (20)

सूरा अलराद 13 आयत 38
और हमने तुमसे पहले और बहुतेरे पैग़म्बर भेजे और हमने उनको बीवियाँ भी दी और औलाद और किसी पैग़म्बर की ये मजाल न थी कि कोई मौजिज़ा ख़ुदा की इजाज़त के बगैर ला दिखाए हर एक वक़्त के लिए एक तहरीर है (38)

सूरा अल्ह्ज 22 आयत 75
ख़ुदा फरिश्तों में से बाज़ को अपने एहकाम पहुँचाने के लिए मुन्तख़िब (चुन लेना) कर लेता है (75)

सूरा अब्राहिम 14 आयत 11
उनके पैग़म्बरों ने उनके जवाब में कहा कि इसमें शक नहीं कि हम भी तुम्हारे तरह आदमी हैं मगर ख़ुदा

अपने बन्दों में जिस पर चाहता है अपना फज़ल करता है और रिसालत अता करता है और हमारे एख़्तियार मे ये बात नही कि बे हुक्मे ख़ुदा हम कोई मौजिज़ा (अचंभा) तुम्हारे सामने ला सकें और ख़ुदा ही पर सब इमानदारों (पवित्र मानव) को भरोसा रखना चाहिए (11)

सूरा इमरान 3 आयत 79 . 164
किसी आदमी को ये ज़ेबा न था कि ख़ुदा तो उसे किताब और हिकमत और नबूवत अता फ़रमाए और वह लोगों से कहता फिरे कि ख़ुदा को छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ बल्कि तुम अल्लाह वाले बन जाओ क्योंकि तुम तो किताबे ख़ुदा को पढ़ाते रहते हो और तुम ख़ुद भी सदा पढ़ते रहे हो (79)
ख़ुदा ने तो ईमानदारों पर बड़ा एहसान किया कि उनके वास्ते उन्हीं की क़ौम का एक रसूल भेजा जो उन्हें खुदा की आयतें पढ़ पढ़ के सुनाता है और उनकी तबीयत को पाकीज़ा करता है और उन्हें किताबे और अक़्ल की बातें सिखाता है अगरचे वह पहले खुली हुयी गुमराही में पड़े थे (164)

सूरा बकरा 2 आयत 151

जैसे हम ने तुम में तुमही में का एक रसूल भेजा जो तुमको हमारी आयतें पढ़ कर सुनाए और तुम्हारे नफ़्स को पाकीज़ा करे और तुम्हें किताब क़ुरान और अक़्ल की बातें सिखाए और तुम को वह बातें बतांए जिन की तुम्हें पहले से खबर भी न थी (151)

कुरान शरीफ की इन सारी आयतों से रसूलों की पहचान संपूर्ण तोर पर जानी जा सकती है रसूल एक पुख्ता (बलिष्ट और पवित्र) इमान वाले इन्सानों से ही चुने गए खास इन्सान जसे इंसानों के लाभ के लिए अल्लाह ने इंसानी समाज में वक्ती (सामयिक) तोर पर मुकर्र (नियुक्त) करते हैं और रसूलों के दुआरा समाज में पेहली हूई शैतानी (असुरी) ताकतों को ख़त्म करते हूवे समाज को पाक साफ बनाते हैं इश्वर ने किताब की शक्ल में अपने आदेश यानि हिदायत (उपदेश) को रसूलों के दुआरा इंसानों तक पोंचाया और रस्लूलों का चरित्र भी किताबों के अनुसार ही होता है " 'गीता और कुरान शरिफ् " में रसूल और इश्वर की पहचान साफ तोर पर दी गुई है .

युग युग से शक से भरे इन्सानों ने अपनी फितरत (सवभाव) के अनुसार रसूलों पर शक किया रसूलों को अपनी सच्चाई का यकीन दिलाने के लिए बहुत सारी मुसीबतें उठानी पड़ी हर दोर में हर रसूल की सच्चाई पर शक किया गया और इस शक की वजह थी रसूलों की जिस्मानी साख्त (बनावट) जो आम इंसानों की तरह थी अल्लाह ने रसूलों को इंसानी वजूद में ही नियुक्त किया था और रसूलों ने भी अपने वजूद और हेसियत को पहचानते हूवे अपनी परस्तिश (उपासना /आराधना) की इजाजत नहीं दी रसूल वोही कहते थे जो अनहें वही (इश्वर दुवारा पैगम्बर को भिजा गया संदेश) होती थी लेकिन इंसानों ने रसूलों के वजूद से हमेशा इंकार किया और इनकी सच्चाई पर शक करते हूवे रसूलों की हर अच्छी बातों पर सवालात उठाते रहे रासूलों की वफात(देहान्त) के बाद इंसानों ने अंकी हिदायत को छोड़ कर रसूलों को ही माबूद(इश्वर) बना लिया ..

सूरा इमरान 3 आयत 183
जो कहते हैं कि ख़ुदा ने तो हमसे वायदा किया है कि जब तक कोई रसूल हमें ये न दिखा दे कि वह कुरबानी करे और उसको आग आकर चट कर जाए उस वक़्त तक हम ईमान न लाएंगें तुम कह दो कि ये तो बताओ बहुतेरे पैग़म्बर मुझसे क़ब्ल तुम्हारे पास वाज़े व रौशन मौजिज़ात और जिस चीज़ की तुमने फ़रमाइश की है लेकर आए फिर तुम अगर सच्चे हो तो तुमने उन्हें क्यों क़त्ल किया (183)

सूरा बकरा 2 आयत 108
क्या तुम चाहते हो कि तुम भी अपने रसूल से वैसै ही सवालात करो जिसतरह साबिक़ ज़माने में मूसा से

सवालात किए गए थे और जिस शख़्स ने इमान के बदले कुफ्र एख़तेयार किया वह तो यक़ीनी सीधे रास्ते से भटक गया (108)

इन्सान के शक की बुनियाद इतनी मज़बूत थी के आम इन्सान के साथ रसूलों का फर्क महसूस नही होता था , अपने आपको श्रेष्ट परमान करने के लिए रसूलों को झुटा साबित करने की कोशिश की लेकिन सारे रसूल अपनी जगह अफज़ल (श्रेष्ट) थे . अल्लाह ने हर रसूल को रसालत की निशानी के तोर पर कुछ ना कुछ खूबियाँ परदान की और इंसानी किरदार की सारी अछि खूबियाँ रसूलों में मोजूद होती थीं इस के बावजूद भी रसूलों के किरदार पर इंसानी शकूक और ऐतराज़ (अपत्ति) बरकरार रहे यहाँ तक के शक से भरे हूवे इन्सान ने रसूलों के ज़ाती करदार पर भी घनावने इलज़ाम लगाये .

उधारन के तोर पर श्री क्रष्ण जी के साथ राधा की मोहब्बत को एक घिनोनी शक्ल दी गयी और असे विष्णु पूरण में बिलकुल गन्दे तारिका में पेश किया गया विष्णु पूरण में विष्णु के किरदार को कहीं कहीं एक गन्दे जान्सी (सम्भोग) ख़यालात वाले इन्सान के तोर पर पेश किया ठीक इसी तरह रसूल पाक हजरत मुहम्मद के किरदार पर भी एक नाबालिघ लड़की हजरत आयेशा के साथ शादी का झूठा वाकेया पेश करते हूवे शादी के बारे में अलग अलग कहानियाँ बियान करके रसूलों को बदनाम करते हूवे कुछ गंदे जेहन वाले इंसानों ने अपने जन्सी खायालत को कामयाब करने के मकसद को पूरा करने के लिए झूटी और बे बुन्याद कहानियांन रसूलों की ज़िन्दगी के साथ जोड़ कर रसूलों की करदारकशी (चरित्र हनन) की और लोगों को गुमराह (पत भ्रष्ट) किया . में यकीन के साथ कह सकता हूँ के रसूलों ने अपनी ज़ाती ज़िन्दगी ऐसा कोई भी काम नही किया जो समाज , साएन्स प्रक्रति और इश्वर के आदर्शों के विरुद्ध हे .

भागवत गीता से रसूलों की पहचान

अध्याए 9 श्लोक 4 / 6 /11

ये सारा जगत मेरे अविक्त रूप से भरा हूवा है सब जानदार मुझ से हैं लेकिन में उन में नहीं

जिस तरह हर जगह चलने वाली शक्ति वान वायु हमेशी आकाश में रहती है इस तरह समस्त प्राणी को मुझ में जानो 6

जब में इंसानी रूप में अवतार लेता हूँ तो बेवकूफ मेरी हंसी अड़ाते हैं वोह मुझे परम ईश्वर मेरे देव्या सोभाव को नहीं जानते 11

अधय्याए 7 शोलोक 25

में कम अकाल और बेवकूफ लोगो के सामने कभी ज़ाहिर नही होता उन के लिए में हमेशा मेरी योग माया शक्ति के ज़र्य छपा रहता हूँ लिहाज़ा वोह ये नही जन सकते के में अजन्मा और अविनाशी हूँ 25

गीता की इन श्लोकों में ईश्वर ने साफ बियान किया है " में कभी लोगों के सामने ज़ाहिर नही होता " तो यकीनन क्रष्ण जी एक इन्सान थे और अल्लाह ने सिर्फ इनकी जुबान और जेहनी (मस्तिश) ताकत को इस्तेमाल किया था .ईश्वर ने रसूलों की जिसमानी (शरारिक) हेसियत इंसानों की तरह रखकर ये साबित किया के रसूल इंसानों में से चुने गये अफज़ल (श्रेष्ट) इन्सान हें रसूलों का रुतबा कभी भी पाक परवरदीगर ने अपने रुतबा (अस्तित्व) के साथ नहीं जोड़ा जन्म मृतु , जौन सम्पर्क , ज भूक पियास और शाररिक अवस्था से रसूल बंधे हूवे थे और वोह भी इंसानी जज्बात (आवेग) से आजाद नही थे लेकिन रसूल बहुत ही अफज़ल (श्रेष्ट) तारिका से अपने अंदर के शैतान (असुरी शक्ति) को काबू में रख सकते थे हर धार्मिक पुस्तक में " गुस्सा को अपवित्र मानव चरित्र कहा गया , लेकिन इसके बावजूद रसोलों को गुस्सा अता था

उधारन के तोर पर " कुरुछेत्र " के मैदान में क्रष्ण जी का हत्यार ना उठाने की कसम के बावजूद हत्यार उठा लिया था और बाद में अपने गुस्सा पर काबू पाया और हदीस भी ये फरमाती है के रसूल पाक को भी जब गुस्सा अता था तो आप मुंह फेर लिया करते थे .

इंसानों के अंदर मुकर्र शुदा (ओपस्तित) हर आदत रसूलों के अंदर भी पाई जाती है और इस से ये साबित होता है के रसुलों का रुतबा (अस्तित्व) कभी भी पाक परवरदीगर के रुतबा के बराबर नहीं रहा । रसूलों की नकल उतरना, उनकी मूर्ति बना कर पूजना, या इनकी कबर को पूजना इन्सान का अजोक्तिक किरदार है । रसूलों का हर काम धर्म पुस्तक के आदर्शों के अनुसार होने की वजह से रसूल अपने इन्द्रयों को काबू में रख सकते थे ।

क़ुरबानी, (त्याग) मोहब्बत, (प्रेम) इंसानियत, (मानवता) इमानदारी, (विश्वश्न्यता) नेकी, (सभ्य) परहेज़गारी (पवित्रता) फेसला , (निरनेय) और भी बहुत सारी बातों में रसूल आम इन्सानों से अफज़ल होते थे। रसूलों की इंसानी ज़िन्दगी समाज के लिए पाक परवरदीगर ने एक उधारन बनाई, लेकिन कुछ लोगों ने अपने मकसद के लिए झूटी कहानी और गेरअकली (अजोक्तिक)बातें रसूल के नाम से जोड़ कर रसूलों को कुस्वासकर का एक चिन्न बना दिया इंसानों ने इनके लिबास (वस्त्र) को अपना कर इनकी हिदायत (उपदेश) को छोड़ दिया, सत्य ज्ञान और प्राक्रतिक कानून के बाहर अन्हों ने कोई भी काम नहीं किया, प्रक्रति के दुवारा जो हुक्म इंसानों तक आया रसूलों की इंसानी जन्दगी ने इसे पूरी तरह कबूल किया ।

किसी भी रसूल ने ईश्वर की हिदायत के खिलाफ काम नहीं किया । किसी की अच्छाई को अपनाना अपने और समाज के लिए लाभ दायेक हैं, लेकिन अच्छाई के नाम पर रसुलों की हिदायत को छोड़ कर इनकी ज़ाती जिंदगी के रहन सहन और तोर तरिका को अपनाना रसूल परस्ती में शुमार होता है । इन्सान का रहन सहन और तोर तरीका मोसम और हालात पर निर्भर होता है और रसूल भी इस कुदरती कानून से बाहिर नहीं थे ।

ईश्वर की मर्जी से दुनिया में हर जगह का मोसम, तोर तरिका और रहन सहन अलग अलग होने के कारण वक्त और हालात के साथ साथ इंसानी ज़रूरीयात भी बदलती रहती हैं और इस बात को सामने रखकर और रसूल परस्ती छोड़ कर अल्लाह की बुनयादी हिदायतों पर अमल करना ही ऐश्वारिक सत्य है ।

निचे बियान की गुई कुरान शरीफ की इन आयतों से साफ तस्दीक होती है के खुली निशानियों के बावजूद भी लोगों ने अपने गन्दे न्फ्स्यती (इन्द्रिया) खुहाशत (इख्षा) से बेकाबू हो कर रसूलों की हिदायत के विरोधिता की ।

सूरा बकरा 2 आयत 87
और ये हक़ीक़ी बात है कि हमने मूसा को किताब दी और उनके बाद बहुत से पैग़म्बरों को उनके क़दम ब क़दम ले चलें और मरयम के बेटे ईसा को वाज़ेए व रौशन मौजिजे दिए और पाक रूह जिबरील के ज़रिये से उनकी मदद की क्या तुम उस क़द्र बददिमाग़ हो गए हो कि जब कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास तुम्हारी ख़्वाहिशे नफ़सानी के ख़िलाफ कोई हुक्म लेकर आया तो तुम अकड़ बैठे फिर तुमने बाज़ पैग़म्बरों को तो झुठलाया और बाज़ को जान से मार डाला (87)

सूरा फातिर 35 4 / 25
और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएँ तो तुमसे पहले बहुतेरे पैग़म्बर झुठलाए जा चुके हैं और कुल उमूर की रूजू तो ख़ुदा ही की तरफ है (4)

ऐसी नहीं गुज़री कि उसके पास डराने वाला पैग़म्बर न आया हो और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएँ तो कुछ परवाह नहीं करो क्योंकि इनके अगलों ने भी झुठलाया है उनके पास उनके पैग़म्बर वाज़ेए व रौशन मौजिज़े और सहीफ़े और रौशन किताब लेकर आए थे (25)

सूरा हाम मीम सजदा 41 14
जब उनके पास उनके आगे से और पीछे से पैग़म्बर आए कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करो तो कहने लगे कि अगर हमारा परवरदिगार चाहता तो फ़रिश्ते नाज़िल करता और जो देकर तुम लोग भेजे गए हो हम तो उसे नहीं मानते (14)

रसूल और इनकी किताबें

मानव समाज को पवित्र बनाते हूवे मानव को सुख शांति का जीवन प्रदान करने के लिए अवतार और इनके बताये हुवे रस्ते पुस्तक के रूप में मानुष समाज में उपस्थित है लेकिन ये बात इन्सान के लाभ के लिए ही इन्सान को कबूल करवाना एक वक्त तक रसूलों के लिए परेशानी की बात थी अच्छी और लाभ दायेक बातें के बावजूद भी गुनहगार इंसानों के सामने रसूलों को बेइजत होना पड़ा ।ज़रूरत से जियादा उच्चाकान्षा लालच , हवस, गुस्सा और अहंकार में डूबे हूवे इंसानों ने रसूलों की अच्छी बातों को इंकार करने के साथ साथ इनकी बेइजजती करना भी नही छोड़ा .

सुरा यासीन 36 आयत 30
हाए अफसोस बन्दों के हाल पर कि कभी उनके पास कोई रसूल नहीं आया मगर उन लोगों ने उसके साथ मसख़रापन ज़रूर किया (30)

रा इमरान आयत 32 / 184
कह दो कि ख़ुदा और रसूल की फ़रमाबरदारी करो फिर अगर यह लोग उससे सरताबी करें तो ख़ुदा काफ़िरों को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता (32)
अगर वह इस पर भी तुम्हें झुठलाएं तो तुमसे पहले भी बहुत से पैग़म्बर रौशन मौजिज़े और सहीफ़े और नूरानी किताब लेकर आ चुके हैं फिर भी लोगों ने आख़िर झुठला ही छोड़ा (184)

सूरा कहफ़ 18 आयत 106
ये जहन्नुम उनकी करतूतों का बदला है कि उन्होंने कुफ्र एख़्तियार किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों को हँसी ठठ्ठा बना लिया (106)

दुनिया के हर कोने में हर भाषा में एक निर्धारित समय पर ईश्वर ने रसूल भेजे । हर धार्मिक पुस्तक में एक ही उपदेश ईश्वर ने अलग अलग जगह, भाषा और अलग अलग अन्दाज़ में बियान (व्येख्या) की । जान बूझकर या अनजाने में द्यश्क्रित्यों ने या रख्शों के बन्दों ने रसूलों को ईश्वर से और एक दुसरे से जुदा करने की कोशिश की रसूलों और इनकी हिदायत को बाटकर इंसान आपस में बट कर टुकड़े टुकड़े हो गए ,और इसे अलग अलग धर्म सम्पर्द्धे सिष्टि की ।

सूरा निसा 4 आयत 150 151 152
बेशक जो लोग ख़ुदा और उसके रसूलों से इन्कार करते हैं और ख़ुदा और उसके रसूलों में तफ़रक़ा डालना चाहते हैं और कहते हैं कि हम बाज़ पर ईमान लाए हैं और बाज़ का इन्कार करते हैं और चाहते हैं कि इस

के दरमियान एक दूसरी राह निकलें (150)
यही लोग हक़ीक़तन काफ़िर हैं और हमने काफ़िरों के वास्ते ज़िल्लत देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है (151)
और जो लोग ख़ुदा और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी में तफ़रक़ा नहीं करते तो ऐसे ही लोगों को ख़ुदा बहुत जल्द उनका अज्र अता फ़रमाएगा और ख़ुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (152)

सूरा बनी इसराएल 17 आयत 15
जो शख़्स रुबरु होता है तो बस अपने फायदे के लिए और जो शख़्स गुमराह होता है तो उसने भटक कर अपना आप बिगाड़ा और कोई शख़्स किसी दूसरे का बोझ अपने सर नहीं लेगा और हम तो जब तक रसूल को भेजकर तमाम हुज्जत न कर लें किसी पर अज़ाब नहीं किया करते (15)

एक रसूल से दुसरे रसूल को छोटा करने की कोशिश ने इंसानों को फसाद की तरफ धकेल दिया और अपने चहिते रसूल को बड़ा मान कर दूसरों के रसूलों को इनकार करना ईश्वर का अपमान है

कुरान शरीफ की इन आयतों में सारी किताबों और सारे सरूलों पर इमान (विश्वास) लाने के लिए हुकुम फरमाया , इसलए रसूलों और किताबों का नाप तोल बेबुनयाद है। ईश्वर ने दुनिया के हर कोने में और हर भाषा में अपना पैग़ाम (सन्देश) लोगों तक पोंचाया । रसूलों का मानवी अस्तित्व (इंसानी वजूद) और जीवन का तोर तरीका अलग अलग होने के बावजूद ओन्हों ने एक ही पैग़म दुनिया में फेलाया कोयूनके ईश्वर भी एक और इनकी हिदायत (उपदेश) भी एक ।

ईस लिहाज़ से कुरान शरीफ की साफ और सुथरी उपदेश सूरा बकरह की आयत 136 और सूरा इमरान की आयत 84 में पाई गई है .

सुरह बकरह 2 आयत 136
कहो कि हम तो ख़ुदा पर ईमान लाए हैं और उस पर जो हम पर नाज़िल किया गया और जो सहीफ़े इबराहीम व इसमाइल व इसहाक़ व याकूब और औलादे याकूब पर नाज़िल हुए थे और जो किताब मूसा व ईसा को दी गई और जो और " पैग़म्बरों को उनके परवरदिगार की तरफ से उन्हें दिया गया" हम तो उनमें से किसी में भी तफरीक़ नहीं करते और हम तो ख़ुदा ही के फरमाबरदार हैं (136)-

सुरह इमरान 3 आयत 84
कहो कि हम तो ख़ुदा पर ईमान लाए हैं और उस पर जो हम पर नाज़िल किया गया और जो सहीफ़े इबराहीम व इसमाइल व इसहाक़ व याकूब और औलादे याकूब पर नाज़िल हुए थे और जो किताब मूसा व ईसा को दी गई और जो और" पैग़म्बरों को उनके परवरदिगार की तरफ से उन्हें दिया गया" हम तो उनमें से किसी में भी तफरीक़ नहीं करते और हम तो ख़ुदा ही के फरमाबरदार हैं (84) -

इन आयातों के दुआरा रसूलों और इनकी किताब और अनके दुआरा पुकारे गये ईश्वर के अलग अलग नामों पर विश्वास और सम्मान रखने का हुक्म दिया गया, यहाँ तक के " सूरा निसा" की आयत संख्या - 150 / 151 / 152, में साफ तोर पर अल्लाह ने सारे रसूलों पर इमान (विश्वास और सम्मान) ना लाने वाले को काफ़िर(दुश्क्रती) कहा है । " बाकी रसूल और ओनके रब " कहकर सारे रसूलों और अनके ज़र्य पुकारे गये ईश्वर के विभिन नामो पर इमान लाने का जक्र फरमा (उलेख) कर ये समझाया के अल्लाह इन तमाम नामों के दायरे से बाहर है, सिर्फ इंसानों की सुभिधा के कारण और उसकी मर्ज़ी से इंसानों के दरम्यान अपना नाम रखा और असके साथ साथ आयतों के दुवारा पुकारे गाए मुख्ल्फ़ नामों की मंजूरी दी ।

(अद्रिश ,अमर, अनन्त, निराकार और अजय शक्ति का कोई विशेष नाम नही होसकता मानव असे किसी भी नाम से पुकारे इसे कोई फर्क नही पड़ता)

प्रेम , मानवता , स्भ्यता , शिख्शा , पवित्रता और अहिंसा के आदर्शों को मुख्तलिफ(विशेष) अन्दाज़ में और तरीकों से, हर रसूल ने अपने ऊपर अवतीर्ण हुई किताबों में बयान फरमाया, इस्ल्ये रसूलों के साथ साथ इनकी किताबों पर भी इमान लाने की बात की गुई है । इस सिलसिले में शैतानी बन्दों (राख्शों) ने हर किताब में तहरीफ़(किसी शब्धो का उल्ट फेर करना) और इख्लाफत (बितर्क और विवाद) डालने की कोशिश करते रहे, लेकिन अल्लाह की दी हूई हिदायत की किताब की हिफाजत अल्लाह खुद करते हैं । इनके असूलों की निशानिया किताबों की बुनियाद पर मोजूद हैं और एक ही हिदायत उन्हों ने दुनिया के हर कोने में अलग अलग किताबों के ज़रया पोंचौई !.

सूरा बकरा 2 आयत 101 / 129
और जब उनके पास ख़ुदा की तरफ से रसूल आया और उस किताब की जो उनके पास है तसदीक़ भी करता है तो उन अहले किताब के एक गिरोह ने किताबे ख़ुदा को अपने पस पुश्त फेंक दिया गोया वह लोग कुछ जानते ही नहीं (101)
ऐ हमारे पालने वाले वालों में उन्हीं में से एक रसूल को भेज जो उनको तेरी आयतें पढ़कर सुनाए और अक़्ल की बातें सिखाए और उन के पाकीज़ा कर दें बेशक तू ही ग़ालिब और साहिबे तदबीर है (129)

ना समझने वाली जुबान (भाषा) में किताब पड़ना , असली किताब के साथ अपनी तरफ की मतलब वाली किताब को जोड़ना, जिस्मानी नापाकी (शारिरिक अपवित्रता) के बहाने किताब को ना छुने देना, किताब पड़ने में उंच नीच ज़ात पात का फर्क रखना , किताब की सच्चुई को एक दुसरे से छापना , इसकी आयतों का गलत मतलब निकालना और किताब की बुनियादी हिदायतों को छोड़ कर रसूलों की निजी ज़िन्दगी को अपना कर इनकी परसतिश (उपासना /आराधना) करवाना शैतान की घनावनी साजिश है।

(ज्ञान इश्वर प्राप्ति का रास्ता है और इसके साथ साथ अपने ज्ञान को सत्य के प्रकाश से परकाशित करना मोख्श प्राप्त करना है {इमान लाना हे} ज्ञान प्राप्ति के रस्ते में कोई भी बाधा अये किसी भी कारण से कियूं न हो उस से मुक्ति पाना और ज्ञान प्राप्त करना हे मानव का कर्तव् है)

सूरा अल्ह्ज 22 आयत 52
और हमने तो तुमसे पहले जब कभी कोई रसूल और नबी भेजा तो ये ज़रूर हुआ कि जिस वक़्त उसने आरज़ू की तो शैतान ने उसकी आरज़ू में खलल डाल दिया फिर जो वसवसा शैतान डालता है ख़ुदा उसे मिटा देता है फिर अपने एहकाम को मज़बूत करता है और ख़ुदा तो बड़ा वाक़िफकार दाना है (52)

शैतान की पूरी कोशिश के बावजूद अल्लाह ने अपने कानून और रसूल की परछाई इंसानी समाज में बरकरार रखी , कुछ हद तक शैतान ने लोगों को बहका कर और रसूलों के बुनयादी ख्यालात को छिपा कर उनके बाहरी लिबास को अपनाने पर मजबूर किया, लेकिन अल्लह की मर्जी के अनुसार रसूलो, किताबे और उमति(धर्म सम्पर्दय्क) इन सब का वजूद (अस्तित्व) दुनया में मोजूद है !

सच्चाई की बात तो ये है, के कसी भी रसूल ने किताब को अपने हातों से नहीं लिखा और ये सारी किताबिं रसूलों को वफ़ात(निधन) के बरसों बाद लखी हूई शक्ल में वजूद में औई और किताबी शक्ल में वजूद में

आने से पहले रसूलों के मुंह से निकली हूई हिदायत को लोग एकदूसरे से सुन कर याद रखते थे और इसतरह याद रखने और सुनाने के दरमियाँ शैतान ने किताबों में इख्लाफात पैदा किया लेकिन शैतान की लाख कोशिश के बावजूद लोगों को ईश्वर की बानी से गुमराह (प्तभ्रष्ट) नही कर सके और बर्तमान दुनिया इन्ही असोलों पर कायेम है । अल्लाह की भेजी हूई हर किताब की बुनयादी बातें एक हैं और इस हकीकत को धीरे धीरे महसूस करते हूवे इन्सान एक दुसरे के करीब आरहे हैं और दुनया के जियादा से जियादा लोगों ने वोही बात अपनाई जो अल्लह का असल हुक्म और मर्ज़ी है !

सूरा ऐराफ़ 7 आयत 35
ऐ औलादे आदम जब तुम में के पैग़म्बर तुम्हारे पास आए और तुमसे हमारे एहकाम बयान करे तो ना इसे कोई ख़ौफ़ होगा और न वह आजऱ्दा ख़ातिर होंगें (35)

सूरा बनी इसराईल 17 आयत 77
तुमसे पहले जितने रसूल हमने भेजे हैं उनका बराबर यही दस्तूर रहा है और जो दस्तूर हमारे हैं उनमें तुम तग़्य्युर रद्दो बदल न पाओगे (77)

सूरा रोम 30 आयत 9
क्या ये लोग रुए ज़मीन पर चले फिरे नहीं कि देखते कि जो लोग इनसे पहले गुज़र गए उनका अन्जाम कैसा हुआ हांलाँकि जो लोग उनसे पहले क़ूवत में भी कहीं ज़्यादा थे और जिस क़दर ज़मीन उन लोगों ने आबाद की है उससे कहीं ज़्यादा उन लोगों ने काष्त भी की थी और उसको आबाद भी किया था और उनके पास भी उनके पैग़म्बर वाज़ेए व रौशन मौजिज़े लेकर आ चुके थे तो ख़ुदा ने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया मगर वह लोग आप अपने ऊपर ज़ुल्म करते रहे (9)

इंसानों के हर पर्जती में अल्लाह का हुक्म आने के बावजूद इंसानों ने अनके हुक्म को ना पहचानते हूवे गलत राह इख़्तियार की। अपनी नादानी (निरबुधिता) की पहचान दुनया का नाज़ाराह करने से ही मिल जायेगा । अल्लाह के रहम और कुदरत से अज का इन्सान घर बेठे ही तमाम दुनिया के हर कोने की खबर रख सकते हैं इस लिहाज़ से अल्लाह ने जिसको जितनी सुख शांति का जीवन दान किया है, वोह इतना ही अल्लाह के बताये हूवे सीधे रस्ते पर है ।

(पवित्रता और ज्ञान के रसते में सुख शांति की प्राप्ति मानव के लिए आशीर्वाद है)

सूरा मोमिन 40 आयत 22
ये इस सबब से कि उनके पैग़म्बरान उनके पास वाज़ेए व रौशन मौजिज़े ले कर आए इस पर भी उन लोगों ने न माना तो ख़ुदा ने उन्हें ले डाला इसमें तो शक ही नहीं कि वह सख़्त अज़ाब वाला है (22)

सूरा अल्हदीद 57 आयत 9
वही तो है जो अपने बन्दे पर वाज़ेए व रौशन आयतें नाज़िल करता है ताकि तुम लोगों को तारिक़ीयों से निकाल कर रौशनी में ले जाए और बेशक ख़ुदा तुम पर बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है (9)

रसूल जो फरमा कर गए इस में रसूलो का अपना कोई फायेदा नही था वोह सिर्फ इन्सान और इंसानियत के फायेदे के लिए काम करते थे, लेकिन ना समझ इंसानों ने हर दोर में रसूलों की सच्चाई पर शक किया ।

सूरा मोमिन 40 आयत 70
जिन लोगों ने किताबे और उन बातों को जो हमने पैग़म्बरों को देकर भेजा था झुठलाया तो बहुत जल्द उसका नतीजा उन्हें मालूम हो जाएगा (70)

सूरा तघाबुन 64 आयत 8
ख़ुदा और उसके रसूल पर और उस नूर पर ईमान लाओ जिसको हमने नाज़िल किया है और जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा उससे ख़बरदार है (8)

पाक परवरदीगर को झुटला कर या असे न मान कर इन्सान अपने हातों अपना सुकून बिगाड़ते हैं । पाक परवरदीगर की हिदायत इंसानी फायेदे और जेहनी सकून के लिये ही है !

रसूलों का काम है अल्लह की हिदायत को ठीक ठीक इंसानों तक पोहचाना । समाज को पवित्र रखने के लिए गुनाह के खिलाफ जिहाद/ संघर्ष (जद व जहद) करना और अपनी इन्द्रीयों को काबू में रखकर नेकी (सभ्य) और परहेज़गारी (पवित्रता) की जिंदगी गुजार कर इंसानों के लिए एक उधारन पेश करना ।

कुरान शरीफ की सूरा 3 की आयत 161 में अल्लाह ने साफ तोर पर कहा है, " के अगर रसूल कोई बात छपाये या गलत तारिका से इन्सानों को बताएं तो रसूल भी सज़ा के हकदार होंगे और कयामत के दिन रसूलों को भी अपनी छुपाई हूई बातों को लेकर अल्लाह के सामने हाजर होना होगा और रसूल के ज़िम्मा सिर्फ हिदायत को पोह्चाना हैं फिसलो का हक रसूलों को नहीं दिया गया है । इन आयतों से ये भी साबित होता है के रसूल जो फरमाएगा किताबों के दायरे में होगा ।

सूरा इमरान 3 आयत 161
और किसी नबी की ये शान नहीं कि ख़्यानत करे और ख़्यानत करेगा तो जो चीज़ ख़्यानत की है क़यामत के दिन वही चीज़ ख़ुदा के सामने लाना होगा फिर हर शख़्स अपने किए का पूरा पूरा बदला पाएगा और उनकी किसी तरह हक़तल्फ़ी नहीं की जाएगी (161)

सूरा मायेदा 5 आयात 67 92
ऐ रसूल जो हुक्म तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है पहँचा दो और अगर तुमने ऐसा न किया तो तुमने उसका कोई पैग़ाम ही नहीं पहँचाया और ख़ुदा तुमको लोगों के शर से महफ़ूज़ रखेगा ख़ुदा हरगिज़ काफ़िरों की क़ौम को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहँचाता (67)
और ख़ुदा का हुक्म मानों और रसूल का हुक्म मानों और बचे रहो इस पर भी अगर तुमने मुँह फेरा तो समझ रखो कि हमारे रसूल पर बस साफ़ साफ़ पैग़ाम पहुँचा देना फर्ज़ है (92)

पवित्र इन्सान को अजाब(ऐश्वारिया परकोप) नही होता सिर्फ जननत(स्वर्ग) की खुशखबरी और जहनुम (नर्क) के अजाब के बारे में लोगों को पहचान करवाना रसूलों का काम था । रसूल हक बताने में डरे नही एक मुकर्र वक्त तक लोगों को हक बताना रसूलों का कर्तव्य था। जननत और जहनुम लोगो की नज़रों से दूर लेकिन रसूलों की बात मान कर सकून की ज़िन्दगी हासिल कर के इन्सान को जीते जी ही दुनिया में रहकर जननत की ख़ुशी हासिल हो सकती है , इसलये अपनी खातिर रसूलों की बात मान कर अपने जान व माल से नेकी (सभ्य) परहेज़गारी(पवित्रता) और सकून (शांति) वाले समाज के लिए हर इन्सान को गुनाह (पाप) के खिलाफ लड़ना चाहये इस में ही इन्सान और इंसानी समाज का सकूंन(मंगल) है और पाक परवरदीगर की हिदायत को ना मानने का अंजाम "अशांत जीवन "

सूरा इनाम 6 आयत 48

और हम रसूल को ओस्ल्य भेजते हैं के वोह बशारत दें और डरायें और जो इमां लाये और सबर करे तो उनको न अन्देशा और न गम .(48)

सूरा नमल 27 आयत 10
और अपनी छड़ी तो डाल दो तो जब मूसा ने उसको देखा कि वह इस तरह लहरा रही है गोया वह जिन्द़ा अज़दहा है तो पिछले पावँ भाग चले और पीछे मुड़कर भी न देखा ऐ मूसा डरो नहीं हमारे पास पैग़म्बर लोग डरा नहीं करते हैं (10)

सूरा यासीन 36 आयत 52
और कहेगें हाए अफसोस हम तो पहले सो रहे थे हमें ख़्वाबगाह से किसने उठाया कि ये वही दिन है जिसका ख़ुदा ने वायदा किया था और रसूलों ने सच कहा था (52)

सूरा सफ्फ 61 आयत 11
 ख़ुदा और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अपने माल व जान से ख़ुदा की राह में जेहाद करो अगर तुम समझो तो यही तुम्हारे हक़ मे बेहतर है (11)

सूरा अल तलाक 65 आयत 11
जो तुम्हारे सामने वाज़ेए आयतें पढ़ता है ताकि जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम करते रहे उनको तारि़कियों से ईमान की रौशनी की तरफ़ निकाल लाए और जो ख़ुदा पर ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम करे तो ख़ुदा उसको उन बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं और वह उसमें अबादुल आबाद तक रहेंगे ख़ुदा ने उनको अच्छी अच्छी रोज़ी दी है (11)

मंद बुधि इन्सान को हक की रौशनी से रोशन करवाना रसूलों की जिंदगी का एक अहम नसबूलऐन(लाख्श) था, गेर मुन्क्की (अजोक्तिक) बातों से इंसानी समाज को आजाद करवाने की कोशिश तमाम रसूलों ने की लेकिन शैतानी बन्दों ने रसूलों के नेक मकसद में मदाख्लत (हस्ताच्प्प) की, उधारन सरूप सदियों से एक परवरदीगर पर इमान लाने की बात करते आ रहे है, लेकिन शैतान ने इंसानों को बहका कर बुत, कबर, इमारत और रसूल परस्ती में धकेल दिया । गीता की इन आयतों से ये साफ ज़ाहिर होता है सवाए एक ईश्वर के कसी की भी इबादत जाएज़ नहीं ।

मानव जब ज़रुरत से जियादा ओचाकंषा, मोह माया में ग्रस्त हो जाते हैं जब उन्की बुधि भ्रष्ट हो जाती हे मेरी नज़र से इस हालत को कुरान शरीफ में “बुत” कहा गया है ।

गीता अध्याये 7 श्लोक 23 / 24

कम अक्ल लोग देवता की पूजा करते है इनकी फल महदूद और अरजी होते हैं देवता की पूजा करने वाले देवता के लोक में जाते हैं लेकिन मेरे भगत आखिर में मेरे परम धाम को पते हैं 23

कम अक्ल लोग मझे ठीक से ना जानने के कारन सोचते हैं के में यानि परम पुरष भगवान पहले निराकार था और अब में ने इस रूप को धारण किया है अपनी कम अक्ली के कारन वोह मेरे अविनाशी और अज़ीम कुदरत को नहीं जानते 24

गीता की इन आयतों के ज़रया ईश्वर ने घोषणा किया है के, ना वोह पैदा होने वाला और न इसकी मोत और ना ही इसकी कोई शक्ल फिर भी इंसानों ने अपनी ना समझी की वजह से इसकी शक्ल देकर इबादत का तारिका ढूंडते हैं, पाक परवरदीगर की खिदमत ये है के इनके हुक्मों को पूरा तरह से मान कर चलना और इस लिहाज़ से रसूल भी इनकी हिदायत के हुक्मों के दायरे में हैं ।

सूरा नूर 24 आयत 54
तुम कह दो कि ख़ुदा की इताअत करो और रसूल की इताअत करो इस पर भी अगर तुम सरताबी करोगे तो बस रसूल पर इतना ही वाजिब है जिसके वह ज़िम्मेदार किए गए हैं और जिसके ज़िम्मेदार तुम बनाए गए हो तुम पर वाजिब है और अगर तुम उसकी इताअत करोगे तो हिदायत पाओगे और रसूल पर तो सिर्फ साफ तौर पर पहुँचाना फर्ज़ है (54)

सूरा निसा 4 आयत 80
जिसने रसूल की इताअत की तो उसने ख़ुदा की इताअत की और जिसने रूगरदानी की तो तुम कुछ ख़्याल न करो हमने तुम को पासबान करके तो भेजा नहीं है (80)

सूरा मायेदा 5 आयत 92
और ख़ुदा का हुक्म मानों और रसूल का हुक्म मानों और बचे रहो इस पर भी अगर तुमने मुँह फेरा तो समझ रखो कि हमारे रसूल पर बस साफ़ पैग़ाम पहुँचा देना फर्ज़ है (92)

सूरा नूर 24 आयत 52
और जो शख़्स ख़ुदा और उसके रसूल का हुक्म माने और ख़ुदा से डरे और उस से बचता रहेगा तो ऐसे ही लोग अपनी मुराद को पहुँचेगें (52)

पाक परवरदीगर ने दुनिया के हर कोने में इंसानों को उनकी समझने वाली भाषा में ही हिदायत भेजी, हर रसूल ने इंसानों को इनकी भाषा में ही पाक परवरदीगर की हिदायत पोंचाई, सिर्फ हिदायत पोचाना ही ओनकी ज़िम्मेदारी थी। बर्तमान दुनया में रसूलों के नाम पर बोहुत सारे गेर मुन्तकी (अजोकतिक) और गेर अकली(अग्यानता) बातें फेली हूई हैं । जो पाक परवरदीगर की कसी भी कताब से नही मिलती, इसलिए इमान वालों का कर्तव्य है के रसूलों के नाम पर जो गेर अकली (मंद बुधी) और अजोकतिक बातें फेली हूई हैं इसे किताब की रोशन हिदायत से जांच कर इन बातों से समाज को मुक्त करवाऐन ।

सूराइब्राहीम 14 आयत 4
और हमने जब कभी कोई पैग़म्बर भेजा तो उसकी क़ौम की ज़बान में बातें करता हुआ ताकि हमारे एहक़ाम बयान करसके तो यही ख़ुदा जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिस की चाहता है हिदायत करता है वही सब पर ग़ालिब हिकमत वाला है (4)

सूरा अल हिजर 15 आयत 56
इबराहीम ने कहा गुमराहों के सिवा और ऐसा कौन है जो अपने परवरदिगार की रहमत से ना उम्मीद हो (56)

सूरा अंबिया 21 आयत 18
बल्कि हम तो हक़ को नाहक़ पर खींच मारते हैं तो वह बातिल के सर को कुचल देता है फिर वो उसी वक़्त नेस्तोनाबूद हो जाता है और तुम पर अफ़सोस है कि नाहक़ बातें बनाया करते हो (18)

सूरा मोमिन 23 आयत 32
और हमने उनही में से रसूल बनाकर उन लोगों में भेजा कि ख़ुदा की इबादत करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं तो क्या तुम डरते नही हो (32)

मिथ्रोप , भ्रष्टचार और पाप से समाज को आजाद (मुक्त) करवाने के लिए नस्ल दर नस्ल (युग युग) हर भाषा में और दुनिया के हर कोने मे सत्य का दीपक जलाने के लिए रसूलों का आगमन निर्दिष्ट रही । रसूलों को सत्य प्रतिशतत करनी के भरष्ट और सवरती लोगों से लड़ना पड़ा और निश्हित रूप से रसूलों ने सत्य के बाहर कोई भी अजोक्तिक बातें नहीं की , लेकिन अंध विश्वासी इंसानों ने अपनी झूटी अकीदत में अपने अपने रसुलों को दूसरों के रसूलों से सर्व श्रेष्ट साबित करने के लिए उनके बारे में अजोक्तिक बातें फेलाई, उधारन सरूप श्री कृष्ण जी का " विश्वा रूप दर्शन " की बातें की जा सकती हैं ये एक ऐश्वारिक कलपना थी जी अल्लाह ने अर्जुन को दिए थे, श्री कृष्ण जी ने इसतरह माया शक्ति के दुआर अल्लाह का रुतबा लोगों को बताया, बुधिमान , पवित्र और ज्ञानी इंसानों के लिए सत्य और असत्य में फेसला करना कोई मुश्किल काम नही । कोई भी रसूल एक दुसरे से बड़ा या छोटा नहीं । हर रसूल का रुतबा इंसानी तहज़ीब (स्भ्येता) के लिए बराबर है और हर रसूल का न्याय भी एक है और वोह है एक अल्लाह की इबादत सुख शांति वाली सोच और समाज और इस लाख्श को प्राप्त करने के लिए कोई भी इन्सान कसी भी रसूल के बताये हूए तरीका को अपना सकते हैं ।

कुरान की सूरा " अल्हदीद " का अध्यान करने से रसूलों का प्रीतिषठा परिपूर्ण रूप से पर्काशित होता है । यहाँ पर पाक परवरदीगर ने सारे रसूलों और एक इश्वरवाद पर विश्वास और सम्मान लाने के लिए कहा, अब रहा सवाल रसूलों की पहचान को तो किताबों के अध्यान करने के बाद जो मेरे मस्तिश में परचलित हुवा इसे में बयान कर रहा हूँ ।

इंसानों में से चुने गये वोह सर्व श्रेष्ट इन्सान जिन के पवित्र मुख से इश्वर ने अपनि बानी लोगों तक पोंचाया । जिन्हों ने परमेश्वर ,प्रेम , मानवता ,स्भेयता , ज्ञान , सुख शांति अहिंसा और पवित्रता का सन्देश दुनिया में फेलाया , जिनके समपर्द्दे परमेश्वर की मर्जी से दुनिया में मोजुद हैं और जिन्हों ने सत्य और सभ्येता को प्रित्ष्ठ करने के लिए असत्य और पाप से जिहाद किया वोही रसूल हैं।

सूरा अल्हदीद 57 आयत 19 21 25 28
और जो लोग ख़ुदा और उसके रसूलों पर ईमान लाए यही लोग अपने परवरदिगार के नज़दीक सिद्दीक़ों और शहीदों के दरजे में होंगे उनके लिए उन्ही का अज्र और उन्हीं का नूर होगा और जिन लोगों ने कुफ्ऱ किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही लोग जहन्नुमी हैं (19)
तुम अपने परवरदिगार के बख़शिश की और बेहिश्त की तरफ़ लपक के आगे बढ़ जाओ जिसका अज्र आसमान और ज़मीन के अज्र के बराबर है जो उन लोगों के लिए तैयार की गयी है जो ख़ुदा पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए हैं ये ख़ुदा का फज़ल है जिसे चाहे अता करे और ख़ुदा का फज़ल तो बहुत बड़ा है (21)
हमने यक़ीनन अपने पैग़म्बरों को वाज़े रौशन मोजिज़े देकर भेजा और उनके साथ किताब और तराज़ू नाज़िल किया ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम रहे और हम ही ने लोहे को नाज़िल किया जिसके ज़रिए से सख़्त लड़ाई और लोगों के बहुत से नफ़े हैं और ताकि ख़ुदा देख ले कि बेदेखे भाले ख़ुदा और उसके रसूलों की कौन मदद करता है बेशक ख़ुदा बहुत ज़बरदस्त ग़ालिब है (25)
ऐ ईमानदारों ख़ुदा से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ तो ख़ुदा तुमको अपनी रहमत के दो हिस्से अज्र

अता फ़रमाएगा और तुमको ऐसा नूर इनायत फ़रमाएगा जिस में तुम चलोगे और तुमको बख़्ष भी देगा और ख़ुदा तो बड़ा बख़्षने वाला मेहरबान है (28)

सूरा अल्हदीद की आयत में " लोहा " से मतलब पाक परवरदीगर की "उज्जवल बानी और पवित्र ज्ञान " जो सख्त और फायेदेमंद है और जिसकी उज्वल परकाश से इंसानों को सुख शांति का जीवन प्राप्त होता है ।

जिसतरह धागे में मोती पिरोये जाते हैं , ठीह इसी तरह पाक परवरदीगर के कानून और हिदायत के ज़रया सारे रसूल एक दुसरे से जुड़े हूए हैं, जिस तरह माला से हर मोती बंधा हूवा होता हैं ठीक इसी तरह हर रसूल पाक परवरदीगर की ज्ञान , उपदेश और ज्योति से बंधे हूवे हैं और हर रसूल ने एक परवरदीगर की इबादत की और इसका ही पैग़ाम लोगो को दिया अज के इन्सान रसूलों की बुनयादी बातें को छोड़ कर और रसूल की न्याय में विवाद सिष्टि कर के आपस में दंगा करते रहते हैं लेकिन वोह लोग ये भूल गये हैं के रसूल जो न्याय विचार की बात बता कर गये हैं वोह पाक परवरदीगर की ही प्रक्रितक न्याय विचार हैं । परार्थना पद्धति कितने ही विभिन कियूं न हों मकसद (लख्श) सभों का एक है । पाक परवरदीगर को न बाट कर ,प्रेम , मानवता ,पूण्य , ज्ञान , सुख शांति अहिंसा और पवित्रता और सत्य को समाज में इस्थाप्त रखना ही " ऐश्वारिक सत्य " है ।

गीता अधाये 7 श्लोक 7

कोई सत्य मुझ से श्रेष्ट नही हे जिसतरह धागे में मोती पिरोये हुवे हैं इसी तरह सब मुझ पर टिका हूवा हैं

प्राणी श्रेष्ट - मानव

सूरा अंबिया 21 आयत 30
जो लोग काफ़िर हो बैठे क्या उन लोगों ने इस बात पर ग़ौर नहीं किया कि आसमान और ज़मीन दोनों बन्द थे तो हमने दोनों को खोल दिया और हम ही ने जानदार चीज़ को पानी से पैदा किया इस पर भी ये लोग ईमान न लाएँगे (30)

सूरा नूर 24 आयत 45
और ख़ुदा ही ने तमाम ज़मीन पर चलने वाले को पानी से पैदा किया उनमें से बाज़ तो ऐसे हैं जो अपने पेट के बल चलते हैं और बाज़ उनमें से ऐसे हैं जो दो पाँव पर चलते हैं और बाज़ उनमें से ऐसे हैं जो चार पावों पर चलते हैं- ख़ुदा जो चाहता है पैदा करता है इसमें शक नहीं कि ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (45)

गीता अध्याये 10 शलोक 20

में सारे प्राणियों के अस्तिव में परम आत्मा (ऐश्वारिक ज्योति) के रूप से उपस्थित रहता हूँ , में समस्त प्राणियों की (अस्तित्व) आरम्भ , मध्य (जीवन) हूँ और अंत हूँ .

सूरज से पिरथवी की सष्टि हूई और धीरे धीरे पिरथवी का तापमान कम होता गया , अलग अलग किसम की गेस वजूद में औई, इन गेसों में हयेद्रोंजिन और आक्सीजन 2:1 अनुपात से मिल कर पानी की तखलीक (सिष्टि) हुई और इसी पानी से पृथिवी की सब से पहली एक खुलिया (कोशी) वाली प्राण की सिष्टि हुई , अगर हम ये समझें के हयेद्रोंजिन यानि अदम और आक्सीजन यानि अमा हवा हे तो ये बात परमानित होती है के इन दोनों के मिलय के बाद ही "प्राण संचार " हुवा ।

हजरत अदम और अममा हवा के कल्पना एक चिन्ह हें। (इसकी वस्तार से जानकारी आपको धर्म वाले अध्याए में मिलेगी)

-

सूरा अबस 80 आयत 19 20
नुत्फे से उसे पैदा किया फिर उसका अन्दाज़ा मुक़र्रर किया (19)
फिर उसका रास्ता आसान कर दिया (20)

नोट - इंसानी "क्लोन" की दरयाफ्त(अविष्कार) के दुआरा ये साबित होता है के इन्सान की पैदाइश पानी की बूंद से ही होई है, इस पानी की न्यू है " अदम और हवा " यानि द्य्द्रोजिन और ऑक्सीजन ।

वोही एक कोशी प्राणी हजारों प्रकार का विकास और विशेष किसिम का रूप विवर्तन और परिवर्तन से गुजरते हूवे और लाखों सालों की मुद्दत पार कर के ये मानव रूप धारण किया । इसतरह हर प्राणी की बुन्याद है पानी इन्सान की तरह ही हर प्राणी को विशेष समय और रूप परिवर्तन से गुज़र कर बर्तमान रूप में आना पड़ा । (और ये परक्रिया अभी तक चल रही हे)

कुरान शरीफ की कुछ विशेष आयतों में मानव की बर्तमान अवस्था से पहले विभिन समय अलग अलग अखृति का उलेल्ख हे । विज्ञानिक लोगों की मत अनुसार मानव एक "जोगीक मिश्रण" हे – जो अलग अलग किस्म की बुनियादी जोगिक्क और रह्सायंन पदार्थों से सिष्टि हुई। ये सरे तह्त्व के बारे में धर्म पुस्तकों में अल्फ लफ़ तरीका से व्येख्य किया गया है ।

गीता अध्याए 9 श्लोक 8

ये जगत मेरे ही प्रक्रति की अधीन हे और ये ख़ुद ब ख़ुद मेरा इख्छा से बार बार जन्म लिता है और मेरा ही इख्छा से अंत में खत्म हो जाती है ।

सूरा फातिर 35 आयत 11
और ख़ुदा ने तुम को मिट्टी से पैदा किया फिर नतफ़े से फिर तुमको जोड़ा बनाया और बग़ैर उसके इल्म के न कोई औरत हमेला होती है और न जनती है और न किसी शख़्स की उम्र में ज़्यादती होती है और न किसी की उम्र से कमी की जाती है मगर वह किताब में है बेशक ये बात ख़ुदा पर बहुत ही आसान है (11)

सूरा इनाम 6 आयत 3
वही है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया और उसके नज़दीक का वक़्त मुक़र्रर है (3)

सूरा अलहिजर 15 आयत 26

हम ने इन्सान को खनखनाती मट्टी और बू दार गारे से पैदा किया (26)

एक इन्सान के शरारिक वजन में तक़रीबन 18 % प्रोटीन 7 % मद्रियात (मोलिक प्दार्थ) 15 % चरबी और बाकी 60 % पानी होता है । हर प्राणी के शरीर में प्रोटीन,चरबी(मेद), कार्बोहाइड्रेट, पानी और मोलिक पदार्थ से बनते हैं । ये सारे मोलिक पदार्थ पूरी तरह से प्रक्रितक हे और ये विशेष अनुपात में प्राणी शारीर में रहता है ।

(1) carbon 50% (2) oxygen 20%

(3) hydrogen 10% (4) calcium 4%

(5) phosphorus 2.5% (6) potassium 1%

(7) salphar 0.8% (8) sodium 0.4%

(9) chlorine 0.4% (10) magnesium 0.1%

(11) iron 0.01% (12) manganese 0.001%

13) iodine 0.00005%

From harpers bio-chemistry by Robert .K. Murray R.produced with permission from west B.S.Toddlor text book bio-chemistry third cd, Macmillan 1961)

कुरान शरीफ में इन सारे चीजों को खनखनाती मट्टी कहकर पुकारा गया है और ये वाकेये खनखनाती यानि सुखी हालत में प्रक्रति में पौई जाती है, इन सरे वास्तु में एक विशेष पारकर का गंध भी पाया जाता हे । यही बू किसी को अछि और कसी को बुरी लगती है, ये सरे वास्तु खुराक के माध्म से इन्सान के शारीर में विशेष अन्दाज़ और तरीकों से पहुचते हैं ।

ब्रहमांड सिष्टि में गेस के बाद पानी की सष्टि हूई और इस पानी से एक कोशी प्राणी और इसके बाद बहु कोशी प्राणियों की पैदाइश जारी रही । समय चक्र में विवर्तन के दुआरा प्राणी का हर रूप विशेष समय तक पिरथवी में रहा ।

सूरज से निकली हूई दुनया में मोजूद ये सारे पदार्थ एक गहरे प्रक्रतिक माया रह्स्यी के अधिकारी हैं । और इस सच्चाई से कोई भी इनकार नही कर सकता इन सब शब्द (पानी की बूंद खनखनाती मट्टी, खून की फटक) के साथ जुडी हूई कहानियों को विज्ञानिको का अनुसन्धान झुटा साबित कर चुकी है .

पाक परवरदीगर की मर्जी से अज भी दुनिया में ऐसे इन्सान मोजूद हैं जो जंगली ज़िन्दगी जीते हैं ना ही वह कपड़ों का इस्तमाल जानते हैं और ना ही आग का और अभी तक दुनया की सभ्यता से अंजन है । ऐसी ही एक जाती भारत वर्ष के अन्डोमान के कुछ जज़ीरों (दीप) में मिलती है, अफ्रीका के जंगलों में और दुनिया की कोई कोई जगहों में अपरीक्षित इन्सान की मोजुदगी इन्सान की पुरानी हालत को साबित करती है।

सूरा रूम 30 आयत 22
और उस की निशानियों में आसमानो और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़बानो और रंगतो का एख़तेलाफ भी है यकी़नन इसमें वा़किफकारों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं (22)

पिरथिव की विभिन प्रान्त की जल्वाऊ , खानिश पर्दाथ और बनस्पति विभिन रूप से पौई जाती हे ।
भोगोलिक कारण से मानव का शरारिक रूप और भाषा अलग अलग होते हैं , इश्वर की प्रक्रति विशेष रूप से और विशेष पदार्थ से प्राणियों की सृष्टि की । मानव का रूप और जीवन शीली जितना भी विभिन कियों न हो प्राणी सृष्टि का तथ्व एक ही होता है और ये कोयूं ? मानव अस्तित्व को तीन हिस्सों में बाँट सकते हैं :

(1) शारीर (2) शारीर में उपस्थत ऐश्वारिक ज्योति और उर्जा शक्ति (3) अंतरात्मा , विवेक , चेतना और बुद्धि । (ये सारे "गुण" मानव अपने मस्तिश के दुआरा पालन करते हैं)

विस्तारित व्येख्या :

मानव शारीर विशेष खनिज पर्दार्थ का मिश्रण हे , और विशेष अनुपात से मानव शरीर में उपस्थत हे । ये सारी खनिज पर्दार्थ धरती में सुखी हालत में मिलते हैं , और धरती की मट्टी से ही मानव शारीर की सृष्टि हुई और मिर्तु की बाद ये शारीर बिलीन होजाता है । मानव शारीर का अन्तम संस्कार अपने अपने स्भ्येता के अनुसार करते हैं कोई जलता हे कोई दफनाता हे और कोई असे प्राछियों पशु को खला देता हे ।

मिर्तू के बाद मानव शारीर का कोई अस्तित्व नही रहता चाहे जलाएं या दफनायें , मट्टी के बने हुवे शारीर मिरतु के बाद भूमि में फिर से दुबारह मिर्तिका बन जाता है । जलाने से मानव शारीर में उपस्थित जल भाप बन जाता हे और राख भूमि में समाहित हो जाती हे । दफनाने से शारीर का जल भूमि में जज़्ब होजाता हे । जलाना और दफनाने की पद्धति में भी मानव आपस में ही भिभेद की सृष्टी करते हैं । इस भिभेद को समाप्त करने के लिए में कुछ जानकारी देना अवाशक समझता हूँ , जलाने की पद्धति विशेष रूप से भारत वर्ष में ही पाई जाती हे और ये पध्दति वैदिक समाज से औई हे , वैदिक स्भ्येता की सारे धार्मिक अनुष्ठान नदी के किनारे ही समपर्ण होते हैं , और भारत वर्ष की हरी भरी भूमि अपने रहने वालों को लकड़ियों और पानी की कोई कमी नही रखीं। नदी किनारे दफनान और बाढ़ से धरती का आगे पीछे होना मिर्त शारीर को

जलाने का एक मुख कारण हे । भरता भूमि नदी मात्रक देश हे और अध्यिमक रूप से में कह सकता हूँ मिर्तु के बाद जब शारीर का कोई अस्तित्व नही रहता और मिरतु के बाद शारीर के अंदर उपस्तित कीटाणु जलाने से समाप्त हो जाते हैं । और इस कारन से ही सनातन ऋषि मुनियों ने मर्त शारीर को जला देना ही उचित समझा । दफनाना प्राणियों की प्रक्रितक चारित्र हे , मानव मस्तिश के विकास के साथ साथ मानव की जीवन शेली का भी परिवर्तन हुवा । दफनाने से मानव अपने परिजनों की माया से सत्य की उपेख्षा कर के बार बार कबर की तरफ आकर्षित हो जाते हैं ।

इतेहसिक रूप से और मानव स्भ्येता के विकास के साथ साथ मानव समाज में दफनाने की पद्धति ही चली आरही थी और ये प्रक्रितक पद्धति हे । हज़रात मिहम्मेद के पुरवह मूर्ति पुजार्क होते हुए भी दफनाने की पद्धति को मानते थे । अवतार मूसा , इस्सा के सम्प्रदाए के लोग भी मिर्त शारीर को दफनाने की पद्धति को स्वीकार किये थे । इस बात से ये पर्मनित होता हे के दफनाना या जलाना पूरी तरह से मोसम और प्रक्रितक अवस्था पर निर्भर शील हे । विवेद कमी और अग्यान लोग सच्चाई जानने के बाद भी आपस में मिर्त शारीर लेकर विवेद की शिष्टि करते हैं । इश्वर और इनकी प्रक्रति के दुआरा निर्धारित हर पद्धति और क्रिया परक्रिया सटीक हे सिवाए कुसंस्कार के ।

मिर्त शारीर का कोई अस्तित्व नही होता , और इसी कारण मिर्त शारीर पर कोई क्रिया कर्म का उलेख नही पाया जाता । फिर भी मानव अगर मृतक के नाम पर मानवता और पवित्र काम करते हैं तो इस में कोई बुराई नही हे ।

(2) शारीर में उपस्थत ऐश्वारिक ज्योति और उर्जा शक्ति

ब्रह्माण्ड की सारी अस्तित्व (परमाणु) से बनती हैं । मानव असितिव भी परमाणु से संघटित होता है , वोही परमाणु एक दुसरे से जुड़ कर हर अस्तित्व को परिणाम देता है । परमाणु के अंदर एल्क्ट्रोंन्न , प्रोटोन और न्यूटरोंन (electron / proton /neutron) उर्जा शक्ति के दुआरा एक दुसरे से जेड हुए होते हैं और ये एक शक्ति है और इस शक्ति के (-negative /positive+) दुआरा सारे परमाणु आपस में एक दुसरे से जुड़े रहते हैं और ये शक्ति ऐश्वारिक पवित्र ज्योति हे हैं और ये शक्ति अजय , अमर और अनन्त हे और हर अस्तित्व में उपस्तित रह कर हर क्रिया परक्रिया को परिणाम तक ले जाती हे ।

सूरा सजदा 32 आयत 9
फिर उस को दुरुस्त किया और उसमें अपनी तरफ से रुह फूँकी और तुम लोगों के लिए कान और आँखें और दिल बनाएँ तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो (9)

सूरा अल्हिजर 15 आयत 29
फिर हमने नूह और कशती में रहने वालों को बचा लिया और हमने इस वाक़िये को सारी ख़ुदाई के वास्ते (अपनी क़ुदरत की) निशानी क़रार दी (29)

गीता अध्याए 2 श्लोक 17

वोह जो सारे परिन्यों के शारीर में रहता हे और वोह जो अमर . अजय और अनन्त आत्मा को मिटने की शक्ति किसी में भी नहीं है ।

नोट : नूर से मुराद वोह एटमी ताकत जो समस्त जरों की बुनयाद है ।

गीता अधाये 9 शलोक 4 5 9

ये सारा जगत मेरे अविक्त रूपसे भरा हूवा है सब जानदार मुझ से है लेकिन में इन में नही 4

फर भी ये सारी सिष्टि मुझ में नहीं जरा मेरी योग माया शक्ति को देखो गरचे में तमाम जानदारों का पालने वाला हूँ और हर जगह मिजुद हूँ फिर भी में इस तखलीक (सिष्टि) का हिस्सा नहीं हूँ कियूंके मेरी शक्ति ही इस अस्तित्व का सरचश्मा है 5

तमाम कुदरत मेरे इख्यार में है और ये खुद बखुद मेरी मर्जी से बार बार पैदा होती रहती है और मेरी ही मरजी पर आकर ख़त्म होती है 9

पाक प्रवरदीगर ने इन्सान को चुनी हूई मट्टी से बनाया है और इस में अपनी रूह (ज्योति) डाली, जिस तरह मशीन में इंधन की जरूरत होती है ठीक इसी तरह इन्सान के जिस्म में पाक परवर डगर अपनी रूह से जन पैदा करते हैं और जब दुनया में इन्सान का काम खत्म होजाता हैं तो वोह अपनी रूह को निकाल कर जिस्म की मोत मुकर्र करते हैं .

कुरान शरीफ की सूरा अलहिज्रत की आयत नंबर 29 में पाक परवरदीगर ने फरिश्तों को हुक्म दिया के मट्टी से बने हूवे इन्सान को सजदा (परनाम निवेदन) करे , जबके कुरान में ये भी फरमाया गया है के पाक परवरदीगर को अपने अलावाह कसी दुसरे को सजदह करना ना पसंद था , तो सवाल ये आता है के फरिश्तों को कियूं कहा के "अदम को सजदा करो" इसकी दो वजह है ?

(1) पाक परवरदीगर ने अपनी ज्योति इन्सान के अन्दर डाली और फरिश्तों को बलावास्ते अपनी ही रूह को सजदा करवा कर इन्हें इन्सान की खिदमत पर मुकर्र किया ।

(2) फरिश्तों से इन्सान को सजदा करवाने की बात किताब के ज़र्य लोगों तक पहुंचा कर पाक परवरदीगर ने इंसानों को ये पैग़ाम दिया के मुख्लूक(प्राणियों) की खिदमत ही अल्लह की खिदमत (सेवा) है जिस तरह फ़रिश्ते मुख्लूक की खिदमत पर मुकर्र है ।

पाक परवरदीगर ने पैदाइश और मोत अपने जिम्मे रखी, विग्यानिक अपनी लाख कोशिश के बावजूद मोत को रोक न सके, रही बात पैदाइश की तो साइंसदानो ने टेस्टटुउबे बेबी तो बना ली लेकिन सिर्फ zygote

तक ही महदूद रहे , नुतफे (ब्रिज) का कोई भी हिस्सा वोह लोग निकल नही पाए zygote को एक मुकर्र वक्त तक माँ के पेट में डालने से पहले मसनुई (क्रत्रिम) तरीका से मर्द और ओरत की " मनी "को मिलाकर zygote बनाते हैं और इसे कुछ घंटे टेस्ट tube में रखने के बाद इसे ओरत के बचा दानी में डाल दिया जाता है । मानव क्लोन के अविष्कार ऐश्वारिक ज्योति की इखछा के अनुसार ही हुवा और ये पूरी तरह से अमानविक हे ।

सूरा युनुस 10 आयत 4
तुम सबको उसी की तरफ लौटना है ख़ुदा का वायदा सच्चा है वही यक़ीनन मख़लूक़ को पहली मरतबा पैदा करता है फिर वही दुबारा जिन्दा करेगा ताकि जिन लोगों ने इमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उनको इन्साफ के साथ जज़ाए अता फरमाएगा और जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तियार किया उन के लिए उनके कुफ्र की सज़ा में पीने को खौलता हुआ पानी और दर्दनाक अज़ाब होगा (4)

गीता अध्याए 2 श्लोक 22 27

जिसतरह इन्सान पुराना लिबास छोड़ कर नया लिबास पहनता है इसी तरह आत्मा पुराने और नाकारा जिस्म को छोड़ कर नया जिस्म हासिल करती है 22

जो पैदा हूवा है वो ज़रु मरेगा और जो मर गया वो दोबारह ज़रूर पैदा होगा इसलए तुम्हे अपने फर्ज़ की अदाएगी पर ग़मजादा नहीं होना चहिये .

मज़हबी किताबों के अनुसार आत्मा और रूह की मोत नहीं होता पाक परवरदीगर की मर्जी से वो एक जिस्म छोड़ कर दुसरे जिस्म को अपनाती है । इन बातों पर अलग अलग किताबों में पाक परवरदीगर ने अलग अलग बियान फरमा कर दुसरे जन्म का राज़ अपने तक महदूद (सिमित) रखा लेकिन मेरा दिमाग पूरा तरह दुसरे जन्म के वजूद को पूरी तरह ताईद (समर्थन) करता है , हालाके कोई भी इसका ठोस सबूत पेश नही कर सका ।

अज के दोर में इन्सान को अपनी जिंदगी सकुन से जिने का और अपनी सेहत का ख्याल रखने का पूरा हक है चाहे वोह मर्द हो या ओरत इस लिहाज़ से नाहक क़त्ल कये बगेर और परहेज़ के ज़र्य और अल्लह के मुकर्र किये हूवे तरीकों के ज़र्य इन्सान अपनी हेसियत के अनुसार बचा पैदा करे और इसकी अछि परवरिश करके नस्ल और समाज को अच्छा बनाये .

(3) अंतरात्मा , विवेक , चेतना और बुद्धि । (ये सारे "गुण" मानव अपने मस्तिश के दुआरा पालन करते हैं)

परमेश्वर ने मानव को उत्तम बुधि पर्दान क्र के प्राणी श्रेष्ट बनाया , इस बुधि के दुवारा मानव आध्यत्मिक , विग्यानिक और समाजिक करमों को परिपूर्ण रूप से पालन क्र सकते हैं ।

मानव मस्तिष की विभिन अंश विभिन परकार की सोच उत्पन करते हैं । मानव का हर काम इसके मस्तिश में सिष्टि होता हे और मानव मस्तिश इसे अपनी इन्द्रियों और शारीर के दुआवारा परिणाम देते हैं । ईश्वर की प्रक्रति ने उत्तम बुधि और चेतना देकर मानव को प्राणी श्रेष्ट बनाया ।

मानव मस्तष की आकार की रचना सम्भवता 1500 cm और इसका वज़न 36 .1 kg होता है है और विगयानिकों ने मस्तिश के काम और अनुक्रम के आधार पर 3 हिस्सों में बंटा है ।

(1) सेरीबेर्म cerebrum (2) सेरी बेलम cerebellum (3) medola मेडोला

(1) सेरी बेर्म का काम है : सचित (उगाही) करना, चेतना का जगाना, यादाश्त , अकल और समझ , कल्पना और वजह ढूँढना, आवेग मस्तिश का यही हिस्सा जिस्म के अलग अलग जज़्बात को महसूस करता है मिसाल के तोर पर हसना, देखना, सूंघना, चखना, बोलना और इसके नेचे वाले हिस्से से भूक, पियास, जन्सी जज्बात (यौन आवेग) और जिस्मानी हरारत (शाररिक तापमान) महसूस करते हैं ,दिमाग़ का ये हिस्सा खुलियों (कोशिका) वाले नफस से बनता है और इसके अन्दर जेली यानि लुआब (राल) की तरह शे मोजूद हैं और इस लूअबी शे का काम है मुख्तलिफ एहसास (बोध) को वजूद में लाना ।

(2) सेरी बेलम :

इसका काम हे मानव पेशी को कम में लाना , चलने , फिरने और दोड़ने में पेशी का संतुलन बरकरार रखना ।

(3) मीडोला : इसका काम हे हिरदय के कामों का सन्तुलन रखना और शारीर के अंदरूनी इन्द्रियों के काम को आगे बढ़ाना, ये विज्ञानिकों की बरसों की मेहनत का नतीजा है लेकिन फिर भी एक सवाल रह जाता है के इन्सना की मुख्ल्फ़ सोच का हिस्सा तो साइंसदानो ने निकला लेकिन ये सोच कस तरह पैदा होती है ?

मस्तिष के अन्दर रसायनिक युगिक्क मिश्रण जेली जेसा पर्दाथ रहता हे । मस्तिश कोशिका के अन्दर रासयनिक बिकेरण के दुआरा अलग अलग सोच संघटित होती हे इश्वर ने कुछ हद तक मानव को बुधि पर्दान कर के मानव को अपना कर्म निरधारित करने का अधिकार दिया हे । भाग्य , जन्म और मिरतु के इलावा बाकी सारे सिद्धांत मानव को निरनेय करने का अधिकार हे । ईश्वर ने विज्ञानं का ज्ञान देकर मानव को मानव जन्म को सीमा बन्धित किया कोयोंको धरती पर सिर्फ कुछ प्राणी ही हें जिसे सरवदा यून मिलन का आनंदद प्रदान किया गया हे ।

मानव को सुख शांति का जीवन देने के लिए धर्म पुस्तक के दुअरा ऐश्वारिक चेतना को जागरूक कर के मानव को शांति का पथ चुनने का अधिकार दिया ।

शारिरक और यून चेतना के अधर पर मानव को तीन भाग में विभाजित कर सकते हैं पुरुष , नारी और हिजड़ा (transgender) –

शाररिक तोर पर पुरुष नारी से जियादा शकती शाली होता हे , लेकिन बुद्धि और चेतना में कोई अंतर नही होता । इसलिए शक्ति और आवश्कता के आधार पर " कुरान शरीफ " में पुरुष को नारी पर सेरेष्टा की बात की गुई हे , पुरुष , नारी या हिजड़ा कोई भी हो , कर्म फल में ईश्वर का विचार सब के लिए एक हे ।

सूरा इमरान 3 आयत 195
तो उनके परवरदिगार ने दुआ क़ुबूल कर ली और हम तुममें से किसी काम करने वाले के काम को अकारत नहीं करते मर्द हो या औरत तुम एक दूसरे से हो जो लोग और शहर बदर किए गए और उन्होंने हमारी राह में अज़ीयतें उठायीं और जंग की और शहीद हुए मैं उनकी बुराईयों से ज़रूर दरगुज़र करूंगा और उन्हें बेहिश्त के उन बाग़ों में ले जाऊँगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं ख़ुदा के यहाँ ये उनके किये का बदला है और ख़ुदा के यहाँ तो अच्छा ही बदला है (195)

सूरा निसा 4 आयत 124
और जो शख़्स अच्छे काम करेगा मर्द हो या औरत और ईमानदार हो तो ऐसे लोग बेहिश्त में पहुचेंगे और उनपर तिल भर भी ज़ुल्म न किया जाएगा (124)

ज़रूरत के आधार पर सम्पति के बंटान में " कुरान शरीफ " में नारी को पुरुष से आधे अधिकार की बात की गई हे लेकिन हिजड़े के बारे में कुरान शरीफ में कोई भी उलेख पाया नही जाता ।

हिजड़ा एक प्रक्रितक मानव असत्त्व हे इतेहस इनकी गवाही देती हे इस हिसाब से हिजड़ों को भी उत्तर अधिकार सूत्र से पौई गुई संपत्ति का अधिकार मिलना चाहिये ।

विज्ञानिकों ने परमान कर दिया हे पुरुष और नारी की तरह हिजड़ा भी प्रक्रितक हे जॉन कोशिका के अन्दर क्रोमोसोम नाम का एक हिस्सा होता हे जिस के अंदर मानव पहचान के लिए कोशिकाएँ होती हें ।

पुरुष और नारी का ब्रिज्य मिलकर ziagote पैदा होता है , तो इस में 23 जोड़े क्रोमोजम मोजूद होते हैं और इन्ही क्रोमोजम का काम है बचों के जिस्मानी वजूद को आगे बढ़ाना । इन 23 जोड़े क्रोमोजम में 22 जोड़ों का काम है मानव रूप रंग और चरित्र माँ बाप से बच्चों तक पोहचना

और 23 जोड़े का कम हे बचों की यून पहचान देना . नारी , पुरुष और हिजड़े का फेसला यही 23 वी जोड़ी से होता है । zygote में ओरत की तरफ से क्रमोजम "xx " और मर्द की तरफ से यानि 23 क्रोमोजम " xy "होता है , इसतरह zygote बनता है तो ओरत सिर्फ " xx " किस्म का क्रोमोजम zygote को दे सकती है और मर्द " xy "किस्म का क्रोमोजम देता है , जब मर्द का " x " ओर ओरत का "x " मिलता है तो ओरत बचा और जब मर्द का "y " तो" xy " यानि मर्द बचा पैदा होता है और इसी तरह कुदरत की मर्जी से जब ओरत के दोनों "x " और मर्दों का सिर्फ "y " या नही तो ओरत के दोनों " x " और मर्दों का " xy " दोनों मिल जाते हैं तो हिजड़ा पैदा होता है ।

zygote के अन्दर testostrone और astrojons नाम के दो यौन harmons मोजूद रहते है और इनका काम है इन्सान की जन्सी पहचान का फेसला करना और असके हेर फेर से मुखानस (हिजड़े) की पैदाइश होती हैं और इस बात को साइंसदानो ने साबित कर दिया है ।

मानव समाज में हिजड़ों की उपस्थी ऐश्वारिक सिष्टि हे । उन से नफरत करना या उनको दिल बहलाने की चीज़ समझना ईश्वर के फेसला का अपमान करना हे , इनका समाजिक अधिकार देने के साथ साथ इन्सान समझकर ओन्हे अपना लेना ही इंसानियत है और में सिद्धार्थ चटर्जी इस किताब के ज़रया सरकार और समाज से इनके जायज़ अधिकार की मांग करता हूँ .

32

مضمون نمبر 4

मज़मून (निबंध) 4

शैतान (पापी)

पाक परवरदीगर ने नेकी के साथ बदी को मुकर्र कर के गुनाह यानि शैतान को इंसानों के दरमियाँ पनपने का मोका दिया इन्सान के दरमियाँ शैतान की मोजुदगी ज़रूरी थी ताके इन्सान की जन्दगी बदमज़ा और वीरान न हो .

पाक परवरदीगर ने इंसानी ज़िन्दगी को ख़ूबसूरत और रोनकदार बनाने के लिए शैतान को मुकर्र किया और पाक परवरदीगर ही इंसानों को इस से बचने की हिदायत भी बख्शते हैं लेकिन इन्सान की तमाम कोशिशों के बावजूद इंसानी समाज इन बातों से आजाद नही है पाक परवरदीगर ने इसे पूरा तरह से न मिटा कर शैतान के वजूद को बरकरार रखा और ये पाक परवरदीगर की ब्लावास्ता इन्सान को खुश रखने की तरकीब है .

पाक परवरदीगर के वादे के अनुसार शैतान हर जगह मोजूद हैं इस लिहाज़ से ये कहा जा सकता है के शैतान की मोजुदगी भी ब्लावासता इंसानों के फायेदे के लिए ही है .

इस मोजू पर कुरान शरीफ की सूरा बकरा की आयत 34 का तफ्सीली जाएजा पेश करना चाहता हूँ .

सुरा बकरा 2 आयत 34
और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सब के सब झुक गए मगर शैतान ने इन्कार किया और ग़ुरूर में आ गया और काफ़िर हो गया (34)

इस आयत के अनुसार कुछ सवालात जो सदयों से इंसानी ज़हेन में गूँज रहा है और इन सवालों के जवाब देना में मुनासब समझता हूँ कियूनके इन सरे सवालों के जवाब में उलमा दीन ने जवाब देने के बजाये फतवा दिया उन तमाम आलिमों और इंसानों की इसकी तफ्सीलात और सच्चाई से रोशनस करना जरूरी है

सवाल (1) फ़रिश्ते इब्लीस की नाफरमानी पाक परवरदीगर की तोहीन है और जहाँ पाक परवरदीगर का कोई भी काम अधूरा नहीं होता इस लिहाज़ से (1) किया फरिश्तों की पेदएश या परवरिश में कोई कमी रह गयी थी जो उन्हों ने नाफरमानी की ? ये कियूं ?

सवाल (2) पाक परवरदीगर की हिसिय्त को जानने के बावजूद फरिश्तों के ज़हेन में पाक परवरदीगर के सामने मघरूरियत कियूं पैदा हूई ?

सवाल (3) सारे फरिश्तों से इन्सान को कियूं सजदा करवाया गया जबके पाक परवरदीगर को अपने सजदे के इलावाह और किसी का सजदा मंज़ूर नहीं ! वहां पर इस सजदा का किया मकसद ?

सवाल (4) फरिश्तों की बातें किताबों के ज़र्य इंसानों तक पोहचाने का पाक परवरदीगर का किया मतलब या मकसद है .

जवाब (1)इंसानी जन्दगी को विरान्त से नजात देने के लिए पाक परवरदीगर ने फ़रिश्ते इब्लीस से नाफरमानी करवाई.

जवाब (2) फरिश्तों का सारा वजूद और हेसियत पाक परवरदीगर के इख्त्यार में है और पाक परवरदीगर के बगेर इनका कोई वजूद नही इस लिहाज़ से फरश्ते इब्लीस की नाफरमानी पाक परवरदीगर की मर्जी थी

जवाब (3) सारी मुख्लूक पाक परवरदीगर के नूर से पैदा हुई है इस लिहाज़ से मुख्लूक की खिदमत ही पाक परवरदीगर की असली खिदमत है पाक परवरदीगर इंसानों के दरमियाँ ही दुनिय में मोजोद है और वोह अपना हर काम इंसानों के ज़र्य ही करवाते हैं और इस लिहाज़ से इन्सान को सजदा (यानि इसकी खिदमत) बलावास्ता तोर पर पाक परवरदीगर की खिदमत ही है और ये पैग़म लोगों तक पोहचाकर इन्सान को इन्सान की खिदमत का हुक्म नाफ़िज़ किया ,

जवाब (4) इन सारी बातों को किताब के ज़र्य इंसानों को वाकिफ करवाने का मकसद इन्सान को कुफ्रिय्त की मिसाल बयान फरमाना जब फ़रिश्ते इन्सान को सजदा (खिदमत पर मुकर्र हैं) कर सकते हैं तो इन्सान को इससे सबक लेते हूवे मुख्लूक की खिदमत के ज़र्य पाक परवरदीगर के आगे सजदा करना चाहए और यही पाक परवरदीगर का हुक्म और मर्जी भी है और इस से नाफरमानी करने वाला काफर है.

इंसानों के हर कदम पर शैतान को मुकर्र करके जेसे पाक परवरदीगर ने इंसानों को वेरानिय्त से नजात बख्शी ठीक इसी तरह किताबों और रसूलों की बदोलत ईस से बचने का तरीका भी अता किया ताके इन्सान को सकून और अमन हासिल हो .

मज़मून (निबंध) 5

ईमान

सूरा इमरान 3 आयत 84 86
कह दो कि हम तो ख़ुदा पर ईमान लाए और जो किताब हम पर नाज़िल हुयी और जो इबराहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याकूब और औलादे याकूब पर नाज़िल हुये और मूसा और ईसा और दूसरे पैग़म्बरों को जो उनके परवरदिगार की तरफ़ से इनायत हुयी हम तो उनमें से किसी एक में भी फर्क नहीं करते (84)

अल्लाह इन लोगों को केसे हिदायत देगा जो इमान लाये और रसूल की हकानियत की गवाही देने और अपने पास रोशन दलीलें अजाने के बाद काफर होगए अल्लह ऐसे बेइंसाफ लोगों को राह रास्त पर नही लता (86)

इमान का ल्फ़्ज़ी मतलब है यकीन धर्म यानि मज़हब यानि निष्ठां अकीदत अमन और इसकी बुनयाद है नेकी ,परहेज़गारी , इंसानियत , मुहाब्बत अमन व अमान अदम ताशुदद और इल्म इमान का एक पहलु है इन्सान का मजहब यानि धर्म जो संस्क्रत के धरी धातु से अमल (उत्पन) में आता है .

धर्म या मज़हब का लाफ़्ज़ी मतलब है जो हम धारण करते हैं यानि अपनाते हैं इस लिहाज़ से जो इनसान नेकी परहेज़गारी और एक परवरदीगर को अपनाते हैं वोही इनसान धार्मक यानि इमान वाला होता है , इमान की बुनियाद पाक परवरदीगर के आगे गर्दन झुका कर इस के सारे हुक्मों को पूरी तरह से मान कर अमन व सकून की ज़िन्दगी कायेम करना और पाक परवरदीगर को न बाट कर इंसानों के दरमियाँन भुई चारह और सकून की बुनयाद डालना है इस लिहाज़ से जिस का ज़हेन इन बातों से खारज है वोह इमान से भी ख़ारिज है .

पाक परवरदीगर ने इमान के लिबास में इंसानों को सकून वाला रास्ता दिखाया इमान कसी मजहब कोम या ज़ुबान के दायरे में केद नहीं ये एक ना ख़तम होने वाली रौशनी है जसे शैतानी ताकत भी हला नही सकती .

इमान का एक और नाम है मोहब्बत इसका मतलब हे पाक परवरदीगर और ओनकी तमाम क़ुदरत से मोहब्बत नतीजा की लालच के बगेर काम भी इमान है वोही नतीजा की सोच इन्सान के ज़्हेनी सकून को बिगडती है और अनके कामों में रोकावट डालती है

जाएज़ तरिका से जन्सी तालुक भी इमान है हर इन्सान इमान के धागे से एक दुसरे के साथ बंधा हूवा है और इमान वोह धागा है जो हर रसूल को और अनके खियालात को इजत बख्शने की तालीम देता है इमान परवरदीगर और इन्सानों के दरमियाँन का रिशता है इमान वक्त है जिसे जाया नहीं किया जासकता .

इमान मेहनत की कमाई है बर्तमान भूतकाल और भवष्य की बुनयाद है इमान . इमान अल्लाह है ईश्वर है इमान वोह अहसास है जो इन्सान को बुराई से रोकता है ख्वाहिशात , लालच और गुनाह को छोड़ कर नेकी और परहेज़गारी को अपनाना ही इमान लाना है जो इन्सान अपने मुकमल इमान का दावा करता है और अमल असके शैतानी हैं इनका इमान कभी भी मुकमल नहीं होता और वोह कभी भी सुकून वाली ज़िन्दगी के हकदार नहीं हो सकते इसलए इन्सान के नेक अमाल ही इमान की बुनयाद हैं .

एक पाक परवरदीगर पर यकीन ला कर उन्हें और अंकी हिदायत न बाट कर एक ही राह पर चलने की हिदायत रसूलों और किताबों से इन्सान को मली लेकिन अनके इस हुक्म की नाफरमानी कर के इन्सान

अलग अलग ग्रोह में बट कर पाक परवरदीगर को बाटने की जुरत की और आपस में फसाद डाल कर ब्द्स्कुनी की बुनयाद डाली .

सूरा मायेदा 5 आयत 69
इसमें तो शक ही नहीं कि मुसलमान हो या यहूदी हकीमाना ख़्याल के पाबन्द हों ख़्वाह नसरानी जो ख़ुदा और रोज़े क़यामत पर ईमान लाएगा और अच्छे काम करेगा उन पर अलबत्ता न तो कोई ख़ौफ़ होगा न वह लोग आज़ुर्दा ख़ातिर होंगे (69)

सूरा इनाम 6 83
जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अपने ईमान को ज़ुल्म से आलूदा नहीं किया उन्हीं लोगों के लिए अमन है और यही लोग हिदायत याफ़ता हैं (83)

दुनिया में इंसानों के दो ही ग्रोह हैं ,

(1) नेक परहेजगार इन्सान जिन्हें हम इमान वाला कहते है और अरबी जुबान के अनुसार मुस्लिम यानि मुकम्मल इमान वाला

(2) गुनाहगार और बेइमान इन्सान यानि काफर असके इलावाह और कोई भी उमति और गरोह जाएज़ नहीं अज इन्सान किताबों और रसूलों का नाम लेकर अपने तर्ज़ के खायालत को अपना कर फिरका गरोह और उमति में बट गये .

हक तो ये है के पाक परवरदीगर की दी होई हर किताब में और हर रसूल ने दुनिया में एक ही हिदायत को फेलाया इस लिहाज़ से में (सीधार्थ चैटरजी) एलन करता हूँ नेक और परहेजगार इन्सान पाक परवरदीगर के नेक बंदे (इमान वाला ग्रोह) और दुसरे शैतान के बन्दे यानि गुनाहगार इन्सान (बे इमांन ग्रोह) इन दोनों ग्रोह के इलावा दुनिया में और कोई ग्रोह उमति या कबीला नही इन्सान की पहचान इसके कामों से है नेकी बदी से जिहाद करे और इनके दरमियाँन लिबास नाम इंसानी चहेरा या इलाका न लाया जाये .

सूरा इनाम 6 आयत 160
बेशक जिन लोगों ने आपने दीन में तफरक़ा डाला और कई फरीक़ बन गए थे उनसे कुछ सरोकार नहीं उनका मामला तो सिर्फ ख़ुदा के हवाले है फिर जो कुछ वह दुनिया में नेक या बद किया करते थे वह उन्हें बता देगा (160)

अलग अलग फिरकों में बट कर अपने ख़यालात में इख्त्लाफत पैदा किया गया है और बे बुनियाद फसाद के ज़िम्मेदार ठरे इस गुनाह से आज़ादी पाने के लिए और शैतान से बचने के लिए इन्सान खुद बखुद फिरका परस्ती छोड़ कर नेकी परहेज़गारी मुहब्बत और इंसानियत वाले फिरका में आना चाहए और यही पाक परवरदीगर का हक हे जो सारी मज़हबी किताबों के ज़र्य पाक परवरदीगर ने इंसानों तक पोंचाया .

सूरा बकरा 2 आयत 82
और जो लोग ईमानदार हैं और उन्होंने अच्छे काम किए हैं वही लोग जन्नती हैं कि हमेशा जन्नत में रहेंगे (82)

किताबों में इख्त्लाफत न करते हुवे एक परवरदीगर और इनकी सारी किताबों पर इमान लाना ही इमान वालों का फर्ज़ है कियूनके एक ही हिदायत मुखतलिफ अन्दाज़ और तरीकों से किताबों में बियान की गुई .

सूरा अन्क़बूत 29 आयत 46 47
और एहले किताब से मनाज़िरा न किया करो मगर उमदा और शाएस्ता अलफाज़ व उनवान से लेकिन उनमें से जिन लोगों ने तुम पर ज़ुल्म किया और साफ़ साफ़ कह दो कि जो किताब हम पर नाज़िल हुयी और

जो किताब तुम पर नाज़िल हुयी है हम तो सब पर इमान ला चुके और हमारा माबूद और तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के फरमाबरदार है (46)
और उसी तरह हमने तुम्हारे पास किताब नाज़िल की तो जिन लोगों को हमने किताब अता की है वह उस पर भी इमान रखते हैं और इन में से बाज़ वह हैं जो उस पर इमान रखते हैं और हमारी आयतों के तो बस पक्के कट्टर काफ़िर ही मुनकिर है (47)

इमान का अहम सतुन हे पाक परवरदीगर के भेजे हूवे सारे रसूलों पर इमान लाना और इनकी भेजी होई कोई भी हिदायत वाली किताब को मान कर नेकी परहेज़गारी और ईमानदारी की जिंदगी अपनए . इबादत का रुख मगरिब हो या मशरिक और इबादत का तारिका केसा ही कियूं न हो इस से कोई फर्क नही पड़ता हक तो ये है के इंसानी समाज में कोई भी रसूल या किताब बातिल नहीं है बलका हालात और वक्त की गरदिश में कुछ खयालात बातिल हो जाते हैं लेकिन इमांन वाले इन्सान कसी भी रसूल या उन पर भेजी होई किताब का इनकार नही करते लेकिन कुछ शैतानी बन्दे दुनिया में मजूद रहकर रसूलों और किताबों में इख्लाफत डालते रहे फसाद के मकसद से ताके इंसानों को फसाद में धकेल कर अपने मकसद में कामयाबी हासिल कर सकें तरीकाकर कुछ भी हो सारी इबादत पाक परवरदीगर को ही पोचती है ब्रह्माण्ड के जरे जरे में वोह मोजूद है कोई इसे सीधे तरिके से अक्येद व अमाल की तरगइब देते हैं और कोई कसी और तारिका से.

इमांन की राह में !

पहला कदम ! अपने आपको और अपनी गलतियों को पहचन्ना

दूसरा कदम ! ओनी न्फ्सियानी कमजोरी से निजत हासिल करने की कोशिश करना और असके बाद साबित कदम रहना

तीसरा कदम ! मुखलूक से मोहब्बत और इनकी खिदमत

चोथा कदम ! अपनी हालत को अल्लह की दी हुई हालत समझकर ज़हनी तोर पर इसे कबूल करना

पंचवान कदम !अपने इमल से किसी को नुकसान नही पोहचना और अपने अम्ल से दूसरों के लिए मिसाल कायेम करना

छटटा कदम ! हक को कबूल करते हुवे ओहाम परस्ताना (कुसंस्कार)किरदार से जिहाद करना

सातवां कदम ! जेहनी चाहत को इतना तूल न देना जो नुकसानदाह हो .

आठवां कदम ! सारे इंसानी रिश्तों को पूरा तरह निभाना .

नोवन कदम ! नतीजे की खुवाहिश में अपने काम को न बिगाड़ना

दसवां कदम ! पाक परवरदीगर को न बाँटना और ना इंसानों के दरमियाँ तफरका पैदा करना.

गयारवाह कदम ! तालीम

बरवाह कदम !फेसले के वक्त तरफदारी ना करना और ना अमानत में खयानत करना

इमान के मुताबिक कुछ आयतें गीता और कुरान से ----------

सूरा बकरा 2 आयत 177
नेकी कुछ यही थोड़ी है कि नमाज़ में अपने मुँह पूरब या पश्चिम की तरफ़ कर लो बल्कि नेकी तो उसकी है जो ख़ुदा और रोज़े आख़िरत और फरिश्तों और ख़ुदा की किताबों और पैग़म्बरों पर ईमान लाए और उसकी उलफ़त में अपना माल क़राबत दारों और यतीमों और मोहताजो और परदेसियों और माँगने वालों और लौन्डी ग़ुलाम में सर्फ करे और पाबन्दी से नमाज़ पढ़े और ज़कात देता रहे और जब कोई एहद किया तो अपने क़ौल के पूरे हो और फ़क्र व फाक़ा रन्ज और घुटन के वक़्त साबित क़दम रहे यही लोग वह हैं जो दावे ईमान में सच्चे निकले और यही लोग परहेज़गार है (177)

सूरा निसा 4 आयत 150 151 152
बेशक जो लोग ख़ुदा और उसके रसूलों से इन्कार करते हैं और ख़ुदा और उसके रसूलों में तफ़रक़ा डालना चाहते हैं और कहते हैं कि हम बाज़ पर ईमान लाए हैं और बाज़ का इन्कार करते हैं और चाहते हैं कि इस के दरमियान एक दूसरी राह निकलें (150)
यही लोग हक़ीक़तन काफ़िर हैं और हमने काफ़िरों के वास्ते ज़िल्लत देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है (151)
और जो लोग ख़ुदा और उसके तमाम रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी में तफ़रक़ा नहीं करते तो ऐसे ही लोगों को ख़ुदा बहुत जल्द उनका अज्र अता फ़रमाएगा और ख़ुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (152)

गीता अध्याए 9 श्लोक 23

जो लोग दुसरे देवताओं के भगत हैं और पूरी अकीदत से इनकी पूजा करते हैं हकीकत में वोह मेरी ही पूजा करते हैं लेकिन वोह ये गलत तारिका से करते हैं .

गीता अध्याए 6 श्लोक 30

जो योगी हर जगह मुझ को देखते हैं और हर चीज़ मुझ में देखता हैं में कभी भी इस से दूर नही होता और ना ही वोह मुझ से दूर होता है .

मुसीबत की घडयों में सबर करना पाक परवरदीगर की सुनत है अपनी चाहत या अपनी ख्वाहिशात या अपने अम्ल को काबू में रखने के लिए नमाज़ यानि इबादत को अपना कर पाक परवरदीगर के दिए हूवे हाल पर सबर करना ही इमांन वाले का कर्तव्य है .

खैरात क़ुरबानी दान और कोई भी नेकी की वापसी के नतीजा का सोचना एहसान जताना , ताना देना इन सभों से नेक कामों की बरबादी होती है और ये गुनाह है ,

सूरा बकरा 2 आयत 112 153
हाँ अलबत्ता जिस शख़्स ने ख़ुदा के आगे अपना सर झुका दिया और अच्छे काम भी करता है तो उसके लिए उसके परवरदिगार के यहाँ उसका बदला है और ऐसे लोगों पर न किसी तरह का ख़ौफ़ होगा और न ऐसे लोग ग़मग़ीन होगे (112)
ऐ ईमानदारों मुसीबत के वक़्त सब्र और नमाज़ के ज़रिए से ख़ुदा की मदद माँगों बेशक ख़ुदा सब्र करने वालों ही का साथी है (153)

पाक परवरदीगर के हुक्मों को मानते हुवे जो नेकी और परहेज़गारी को अपनते हैं उनको मरने के बाद न कोई ग़म होगा और ना ही जीते जी . यहाँ पर सजदे का मतलब अल्लाह ताला की हिदायत को पूरा तरह अपनाकर अमन व अमान कायेम करना .

इमांन वाले इन्सान या रसूल या बुजुर्ग ने कभी भी अपनी परस्तिश की इजाजत नही दी उन्हों ने हमेशा एक पाक परवरदीगर की तरफ बुला कर अपने इमान का फर्ज़ अदा किया और कभी भी अपनी तरफ से कोई भी बात पाक परवरदीगर के कलाम के साथ नही जोड़ी . हजारों इख्तलाफात और ना समझ आने वाली आयतों के होने के बावजूद इमान वाले इन्सान पाक परवरदीगर के कलाम पर ही यकीन रखते हैं . शैतान के बन्दों ने पाक परवरदीगर के कलाम के साथ अपनी तरफ का मतलब जोड़ कर या न समझ कर आयतों का गलत मतलब निकालते हें जो बाद में तहकीकात के दोरान सबूत के साथ बातिल साबित हो जाता है .

सूरा इमरान 3 आयत 79 80
किसी आदमी को ये ज़ेबा न था कि ख़ुदा तो उसे किताब और हिकमत और नबूवत अता फ़रमाए और वह लोगों से कहता फिरे कि ख़ुदा को छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ बल्कि तुम अल्लाह वाले बन जाओ क्योंकि तुम तो किताबे ख़ुदा को पढ़ाते रहते हो और तुम ख़ुद भी सदा पढ़ते रहे हो (79)
और वह तुमसे ये तो न कहेगा कि फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को ख़ुदा बना लो भला तुम्हारे मुसलमान हो जाने के बाद तुम्हें कुफ्र का हुक्म करेगा (80)

कोई भी हिदायत वाली पाक परवरदीगर की किताब में समझने वाला हिस्सा इमांन के लिए काफी है और वोही समझने वाला हिस्सा इतना साफ और सीधा है के इसके लिए ना तो किसी साथ वाली किताब ना जियादा इल्म और ना ही किसी मोलाना या पंडित की ज़रूरत है ज़रुरत है तो सिर्फ नेक और मुहब्बत वाले ज़हेन की जिसे पाक परवरदीगर ने हर इन्सान के अंदर मोजूद रखा .

दुनिया के मोजुदा हाल पर नजर दोड़ाने से और असे पाक परवरदीगर का मुकर्र शुदा हाल समझकर ही हिदायत को साफ़ और सीधे तोर पर समझा जा सकता है पाक परवरदीगर ने इन्सान को किताब के साथ साथ ज़हेन भी आता फरमाया और इस ज़हेन को इस्तमाल करना इन्सान का फर्ज़ है इस फर्ज़ के अनुसार इमान वाले इन्सान किताब के ज़र्य या किताब के बगेर नेकी मुहब्बत ,परहेज़गारी और अछे अमल वाली ज़िन्दगी गुजार कर सकून और जननत हासिल कर सकते हैं .

आज के बर्तमान दोर में और तमाम दुनिया के बर्तमान हाल पर नज़र रखना पाकपरवर दीगर ने इंसानों के लिए असान फरमाया ताके इन्सान आसानी से अपने अमाल को जांच सके पाक परवरदीगर की दी होई हर सहूलत के बावजूद भी कोई हक तलाश कए बगेर अन्द्विश्वास और गेर अकली बातों में अल्झे तो वोह कभी भी इमान वाले ग्रोह में शामिल नहीं हो सकते पाक परवरदीगर की हिदायत को जानने के लिए सिर्फ हरूफ की जानकारी ही जरूरी हैं और इसे गहराई से जानने के लिए अछि तालीम की ज़रूरत है जो दुनया की तालीम हासिल करने से ही मलेगा पाक परवरदीगर ने इंसानों के लिए हर रास्ता असंन किया है और तालीम तमाम लोगों के लिए फर्ज़ की चाहे वोह किताबी हो या दुनयावी ताके लोग इसकी मदद से हक की पहचान कर सकें और इनकी ज़िन्दगी की राह आसान हो .

इंसानों के लिए मेरा ये पैग़ाम हे के कसी भी मोलाना या पंडत के मोहताज ना हो कर खुद ही हिदायत और पाक परवरदीगर की दी होई मोजुदा दुनया के हाल को समझकर और भविष्य की दुनया से सबक हासिल करके अपने अमाल का मुहासबा(अनुमान) करें .

सूरा इमरान 3 आयत 7 76 77 78 199
वही है जिसने तुमपर किताब नाज़िल की उसमें की बाज़ आयतें तो मोहकम हैं वही असल किताब है और कुछ मुतशाबेह (मिलती जुलती) बस जिन लोगों के दिलों में कज़ी है वह उन्हीं आयतों के पीछे पड़े रहते हैं जो मुतशाबेह हैं ताकि फ़साद बरपा करें और इस ख़्याल से कि उन्हें मतलब पर ढाले लें हालाँकि ख़ुदा और उन लोगों के सिवा जो इल्म से बड़े पाए पर फ़ायज़ हैं उनका असली मतलब कोई नहीं जानता वह लोग कहते हैं कि हम उस पर ईमान लाए सब हमारे परवरदिगार की तरफ़ से है और अक़्ल वाले ही समझते हैं

(7)
हाँ जो शख़्स अपने अहद को पूरा करे और परहेज़गारी इख़्तेयार करे तो बेशक ख़ुदा परहेज़गारों को दोस्त रखता है (76)
बेशक जो लोग अपने अहद और जो ख़ुदा बदले थोड़ा मुआवेज़ा ले लेते हैं उन ही लोगों के वास्ते आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं और क़यामत के दिन ख़ुदा उनसे बात तक तो करेगा नहीं ओर न उनकी तरफ़ नज़र ही करेगा और न उनको पाक करेगा और उनके लिये दर्दनाम अज़ाब है (77)
और एहले किताब से बाज़ ऐसे ज़रूर हैं कि किताब में अपनी ज़बाने मरोड़ मरोड़ के पढ़ जाते हैं ताकि तुम ये समझो कि ये किताब का जुज़ है हालांकि वह किताब का जुज़ नहीं और कहते हैं कि ये ख़ुदा के यहाँ से है हालांकि वह ख़ुदा के यहाँ से नहीं और जानबूझ कर ख़ुदा पर झूठ जोड़ते हैं (78)

और एहले किताब में से कुछ लोग तो ऐसे ज़रूर हैं जो ख़ुदा पर और जो तुम पर नाज़िल हुयी और जो उनपर नाज़िल हुयी ईमान रखते हैं ख़ुदा के आगे सर झुकाए हुए हैं और ख़ुदा की आयतों के बदले थोड़ी सी क़ीमत नहीं लेते ऐसे ही लोगों के वास्ते उनके परवरदिगार के यहाँ अच्छा बदला है बेशक ख़ुदा बहुत जल्द हिसाब करने वाला है (199)

सूरा बकरा 2 आयत 62 63 64 65
बेशक मुसलमानों और यहूदियों और नसरानियों और लामज़हबों में से जो कोई ख़ुदा और रोज़े आख़ेरत पर ईमान लाए और अच्छे-अच्छे काम करता रहे तो उन्हीं के लिए उनका अज्र व सवाब उनके ख़ुदा के पास है और उन पर किसी का ख़ौफ होगा न वह रंजीदा दिल होंगे (62)
और जब हमने तुमसे एक़रार लिया और तुम्हारे सर पर तूर को लटकाया और कह दिया कि जो हमने तुमको दी है उसको मज़बूत पकड़े रहो और जो कुछ उसमें है याद रखो ताकि तुम परहेज़गार बनो (63)

फिर उसके बाद तुम फिर गए बस अगर तुम पर ख़ुदा का फज़ल और उसकी मेहरबानी न होती तो तुम सख़्त घाटा उठाया वालों में होते (64)
और अपनी क़ौम से उन लोगों की हालत तो तुम बख़ूबी जानते हो जो शम्बे के दिन अपनी हद से गुज़र गए तो हमने उन से कहा कि तुम राइन्दे गए बन्दर बन जाओ (65)

सूरा एराफ 7 आयत 35
ऐ औलादे आदम जब तुम में के पैग़म्बर तुम्हारे पास आए और तुमसे हमारे एहकाम बयान करे तो जो नेक काम करेगा तो ऐसे लोगों पर न तो कोई ख़ौफ़ होगा और न वह आजऱ्दा ख़ातिर होंगें (35)

नतीजा की ख्वाहिश इन्सान को बेचेनी की तरफ धकेल देती है और यही बेचेनी इसके कामों को खराब करती है नेक कामों का नतीजा नेक होता है और बुरे कामों का नतीजा बुरा ये जानते हुवे भी के हर काम का नतीजा पाक परवरदीगर के हातों होता है फिर भी इन्सान नतीजा की चाहत में खो कर अपना काम बिगाडते है .

गीता अध्याए 12 श्लोक 13 14 15

जो किसी से हसद नही करता लेकिन तमाम जानदार हसत्यों का रहम दिल दोस्त है जो अपने आपको ईश्वर नहीं मानता और गरूर से आजाद है जो सुख दुख में यकसा हे शांत है हमेशो खुद पर मुत्मएंन (संतुष्ट) खुद पर काबू रखने वाला और यकीन के साथ मुझ में मन और अक्ल को जमा कर भगती में लगा रहता है ऐसा भगत मझे बहुत पियारा है

जो किसी को तकलीफ नही देता और न ही किसी को परेशान करता है जो सुख दुख में खोफ और फ़िक्र में इकसा है मुझे बहुत पियारा हैं .

गीता अध्याए 6 श्लोक 1

जो इन्सान अपने कर्म के फल से तालुक नही रखता और कर्म को धर्म समझ कर करता है वोह सच्चा सन्यासी और योगी है ना के को आग को त्यागता है और कोई कर्म नहीं करता

(आग से मुराद इन्सान की वोह चाहत जिसका नतीजा खुद इन्सान को और समाज को गरमाते है यानि बिगड़ते हैं)

इमांनवाले इनसान हमेशा अपनी तरफ की मज़हबी किताब और तहज़ीब के साथ साथ दूसरों की मज़हबी किताब और तहज़ीब की इज़त करते है और यही सारी किताबिं का हुक्म है . इसका मकसद हे इंसानों के दरमियाँन की नफरत हटा कर भुई चारा पियार मोहब्बत और इंसानियत पैदा करना और इंसानों को ये समझना के पाक परवरदीगर की दी होई हर हिदायत वाली किताब में एक ही बात मुख्ल्फ़ अंदाज़ और जुबान में समझाई गुई है कोई भी किताब ना तो किसी से छोटी और ना बड़ी और न ही बातिल जिस का सबूत दुनिया में मोजूद मज़हबी किताबें और इनके मानने वालों की मोजुदगी पाक परवरदीगर की जो किताब और कानून बातिल हैं इसे पाक परवरदीगर ने खुद दुनिया से मिटा दिया है .

मज़मून(निबंध) नम्बर 6

बेइमान इन्सान (काफ़िर)

हक तो ये है के हर दायरे के अन्दर नेकी बदी अच्छा बुरा मोजूद है और इसका मकसद है मुख्लूक को मुख्तलिफ कसम की ज़िन्दगी अता करना , जिस तरह खुशबु के साथ बदबू , काला के साथ गोरा , रात के साथ दिन , सर्दी गर्मी , दुनिया में मोजूद हें इसी तरह इंसानी करदार के ज़रया इमान बे इमान (अच्छा बुरा) में इंसानी समाज बटा हुवा है . बदबू अगर नहीं होगा तो खुशबु की पहचान केसे होगी .

खराब यानि गुनाहगार इन्सान ना हों तो नेक यानि परहेजगार इन्सान की पहचान केसे होगी .एक तरफ से देखा जाये तो हर दायरे के बर खिलाफ दायरे की मोजुदगी पाक परवरदीगर की मर्जी से है मज़हबी किताबों के अनुसार पाक परवरदीगर ने शैतान को कयामत तक की मंजूरी दी और इस मंजूरी के तहत मुख्लूक को रंग बिरंगी ज़िन्दगी नसीब होई इसलए इंसानी समाज में नेकी और बदी मोजूद है और इस इंसानी करदार में इमान वाले किरदार के साथ बे इमान वाला किरदार भी मोजूद है और रहे काफ़िर यानि पाक परवरदीगर को नहीं मानने वाले . अगर कोई इन्सान पाक परवरदीगर के वजूद को इंकार करते हूवे बुरे काम करे तो निश्चत वोह काफर है और अगर कोई इन्सान पाक परवरदीगर के वजूद को इनकार करते हुवे नेकी , मुहब्बत , परहेज़गारी , इंसानियत और अदम ताशुद्द की ज़िन्दगी को अपनाते हैं तो बला वास्ता वोह पाक परवरदीगर के हुक्म को ही अपनाते हैं ऐसी सूरत में हम इनको काफ़िर का दर्जा नही दे सकते और जो इन्सान जुबान से एक पाक परवरदीगर का यकीन और गवाही देने के बावजूद इनके हुक्मों को ठुकरा कर गुनाह करते हैं वोह मुकममल तोर पर काफ़िर हैं पाक परवरदीगर किसी की इबादत का मोहताज नहीं और इन्सान अपने अछे और नेक अमल के ज़रया इमान की बुनियाद को कायेम करते हूवे जननत की ज़िन्दगी हासिल कर सकते है .

सूरा इनाम 6 आयत 2
सब तारीफ ख़ुदा ही को है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और उसमें मुख़्तलिफ क़िस्मों की तारीकी और रोशनी बनाई फिर कुफ्फार अपने परवरदिगार के बराबर करते हैं (2)

सूरा रोम 30 आयत 44
जो काफ़िर बन बैठा उस पर उस के कुफ़्र का वबाल है और जिन्होने अच्छे काम किए वह अपने ही आसाइश का सामान कर रहें है (44)

सूरा बकरा 2 आयत 34
और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सब के सब झुक गए मगर शैतान ने इन्कार किया और ग़ुरूर में आ गया और काफ़िर हो गया (34)

पाक परवरदीगरने कुरान शरीफ की इन आयतों में काफ़िर की एक अहम किरदार की पहचान दी है यहाँ पर कहा गिया है के इब्लीस " मुनकर हूवा गरूर किया और काफ़िर हो गया " इस लिहाज़ से मगरूर हो कर पाक परवरदीगर के हुक्म को ना मानना कुफ्रिय्त है इस आयत से और भी बहुत सारी बातें ज़ाहिर होती हैं जेसे के पाक परवरदीगर को अपने अलावाह किसी दुसरे को सजदा करना गवारह नही तो कियूं फरिश्तों से इन्सान को सजदा करवाया ? पाक परवरदीगर ने इन्सान के अन्दर अपनी तरह की रूह फूंकी और बला वास्ता फरिश्तों से अपना ही सजदा करवाया . फरिश्तों से सजदा करवा कर ये पैग़ाम दिया के फ़रिश्ते भी इन्सान की खिदमत पर मुकर्र हैं और इस सन्देश के अनुसार मुख्लूक की खिदमत ही इन्सान की इबादत का तारिका है .

पाक परवरदीगर के फर्मनाबरदार होते होए भी फ़रिश्ते इब्लीस ने पाक परवरदीगर का हुक्म कियूं ठुकराया ? ब्रह्माण्ड की तखलीक के वक्त पाक परवरदीगर ने हर अच्छाई के साथ बुराई मुकर्र की ताके इन्सान की ज़िन्दगी यकसां और वीरान न हो और वोह इस यक्सनिय्त से उकता न जाये इसलए फ़रिश्ते इब्लीस को मघरूरिय्त और मुनक्रिय्त का रंग देकर इन्सान के लिए रंग बरंगी दुनया बसाई , .

इस आयत के जरिया जन्नत की बातें लोगों तक पोहचाने का पाक परवरदीगर का किया मकसद ?

इस आयत को किताब के ज़र्य इंसानों तक पोहंचा कर इन्सान को इंसानियत और मुख्लूक से मुहब्बत का पैग़ाम पोंचाया पाक परवरदीगर के हुक्म से नाफरमानी कर के बे इमानी की ज़िन्दगी अपनाना और जहुन्म को कबूल फरमाना बराबर है .

पाक परवरदीगर ने इन्सान को अछे बुरे की पहचान देते हूवे फेसला अपने इख़्तियार में रखा और इन्सान को सोचने समझने की स्लाहित देकर इसको अपना रास्ता चुनने का हक भी दिया .

कुछ इंसानों के ज़हेन में ये सवाल भी उठता है के जब हर चीज़ का माल्क पाक परवरदीगर हे तो बुराई का मालक भी पाक परवरदीगर ही है ये बात सच हे के बुराई का माल्क भी पाक परवरदीगर हे फिर भी अच्छा बुरा चुनने का हक इन्सान को दिया गया है . आत्मा यानि रूह की मोत नही होती और इस आत्मा को इमान और बे ईमानों में तकसीम करते हूवे आत्मा को एक मोका देते हैं नेकी और बदी चुनने का . पाक परवरदीगर का ये खेल ब्रह्माण्ड के आरम्भ से ही कायेम हूवा हैं और इसका कोई अंत नहीं इस लिहाज़ से में कह सकता हूँ के पाक परवरदीगर के पास इस दुनया के अलावाह और भी बहुत सारी दुन्याँ हो सकती हैं जिनकी मोजुदगी की जानकारी दुनिया के इंसानों तक नही पोहंची और ना इस स्लसला के अंत की जानकारी किसी भी इन्सान को नसीब होई .

गीता अध्याए 10 श्लोक 40

मेरी रोहानी खासियत का कोई अंत नही मेंने जो भी तुम से कहा है वोह तो मेरी लामेह्दूद खूबियों की एक झलक है.

कुछ इन्सान हजरत अदम और अम्मा हवा की बातों को कहानियाँ समझते हैं कहानी हो या हकीक़त इसकी तफसील में जाने के बजाये इन बातों से मले हूवे सबक को अपनाना ही बेहतर है और साएन्सदानो की तहकीकात से अगर इन बातों को तोला जाये तो इस कहानी का भी " साईन्स के असोलों के अनुसार " वजूहात (कारन) हैं .

सूरा नहल 16 आयत 83

ये लोग ख़ुदा की नेअमतों को पहचानते हैं फिर उनसे मुकर जाते हैं और इन्हीं में से बहुतेरे नाशुक्रे हैं (83)

कुफ्रिय्त की एक अहम निशानी हे पाक परवरदीगर की कुदरत को इंकार करना जेसे कुछ सायंसदान इन्सान और दुनिया की पेदायेश को अपने आप पर होने वाला एक रद व अम्ल समझते हैं उनसे मेरा सवाल है के साएन्सदानो की तहकीकात बगेर इनकी मेहनत के मुकमल केसे हो सकती है ? जिस तरह तहकीकात के नतीजा के लिए साएन्सदानो की मेहनत और लगन होती है ठीक इसी तरह कसी भी तखलीक(उत्पति) के लिए किसी न किसी की मेहनत ज़रूरी हैं और इस से ये साबित होता है के काएनात की तखलीक में यकीनन कोई आला और अफजल (सर्वश्रेष्ट) ताकत मोजूद है और यही आला और अज़ीम ताकत पाक परवरदीगर हे , पाक परवरदीगर को ना मानने वाले साएन्सदानों के अमाल इंसानियत के फायदे के लिए हों तो इसे बेइमान का दर्जा नही दे सकते कियूनके ये भी ब्लावास्ते पाक परवरदीगर के हुक्मों को ही मान कर चलते हैं .

सूरा सबा 34 आयत 31
और जो लोग काफिर हों बैठे कहते हैं कि हम तो न इस क़ुरान पर हरगिज़ इमान लाएँगे और न उस पर जो इससे पहले नाज़िल हो चुकी और अगर तुम देखो कि जब ये ज़ालिम क़यामत के दिन अपने परवरदिगार के सामने खड़े किए जायेंगे उनमें का एक दूसरे की तरफ बात करते होंगे कि कमज़ोर अदना लोग बड़े लोगों से कहते होगें कि अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमानवाले होते (31)

गुनाहगारों को कोई भी हिदायत वाली किताब मुकममल तोर पर हिदायत नही बुख्श सकती जबतक वोह खुद हिदायत की तरफ कदम न बढाये बेइमान इन्सान अपने अंधेपन की वजह से गुनाह करते हैं और किताबों की हिदायत पर अमल ना करते हुवे कुफ्रिय्त का अजाब कमाते हैं .

सूरा बकरा 2 आयत 170
और जब उन से कहा जाता है कि जो हुक्म ख़ुदा की तरफ से नाज़िल हुआ है उस को मानो तो कहते हैं कि नहीं बल्कि हम तो उसी तरीक़े पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादाओं को पाया अगरचे उन के बाप दादा कुछ भी न समझते हों और न राहे रास्त ही पर चलते रहे हों (170)

ऐसे इन्सान भी दुनिया में मोजूद हैं जो नेक हिदायत को ठकरा कर गुमराही पर चलते हैं और कहते हैं के हम बाप दादा की राह पर चल रहे हैं इस लिहाज़ से समाज की रफ्तार के साथ ना चलने वाला पुराणी गेर अकली और गेर मुन्ताकी बातों को पकड़ कर चलने वाला भी काफ़िर है यकीनन समाज की रफ्तार का तनासब भी पाक परवरदीगर की मर्जी से कायम है.

हक तो ये है के मज़हबी किताबों की आयतों का तर्जुमा या तस्दीक जो आलिमों पंडितों और पादरियों ने कर रखा है वो तर्जुमा इन लोगों ने अपने अपने वक्त हालात और अपनी अपनी अलग अलग तहकीकात के अनुसार किया था लेकिन दुनिया की तरकी (प्रगति) के साथ साथ जब साएन्सदानो ने अपनी तहकीकात सबूत के साथ दुनया के सामने रखी और हक पेश किया तो जियादा से जियादा लोगों ने इसे अपनाया और नाहक को बातिल किया तो ज़रूरी है के हर मज़ाहिब की किताब की आयात को हालात और तहकीकात

के अनुसार नये तरिके से तस्दीक की जाये और अगर इस स्ल्स्ली में कोई ये कहे " के मेरे बाप दादा जो करते चले अये हैं " उस पर अमल करते रहना चाहेये तो यकीनन वोह इन्सान गेर अकली या गेर मुन्क्की में भटकते हूवे कुफ्रिय्त का हकदार बने गा .

इस लिहाज़ से हर मज़हबी किताब की सिर्फ आयतों को मान कर चलें और इसकी गहराई तलाश करें .

सूरा बकरा 2 आयत 171
और जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तेयार किया उन की मिसाल तो उस शख्स की मिसाल है जो ऐसे जानवर को पुकार के अपना हलक़ फाड़े जो आवाज़ और पुकार के सिवा सुनता न हो ये लोग बहरे गूँगे अन्धें हैं कि ख़ाक नहीं समझते (171)

पाक परवरदीगरने किसी की इबादत का मोहताज नहीं और किस्मत का मालक पाक परवरदीगरने ही हे .काएनात का जरह ज़रह इसकी मोजुदगी का गवाह है इस लिहाज़ से नतीजा की सोच रखकर इबादत का तरीका या तारिका इबादत पर फसाद खड़ा करना भी कुफ्रिय्त है सभों की नियतो का फेसला पाक परवरदीगरने के हातों में है वहां पर देखि या अनदेखी इबादत का फेसला भी अल्लह ही करते है इस्ल्ये असके वजूद को मान कर नेक अम्ल के साथ चलना इन्सान का फर्ज़ है और जो इस कानून को नहीं मानता वोही ठीक ठीक काफ़िर हैं पाक परवरदीगरने की खिदमत का असल तारिका हे इसकी मखलूक की खिदमत और इन्सान किसी भी तरह वक्ती तोर पर पाक परवरदीगरने को पुकार कर वक्ती सकून हासिल कर सकते है .

पाक परवरदीगरने के हर कानून पर ग़ोर करने से पता चलता है के सारे कानून की बुनियाद है मुखलूक की खिदमत जो इंसानियत पर ही मुकम्मल होती है और जो इसके अलावाह इबादत के तरिकात पर बहेस करते हैं वोही बेइमान काफ़िर हैं .

नेक अमल इंसानियत और मोहब्बत के बगेर कोई भी इबादत बेइमानी और कुफ्रिय्त की निशानी है और बगेर इन बातों के कोई भी इबादत सिर्फ एक देखावा और ढोंग है .

सूरा इमरान 3 आयत 21
बेशक जो लोग ख़ुदा की आयतों से इन्कार करते हैं और नाहक़ पैग़म्बरों को क़त्ल करते हैं और उन लोगों को क़त्ल करते हैं जो इन्साफ़ करने का हुक़्म करते हैं तो तुम उन लोगों को दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो (21)

दुनिया में ऐसे बहुत सरे इन्सान है जो अपने रसूलों के अलावाह दुसरे रसूलों और इनकी किताबों को मनसूख करते हैं और तहरीफ़ का इलज़ाम भी लगाते हैं और जन्नत का लालच देकर इन्हें अपने ग्रवोह में शामिल होने की दावत देते हैं ये लोग भी बेइमान काफ़िर हैं रसूलों को बातिल ठेरा कर नाहक कत्ल करना भी कुफ्रीय्त है .

सूरा अल्ह्ज 22 आयत 67 68 69
हमने हर उम्मत के वास्ते एक तरीक़ा मुक़र्रर कर दिया कि वह इस पर चलते हैं फिर तो उन्हें इस दीन में तुम से झगड़ा न करना चाहिए और तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ बुलाए जाओ (67)
बेशक तुम सीधे रास्ते पर हो और अगर लोग तुमसे झगड़ा करें तो तुम कह दो कि जो कुछ तुम कर रहे हो ख़ुदा उससे ख़ूब वाक़िफ़ है (68)
जिन बातों में तुम बाहम झगड़ा करते थे क़यामत के दिन ख़ुदा तुम लोगों के दरम्यिान फ़ैसला कर देगा (69)

सूरा मायेदा 5 आयत 48
और हमने तुम पर भी बरहक़ किताब नाज़िल की जो किताब उसके वक़्त में मौजूद है उसकी तसदीक़ करती है और उसकी निगेहबान है जो कुछ तुम पर ख़ुदा ने नाज़िल किया है उसी के मुताबिक़ तुम भी हुक्म दो और जो हक़ बात ख़ुदा की तरफ़ से आ चुकी है उससे कतरा के उन लोगों की ख़्वाहिशे नफ़सियानी की पैरवी न करो और हमने तुम में हर एक के वास्ते एक एक शरीयत और ख़ास तरीक़े मुक़र्रर कर दिया और अगर ख़ुदा चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत बना देता मगर ख़ुदा का मतलब यह था कि जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें तुम्हारा इम्तेहान करे बस तुम नेकी में लपक कर आगे बढ़ जाओ और तुम सब को ख़ुदा ही की तरफ़ लौट कर जाना है (48)

काफ़िर और बे इमान इन्सान ही उमत ,किताब और रसूलों को लेकर एक दुसरे के खिलाफ इख्लाफात पैदा करते हैं और यही इख्लाफात बाद में फसाद की शक्ल इख्तयार करके समाज में नफरत ,तश्दद और बद सकुनी पैदा करते हैं और पाक परवरदीगरने फसाद से राज़ी नहीं . दुनिया में अलग अलग उमति और इनके इबादत के तरीकात पाक परवरदीगर की मर्ज़ी से कायेम हैं और फेसले का भी हक अल्लाह के पास हैं और वोह किसी की इबादत का मोहताज नहीं और इस हक पर किसी की इबादत का तारिका कुछ भी हो इन्सान के नेक अमल यानि नेकी , मोहब्बत , अदम तशुदुद , परहेज़गारी ,सकूंन वाली ज़िन्दगी , इंसानियत के लिए क़ुरबानी , मुख्लूक से मोहब्बत ही इन्सान का इमान का तराजू है और जी इन्सान इस कानून के खिलाफ जाते हूवे और मग़रुरिय्त में अन्धे होकर अपने आपको अच्छा और दुसरे को बुरा समझते हैं वोही बेइमान काफ़िर हैं .

सूरा बकरा 2 आयत 11 12 13 27
और जब उनसे कहा जाता है कि मुल्क में फसाद न करते फिरो कहते हैं कि हम तो सिर्फ इसलाह करने वाले हैं (11)
ख़बरदार हो जाओ बेशक यही लोग फसादी हैं लेकिन समझते नहीं (12)
और जब उनसे कहा जाता है कि जिस तरह और लोग ईमान लाए हैं तुम भी ईमान लाओ तो कहते हैं क्या हम भी उसी तरह ईमान लाएँ जिस तरह और बेवक़ूफ़ लोग ईमान लाएँ, ख़बरदार हो जाओ लोग बेवक़ूफ़ हैं लेकिन नहीं जानते (13)
जो लोग ख़ुदा के एहदो पैमान को मज़बूत हो जाने के बाद तोड़ डालते हैं और जिन (ताल्लुक़ात) का ख़ुदा ने हुक्म दिया है उनको क़ताआ कर देते हैं और मुल्क में फसाद करते फिरते हैं, यही लोग घाटा उठाने वाले हैं (27)

पाक परवरदीगरने के कलाम में झूट लगा कर इंसानियत को कत्ल करने वाले जुबान से नेकी और परहेज़गारी की बात करने वाले समाज को टुकड़े टुकड़े करते हैं वोही असल में फसादी और बेइमान हैं उनकी बातों में आकर और अपने इमान को गंवा कर (जेहनी / जिस्मानी) जो इनका साथ देते हैं वोह भी काफ़िर हैं .

सूरा लुकमान 31 आयत 23
और जो काफिर बन बैठे तो तुम उसके कुफ्र से कुढ़ों नही उन सबको तो हमारी तरफ लौट कर आना है तो जो कुछ उन लोगों ने किया है हम बता देगें बेशक ख़ुदा दिलों के राज़ से खूब वाक़िफ है (23)

इन्सान को मोका देने के बाद कुफ्रिय्त में धकेल देना पाक परवरदीगर की मर्ज़ी हैं . जो इन्सना हक को समझकर भी ना समझने का ढ़ोंग रचाते हैं और पाक परवरदीगर के दिए हुवे मोजुदा हाल को ठुकराते हैं और इसे इंकार करते हुवे तहज़ीब की तरक्की की राह पर झूट बांध कर रुकावट पैदा करते हैं वोही काफ़िर हैं .

सूरा बकरा 2 आयत 98
जो शख़्स ख़ुदा और उसके फरिश्तों और उसके रसूलों और जिबराईल व मीकाइल का दुशमन हो तो बेशक ख़ुदा भी काफ़िरों का दुश्मन है (98)

सूरा अल्बीनात 98 आयत 6
बेषक अहले किताब और मुषरेकीन से जो लोग काफ़िर हैं वह दोज़ख़ की आग में हमेशा उसी में रहेंगे यही लोग बदतरीन ख़लाएक़ हैं (6)

पाक परवरदीगरने के साथ काफिरों का रिश्ता दुश्मनों जेसा है गुनाहगारों के ज़हन से सकून छीन कर इनकी ज़िन्दगी को जीते जी जहुन्म की तकलीफ देते हैं पाक परवरदीगरने को जो इंसानी किरदार ना पसंद होता है वोह इसे सबूत के तोर पर ज़ाहिर भी कर देते हैं उधारन स्वरुप हर गुनाह से कमाई हुई दोलत को दोल्मन्द इन्सान के ज़हन में मजीद दोलत की ख्वाहिश डाल कर इसका सकून छीन लेते हैं बदकार बीवी और बचों से इसे परेशान करके दुनिया की जिंदगी में दोज़ख की सज़ा चखा देते हैं .

आयत 2 / 98 में पाक परवरदीगरने ने " फरिश्तों और रसूलों " कहकर सारे रसूलों और फरिश्तों को लेकर जो इंसानी झगड़ा हे इसे खत्म करते होए रसूलों और फरिश्तों को इंकार करने वालों को अपना दुश्मन ठराया .

दूसरी सूरा 98 आयत 6 में पाक परवरदीगर ने किताबी काफ़िर का ज़िक्र फरमाया है और जो इन्सान पाक परवरदीगरने की भेजी हुई किसी भी किताब को पढने के बाद दुसरे रसूलों को और इनकी क्ताबों को भला बुरा कहते हैं और गुनाह करते हैं वोही किताबी काफ़िर हैं और इसका साफ मतलब हे किताब पढ़ने और समझने के बाद जो लोग गुनाह करते हैं चाहे वोह कसी भी उम्त या रसूल के मानने वाले ही कियूं न हों .

सूरा बकरा 2 आयत 19
या उनकी मिसाल ऐसी है जैसे आसमानी बारिश जिसमें तारिकियाँ गरज और बिजली की गरज हो मौत के खौफ से कड़क के मारे अपने कानों में ऊँगलियाँ दे लेते हैं हालाँकि ख़ुदा काफ़िरों को घेरे हुए है (19)

(1) या जेसे असमान से बारिश पाक परवरदीगर की हिदायत

(2) के इस में इन्धेरयाँ जो काफिरों के लिए अँधेरा लाती है यानि अजाब

(3) और गरज और चमक काफिरों को डराना धमकाना और अज़ाब देना

(4) अपने कानों में उँगलियाँ ठोंस लेते हैं कडक के सबब मोत और अजाब के डर से कानों में उँगलियाँ डालते हैं काफरों के दलों में मोत का डर .

(5) और अल्लाह काफरों को घेरे हुवे हैं और इसतरह काफरों के कामों को एक मुकर्र वक्त तक पाक परवरदीगर ने मोहलत दे रखी है .

सूरा अल्फतः 48 आयत 26
जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद ठान ली थी और ज़िद भी तो जाहिलियत की सी तो ख़ुदा ने अपने रसूल और मोमिनीन पर अपनी तरफ़ से तसकीन नाज़िल फ़रमाई और उनको परहेज़गारी की बात पर क़ायम रखा और ये लोग उसी के सज़ावार और एहल भी थे और ख़ुदा तो हर चीज़ से ख़बरदार है (26)

गेर अकली और गेर मुन्ताकी तोहमत और कुसंस्कार वाली बातों को पकड़ कर जो इन्सान हक का इंकार करता है वोह भी काफ़िर है वक्त के साथ साथ पाक परवरदीगर समाज के हालात पर तब्दीलियां लाते रहते

हैं और इस हक को मान कर नेकी और परहेज़गारी की बुनियाद पर रहते हुवे इन्सान को अपने ख़यालात बदलने चाहिए और जो इन्सान पुरानी और गेर अकली बातों को पकड़ कर हक का इनकार करते हैं वोह पाक परवरदीगर की कुदरत से विंचित रह जाते हैं

उधारण स्वरुप टेली विज़न पाक परवरदीगर की कुदरत है और इस में अछुई के साथ साथ बुराई भी मोजूद है इन्सान को चाहिए के बुराई को छोड़ कर अच्छाई को अपनाएं लेकिन कुछ इन्सान टेली विज़न को इनकार करके पाक परवरदीगर की कुदरत को ठुकराते हैं और इस से वर्जित रह जाते हैं . बे हयाई के बगेर खुशयां मनाना बुरी बात नही पाक परवरदीगर इन्सान को खुशहाल और अमन व अमान वाली ज़िन्दगी में देखना पसंद करते हैं इसलए अल्लाह ने इन्हें तरह तरह की नेमतों और सहूलियत से नवाज़ा .

सूरा बकरा 2 आयत 126
और जब इबराहीम ने दुआ माँगी कि ऐ मेरे परवरदिगार इस को पनाह व अमन का शहर बना, और उसके रहने वालों में से जो ख़ुदा और रोज़े आख़िरत पर ईमान लाए उसको तरह-तरह के फल खाने को दें ख़ुदा ने फरमाया जो कुफ्र इख़तेयार करेगा उसकी दुनिया में चन्द रोज़ फायदा उठाने दूँगा फिर उसको मजबूर करके दोज़ख़ की तरफ खींच ले जाऊँगा और वह बहुत बुरा ठिकाना है (126)

सूरा इमरान 3 आयत 56
जिन बातों में तुम झगड़े करते थे तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर दूंगा बस जिन लोगों ने कुफ्र इख़्तेयार किया उनपर दुनिया और आख़िरत सख़्त अज़ाब करूंगा और उनका कोई मददगार न होगा (56)

सूरा रोम 30 आयत 16
मगर जिन लोगों के कुफ़्र एख़्तेयार किया और हमारी आयतों और आख़ेरत की हुज़ूरी को झुठलाया तो ये लोग अज़ाब में गिरफ्तार किए जाएँगे (16)

पाक परवरदीगर के हुक्मों को ना मान कर इन्सान खुद ही अपना सकून बरबाद करते हैं और ये भी इनके लिए एक सज़ा है ब्द्स्कुनी की ज़िन्दगी जीना जो गुनाह करेगा उसको इसके किये की सज़ा ज़रूर मलेगी और वोह दुनया में जीते जी इसको मिलती है जिस्मानी गुनाह की सज़ा जिस्मानी तोर पर और रूहानी गुनाह की सज़ा रूहानी तोर पर उधारन स्वरुप कोई इन्सान अगर किसी से बे इमानी करता है तो आगे चल कर इस इन्सान को किसी से बे इमानी जरूर मिलेगी .

जन्नत या दोज़ख इन्सान की नज़रों के सामने नही होती फर भी नेक अमल वाली ज़िन्दगी और ख्वाहिशात के बगेर ज़िन्दगी जी कर दुनिया में जेते जी जनत हासिल कर सकते हैं यानि सकून वाली ज़िन्दगी और समाज . इन्सान की जिस्मानी मोत के रूह को जनत या जहानम दिया जाता है जो इंसानी आंखे देख नही सकती और इस लिहाज़ से कोई कोई इन्सान जनत या दोज़ख के वजूद का इनकार करता है और इस इंकार से इसके दिल से पाक परवरदीगर के अज़ाब का डर निकल जाता है और वोह इन्सान गुनाह कर बेठता है.

सूरा काफिरून 109 आयत 1 – 6

तुम कह दो कि ऐ काफिरों (1)
तुम जिन चीज़ों को पूजते हो, मैं उनको नहीं पूजता (2)
और जिस की मैं इबादत करता हूँ उसकी तुम इबादत नहीं करते (3)
और जिन्हें तुम पूजते हो मैं उनका पूजने वाला नहीं (4)

और जिसकी मैं इबादत करता हूँ उसकी तुम इबादत करने वाले नहीं (5)
तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मेरे लिए मेरा दीन (6)
काफ़िर का लाफ़्ज़ी मतलब है " गेर , मुनकिर , बे गाना , पाक परवरदीगर को नही मानने वाला ,बे दीन और अफ्रीका के हब्सियों का एक फिरका , ऐसी कोम जो अफगनिस्तान की सरहद पर रहती है "

गुनाहों से आजाद रह कर दूसरों के ख्यालात को अहमियत देना और सकून की ज़िन्दगी जीना ही पाक परवरदीगर का हुक्म है और यही असल दीन है हर उमति के लिए पाक परवरदीगर की इबादत का तारिका अलग अलग यानि मुख्तलिफ हे और हर इन्सान अपने खायालात और अमल का मालिक है तो किसी को कोई हक नही के किसी के दीन या ख्यालात में दखल अंदाजी करे

सूरा तुघाबन 64 आयत 2
वही तो है जिसने तुम लोगों को पैदा किया कोई तुममें काफ़िर है और कोई मोमिन और जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा उसको देख रहा है (2)

गीता अध्याए 16 शलोक 6

ऐ पर्था के बेटे इस दुनिया में दो कसम की मुख्लूक हे एक को रूहानी (इमान वाला) और दुसरे को असुरी (शैतान) कहते हैं में पहले ही तुम्हें तफसील से तुम्हें रूहानी गुण बता चूका हूँ अब मुझ से असुरी गुणों के बारे में सुनो .

सूरा तहरीम 66 आयत 10 11 12
ख़ुदा ने काफ़िरों के वास्ते नूह की बीवी और लूत की बीवी की मसल बयान की है कि ये दोनो हमारे बन्दों के तसर्रुफ़ थीं तो दोनों ने अपने शौहरों से दगा की तो उनके शौहर ख़ुदा के मुक़ाबले में उनके कुछ भी काम न आए और उनको हुक़्म दिया गया कि और जाने वालों के साथ जहन्नुम में तुम दोनों भी दाखिल हो जाओ (10)
और ख़ुदा ने मोमिनीन के लिए फ़िरऔन की बीवी की मिसाल बयान फ़रमायी है कि जब उसने दुआ की परवरदिगार मेरे लिए अपने यहाँ बेहिष्त में एक घर बना और मुझे फ़िरऔन और उसकी कारस्तानी से नजात दे और मुझे ज़ालिम लोगो से छुटकारा अता फ़रमा (11)
और इमरान की बेटी मरियम जिसने अपनी शर्मगाह को महफूज़ रखा तो हमने उसमें रूह फूंक दी और उसने अपने परवरदिगार की बातों और उसकी किताबों की तस्दीक़ की और फ़रमाबरदारों में थीं (12)

इस आयत से साफ ज़ाहिर होता है के इमान का दायेरह नाम खानदान हसब नसब तक महदूद नही और ये कोई ज़रूरी भी नही के अरबी नाम होने से ही इमान वाला होगा और ये भी ज़रूरी नही के अगर बाप दादा इमान वाले हों तो बच्चे भी इमान वाले होंगे इमान का फेसला इन्सान के अमाल पर निर्भर करता है जेसे फिरोंन की बीवी के नेक अम्ल की बदोलत पाक परवरदिगार ने उनको इमान वाली का दर्जा दिया और ठीक इसके बरअक्स पैग़म्बर लूत और पैग़म्बर नूह की बिवयों को इनके अम्ल की बदोलत काफ़िर का दर्जा दिया गया .गुनाह और गलती में बहुत बड़ा फर्क होता है जानबुझकर गलत काम करने को गुनाह कहते हैं और इन्जाने में कए गये गलत काम को गलती जान बुझकर और समझकर बुरा काम करने वाले काफ़िर हैं .

मज़मून नम्बर 7

मज़हबी किताब

हर मज़हब के साथ एक किताब मोजूद है और वोह किताब रसूलों की बताई हुई एक मशाल रह है जो इन्सान को सकुन और राहत बख्शाती है हर किताब अपने अपने वक्त और दायरे पर एक मुकम्मल दस्तूर अमल थी और इस बुनयाद पर दुनिया के तमाम कानून वजूद में अये . इंसानों के दरमियाँन शैतान की मोजुदगी को सामने रखते हुवे वक्त बवक्त किताबों और कानून को लागु किया और इसका मकसद था समाज को शैतानी करदार से पाक व साफ रखना इस्ल्ये हर जगह के इन्सान इन्सान के अपने जीने के तोर तरिका को अपने अपने कानून के तहत जोड़ कर तहज़ीब को कानून के दायरे में लाये और इस तरह दुनिया की तमाम तारीखी तहज़ीब अलग अलग तरीकों से परवरिश पाई.

पाक परवरदीगर का वजूद किताबों में हे या नही इसकी तहकीकात कोई अह्मोय्त नही रखती हक बात तो ये हे के किताबें इन्सान के फायदे के लिए और सच्चाई की रौशनी बख्शने के लिए ही वजूद में आयें हैं लेकिन आज के दोर में किताबों के हक और मकसद को हटा कर इन्सान कुसंस्कार की बातों में उलझ कर अपने फायेदे के बजाये नुकसान उठा रहे हैं उधारन स्वरुप हिंदुस्तान के जियादा से जियादा लोग कुरान वेद या गीता को अपनी समझने वाली जुबान में नही पढ़ते और इसी वजह से कुरान ,वेद गीता की हिदायत को न समझकर एक दुसरे के साथ फसाद में उलझ जाते हैं और नफरत की आग से एक दुसरे को जलाते हैं जिसकी वजह से समाज का सकून दरहम बरह्म हो जाता है और तररकी में रुकावट आजाती है .

सूरा मायेदा 5 आयत 15

ऐ एहले किताब तुम्हारे पास हमारा पैगम्बर आ चुका जो किताबे ख़ुदा की उन बातों में से जिन्हें तुम छुपाया करते थे बहुतेरी तो साफ़ साफ़ बयान कर देगा और बहुतेरी से दरगुज़र करेगा तुम्हरे पास तो ख़ुदा की तरफ़ से एक नूर और साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब आ चुकी है (15)

सूरा बकरा 2 आयत 213

ख़ुदा ने नजात से ख़ुशख़बरी देने वाले और अज़ाब से डराने वाले पैग़म्बरों को भेजा और इन पैग़म्बरों के साथ बरहक़ किताब भी नाज़िल की ताकि जिन बातों में लोग झगड़ते थे किताबे ख़ुदा फ़ैसला कर दे और फिर अफ़सोस तो ये है कि इस हुक्म से इख़्तेलाफ किया भी तो उन्हीं लोगों ने जिन को किताब दी गयी थी और वह भी जब उन के पास ख़ुदा के साफ एहकाम आ चुके उसके बाद और वह भी आपस की शरारत से तब ख़ुदा ने अपनी मेहरबानी से ईमानदारों को वह राहे हक़ दिखा दी जिस में उन लोगों ने इख़्तेलाफ डाल रखा था और ख़ुदा जिस को चाहे राहे रास्त की हिदायत करता है (213)

किताब में पाक परवरदीगर के वजूद को धुंडने के बजाये किताबों की अछि बातों को अपनाना ही बेहतर हैं तारीख गवाह है के कोई भी हिदायत किताब की शक्ल में असमान से नही उतरी और ना ही किसी रसूल ने इसे अपने हातों से लिखा है . किताबों की सच्चाई का सबूत हे इसके अन्दर की नेक हिदायत जी इन्सनित और समाज के लिए फायेदे मन्द हे . अगर किताबों में पाक परवरदीगर का वजूद हे तो यकीनन हम इन्सान इसे मनसूख या बदल नही सकते हर दोर में हर किताब पर वक्त के साथ साथ तब्दीलियाँ होती रहीं जो इन्सान की तहकीकात से गलत साबित हो चुकीं और मोजुदा दुनिया ने किताब की ह्कानिस्त को साबित किया .

पाक परवरदीगर की भेजी हुई हर किताब पर इमान रखते हुवे किसी भी किताब की हदायत को पाक परवरदीगर का हुक्म मान कर अपने अमाल को इसके मुताबक ढाल कर और अपनने ज़येफी के वक्त को सामने रखते हुवे इन्सान को चाहिए के वोह अपने अमाल को शुरू से लेकर अखीर तक गुनाहों से पाक रखे ताके इसे जईफी की तकलीफों से नजात हासिल हो और यही " अखरत पर यकीन " रखने का हुक्म है .

सूरा बकरा 2 आयत 4 41
और जो कुछ तुम पर और तुम से पहले नाज़िल किया गया है उस पर ईमान लाते हैं और वही आख़िरत का यक़ीन भी रखते हैं (4)
और जो मैंने नाज़िल किया वह उस किताब की तसदीक़ करता हूँ जो तुम्हारे पास है और तुम सबसे चले उसके इन्कार पर मौजूद न हो जाओ और मेरी आयतों के बदले थोड़ी क़ीमत न लो और मुझ ही से डरते रहो (41)

सारी किताबें एक दुसरे की तस्दीक करती हैं और इस स्लसले में मे ये कह्स्कता हूँ के किसी किताब में साफ और सीधे तोर पर और किसी किताब में घुमा फरा कर किताबों की गवाही दी गुई है जिस तरह कोई भी इन्सान एक ही जसम पर रोजाना लिबास बदलता है ठीक इसी तरह पाक परवरदीगर एक ही हिदायत मुख्तलिफ जगहों में अलग अलग रसूलों के ज़र्य दुनिया में भेजी और इस हक को छिपाने के लिए कुछ शैतानी ज़हेन वाले इनस्नों ने आयतों का गलत मतलब निकल कर या इसे घुमा फिरा कर या इसे छिपा कर इस में मतभेद पैदा करके लोगों को फिरकों में बाँट दिया .

सूरा बकरा 2 आयत 111 121
और कहते हैं कि यहूद और नसारा के सिवा कोई बेहिश्त में जाने ही न पाएगा ये उनके ख़्याली पुलाव है तुम उन से कहो कि भला अगर तुम सच्चे हो कि हम ही बेहिश्त में जाएँगे तो अपनी दलील पेश करो (111)

जिन लोगों को हमने किताब दी है वह लोग उसे इस तरह पढ़ते रहते हैं जो उसके पढ़ने का हक़ है यही लोग उस पर ईमान लाते हैं और जो उससे इनकार करते हैं वही लोग घाटे में हैं (121)

स्वर्ग और नर्क की बुनयाद है इन्सान के अमाल और अमल का दारोमदार किसी उमति या कोम या ग्रोह से तालुक नहीं रखता कुछ इन्सान अपने मज़हबी रस्म व रवाज को बुनयाद को अफज़ल बताते हुवे अपने आपको स्वर्ग का हकदार समझते हैं लेकिन ये अंकी ख़म ख्याली है इन्सान के नेक अमल ही स्वर्ग नर्क का फेसला करते हैं और इन अमाल को कानूनी दायरे में लाने के लिए मज़हबी रस्म व रवाज मुकर्र किये गये हैं कुछ लोग नेक आमाल को छोड़ कर सिर्फ मज़हबी रस्म व रवाज को अपना नसब ऐन बना कर अपने आपको स्वर्ग का हकदार समझने की भूल करते हैं और यहाँ से होती हैं ओनके गुनाहों की शुरुआत . हर इबादत का रास्ता इस वक्त तक पाक परवरदीगर तक नहीं पोहचता जबतक इस में नेक अमाल शामिल न हों .

गीता अध्याए 4 श्लोक 11

जिसतरह लोग मेरी शरण लेते हैं इसतरह में उनको फल देता हूँ ऐ पार्था के बेटे सब लोग हर तरह से मेरे ही रास्ते को पते हैं

किताबों की आयात इंसानियत और नेक समाज के हक में होती हें और जो तलावत इन्सनित नेकी , मोहब्बत परहेज़गारी और अदम त्शुदद के खिलाफ हो वोह गुनाह में शुमार होती है और यकीनन जो बयानात किताबों की आयात से नही मिलतीं वोह ज़ईफ़ तलावत होगी और किसी को पाक परवरदीगर ने ये हक नही दिया के वोह अपनी तरफ से आयत को घटा या बढ़ा कर पेश करे किताबों की आयत को समझकर पड़ने के साथ साथ इसके गहरे मतलब को महसूस करें और इसके अंदर जो हक है पहचानें इस सिलसले में पाक परवरदीगर के हुक्म के मुताबक इंसानी समाज का अध्यन करें और असे अपनी ज़िन्दगी और समाज में लागु करें . अमली ज़िन्दगी में जो इन्सान जितना पाक परवरदीगर के हुक्म के अनुसार चलता है असे इतनी ही सकून वाली ज़िन्दगी हासिल होती है और ऐसे भी कुछ शैतानी ज़हेन वाले इन्सान हैं जो किताब के साथ साथ अपने फायदे के अनुसार कुछ बातें जोड़ कर असे कमौई का ज़रया बनाते हैं . इन्सान

का ये भी कर्तव्य है के ऐसे शैतानी बन्दों की ढूंड कर इन्हें इन्संसी समाज से निकल बाहर किया जाये और ऐसे मेम्लत में हम कहेंगे के पाक परवरदीगर ने हमें ज़हेन दिया हे के हम अच्छा बुरा चुन सकें .

सूरा बकरा 2 आयत 79
बस वाए हो उन लोगों पर जो अपने हाथ से किताब लिखते हैं फिर हैं कि यह ख़ुदा के यहाँ से है ताकि उसके ज़रिये से थोड़ी सी क़ीमत हासिल करें बस अफसोस है उन पर कि उनके हाथों ने लिखा और फिर अफसोस है उनपर कि वह ऐसी कमाई करते हैं (79)

सूरा इमरान 3 आयत 71
ऐ अहले किताब तुम क्यो हक़ व बातिल को गड़बड़ करते और हक़ को छुपाते हो हालांकि तुम जानते हो (71)

सूरा ऐराफ 7 आयत 3
तुम्हारे दिल में उसकी वजह से कोई न तंगी पैदा हो जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल किया गया है उसकी पैरवी करो और उसके सिवा दूसरे बुतों की पैरवी न करो (3)

दुनया में मोजूद उमति और इनके साथ जुडी हुई किताबें सिर्फ इन्सान और इंसानियत की भलाई का हुक्म ही फरमाती हैं और रसूलों ने भी अपने अपाने वक्त पर इसी सच्चाई को सामने रखते हुवे काम किया दुनिया की सारी जबानें कुदरती हैं और सारी कुदरत पाक परवरदीगर के इख्तयार में है इस लिहाज़ से ईस बात का कोई अस्तित्व नही के किसी विशेष जुबान में ही किताब पढ़ने से पुन्य्य होगा लेकिन पुनिया तो तब हासिल होगा जब किताबों को समझकर और अनुभव कर के पढ़ा जाये और असके साथ साथ इस पर अम्ल भी करना होगा हर किसी को अपनी मादरी जुबान में किताब के हक को समझने का इख़्तियार हे और जो लोग किसी न किसी बहाने से गेर जुबान में किताब को इंसानों पर थोपने की कोशिश करते हैं वोह गुनाहगार इन्सान हैं और पाक परवरदीगर की कुदरत से आज दुनिया में इंसानों के दरमियान जुबानो के इख्लाफत का फासला बहुत कम हो गिया है गेर जुबान में किताब को पढने से इंसानों और किताबों में दूर्या बढ़ती जा रही हैं और दूसरीं का मोहताज हो कर गेर अकली और कुसंस्कार वाली बातों में उलझ कर रह गये और यकीनन रसूलों के ज़रया पाक परवरदीगर की हिदायत को ना मान कर या न समझकर सिर्फ रट्टा लगाना एक गेर मज़हबी किरदार है .

अंधे पन और बे बुनयाद बातों को "मज़हब " नही कहते और ना ही मज़हब खुद इस बात की इजाजत देता है. मज़हब तो वह रौशनी है जो इन्सान की गेर अकली बातों से निजत दाता है और सर्व श्रेष्ट मानुष को ये शोभा नाहे देता के वह मज़हब के नाम पर गेर अकली करदार को अपनाएं इन्सान को ज़हेन अता कर के पाक परवरदीगर ने इन्सान की ज़िन्दगी को अँधेरे से निकल कर उजाले की तरफ ले गये और जो लोग इस हकीकत को इंकार करते हें वोह शिर्क करने वालों में शुमार होते हैं " मज़हब / सही गलत " की पहचान जो इन्सान को किताब के बगेर भी हासिल हो सकती है अगर पाक परवरदीगर का रहम बरकरार रहे . किताब एक राहनुमा है जो इन्सना को नेक बनने में मदद करती है .

दुनया में वेद , गीता, कुरान , त्रिपिटक , ज़बूर , इंजील , तोरेत और गुरु ग्रन्थ ये सारी मज़हबी किताबें मोजूद हैं और इन किताबो के मानने वाले भी कम ज़ियादो मिजुद हैं और में समझता हूँ के किताबों और इनके मानने वालों की मोजुदगी पाक परवरदीगर की मर्ज़ी से हैं और ये भी हक है के सारी किताबें की बुनयादी बातें एक हैं और किसी भी किताब में मुकमल तोर पर इबादत का तरीका मोजूद नही हैं और पाक परवरदीगर इंसानों की इबादत का " मोहताज " नहीं है .

किताबों में एक ही हिदायत अलग अलग अलग तरीकों से बियान की गुई हैं और यही वजह हे के पाक परवरदीगर ने किसी भी किताब में साफ तोर पर इबादत का तरीका नही बतया और हर किताब में सिर्फ नेकी मोहब्बत परहेज़गारी की ही हिदायत फरमाई और इन बातों की तस्दीक के लिए दुनिया में कुरान शरीफ आया ताके इंसानों के दरमियाँ की नफरत कम हो और रसूलों और किताबों का फर्क न रहे .

सूरा अनाम 6 आयत 160
बेशक जिन लोगों ने आपने दीन में तफरक़ा डाला और कई फरीक़ बन गए थे उनसे कुछ सरोकार नहीं उनका मामला तो सिर्फ ख़ुदा के हवाले है फिर जो कुछ वह दुनिया में नेक या बद किया करते थे वह उन्हें बता देगा (160)

सूरा यूनुस 10 आयत 19
उससे वह पाक साफ और बरतर है और सब लोग तो एक ही उम्मत थे और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक बात पहले न हो चुकी होती जिसमें ये लोग एख़्तिलाफ कर रहे हैं उसका फैसला उनके दरम्यिान कर दिया गया होता (19)

सूरा अलनाहल 16 आयत 93
और अगर ख़ुदा चाहता तो तुम सबको एक ही गिरोह बना देता मगर वह तो जिसको चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिसकी चाहता है हिदायत करता है और जो कुछ तुम लोग दुनिया में किया करते थे उसकी बाज़ पुर्स तुमसे ज़रुर की जाएगी (9)

मज़हबी किताबें इंसानों की तराकी के रहें खोलती हैं जिस से इन्सान को सकून और तरक्की हासिल होती हे . लेकिन जब यही किताब तरक्की में रोकावट बन जाती हे तो इन्सान के सकून और तरक्की को दरहम बरह्म कर देती है .

इस सिलसले में रबिन्द्रा नाथ टेगोर का मुश्हूर जुमला याद दिलाना चाहता हूँ

जब मजहब समाज के आगे बढने में रुकावट बन जाये और इंसानियत की तरक्की के रस्ते में पहाड़ बन क्र खड़ा हो जाये तब ये ज़रूरी हे के " मज़हब " नामी किले की ईंट से ईंट बजा दी जाये .

मज़मून 8

इंसानी फ्रयेज़

समाज की पाकीजगी और इन्सान के सकून की बुन्याद हे इन्सान के नेक अमल जिसकी शुरुआत असे अपने अप से और अपने घर से शुरू करनी चाहए. इसके तहत बचों की अछि प्रवर्ष ,माँ बाप और भाई बहनों से अच्छा सलूक असके इलावा ऊंची गलत ख्वाहिशात गुस्सा लालच और हसद इन सारी बातों पर काबू पाने की तालीम हासिल करना भी शामिल है बच्चों को अछि तहज़ीब नेक अमल और अछि तालीम देना माँ बाप के फ्रायेज़ हे इस लिहाज़ से माँ बाप भी अपनी हेसियत के अनुसार नस्ल को बढ़ाएं जिस की सहूलत पाक परवरदीगर ने मोजुदा दुनिया में इन्सान को दी इंसानी फरयेज़ में ये भी शामिल है के वोह पहले अपने आपको गुनाहों से आजाद कराएँ और इल्म हासिल करें और फिर भी ये सिलसिला दर सिलसिला अपने खानदान से शुरू करते हुवे समाज में लागु करें .

समाज के लिए इंसानों के लिए कुछ फ्रायेज़ के तहत रिश्तेदरों और पड़ोसियों के साथ अच्छा सलूक करना दुःख मुसिबुत में इनका साथ देना और इसके साथ साथ इंसानियत नेकी और परहेज़गारी की तालीम देना .

हर इन्सान की ज़िन्दगी के साथ दुःख मुसीबत लड़ाई झगड़ा जुड़ा हुवा है इस लिहाज़ से हर इन्सान को चाहए के दुःख मुसीबत में हर मुमकिन तारिका से मदद करे और इस कानून पर अम्ल करने के लिए पाक परवरदीगर ने हिदायत फरमाई . खुद गरज इन्सान को कभी भी सकून की ज़िन्दगी हासिल नही और सुकून की ज़िन्दगी के लिए पाक परवरदीगर की हिदायत पर अम्ल करना इमान वाले इन्सान का फर्ज़ है अपने या दूसरों के झगड़े को बढ़ाने के बजाये इसे खतम करने की कोशिश करें मिलना बिछड़ना सब पाक परवरदीगर की मर्ज़ी हे और इनके फेसले को दिल व जान से कबूल करना ही हक है .

मग़रूरिय्त और घमंड से इंसानों के दरमियाँ दूरियां पैदा होती हैं अच्छाई यही है के हर इन्सान एक दुसरे का एहतराम करे और झुक क्र मले दोलत शोहरत इज़त और हिकमत पाक परवरदीगर की रहमत से इन्सान को हासिल होती है इस लिहाज़ से इन्सान का घमण्ड और मग़रुरियत सिर्फ इसके जेहनी तस्वरात हैं हकीकत नही और जिसकी कोई हकीकत ना हो इसको पकड़ कर रखना भी शिर्क में शामिल है और ये सखत गुनाह है.

महज़ब समाज में हर इन्सान का फर्ज़ हे के वोह अपने आपको परदे के दायरे में रखे और इस परदे का दायेरा इस के हर अम्ल में होना चाहए परदे का मतलब केद नही है परदे का मकसद इन्सान के नेक अम्ल को नेकी और परहेज़गारी बख्शना और इसके तहत जुबान आंख जसम और ज़हेन का परदा शामिल है परदे को बरकरार रखना इन्सान का ज़ाती फेसला है और ये इसका हक भी है जिसकी हिफाजत इन्सान खुद करता है परदे के तहत इन्सान अपनी जुबान से ऐसी कोई बात न निकाले जो किसी का दिल दुखाये अपने ज़हेन को गंदी सोच से आजाद रखने की कोशिश करें निगाहें नीची रखें और कपड़ों से अपनर जिस्म की हिफाजत करें इन्सान के जिसम को हिफज़त देने के लिए पाक परवरदीगर ने इंसानों को तरह तरह के म्ल्बुसात से नवाज़ा है और यकीनन इसे बढा कर या घटा कर पहिनना गुनाह है और ऐसा लिबास कभी भी नही पहनना चाहिए जिसकी कारन शैतान को पनपने का मोका मिले . इन्सान को अपनी ज़रुरत के अनुसार ही अपने कपडे को चुनने का हक है और इस हक को मोसम और समाज की पाकीजगी को सामने रखते हुवे इस्तमाल करे .

मा बाप भाई बहनों के गुनाहों में शामिल होए बगेर इनकी हिफाजत करना हर इन्सान की फर्ज़ हैं और ये पाक परवरदीगर के सखत कानून में से है जो इन्सान माँ बाप की हिफाजत नही करता इसे समाज की तरफ से सखत से सखत सज़ा दी जाये और असे इसकी दोलत से महरूम करके वोह दोलत इसके माँ बाप को देदी जाये अगर वोह मज़लूम हो .

सूरा लुकमान 31 आयत 14 15
और हमने इन्सान को जिसे उसकी माँ ने दुख पर दुख सह के पेट में रखा दो बरस में उसकी दूध बढ़ाई की उसके माँ बाप के बारे में ताक़ीद की कि मेरा भी शुक्रिया अदा करो और अपने वालदैन का और आख़िर सबको मेरी तरफ लौट कर जाना है (14)
और अगर तेरे माँ बाप तुझे इस बात पर मजबूर करें कि तू मेरा शरीक ऐसी चीज़ को क़रार दे जिसका तुझे इल्म भी नहीं तो तू उनकी इताअत न करो और दुनिया में उनका अच्छी तरह साथ दे और उन लोगों के तरीक़े पर चल जो मेरी तरफ रुजू करे फिर तुम सबकी रुजू मेरी ही तरफ है तब जो कुछ तुम करते थे (15)
सूरा अह्क़फ़ 46 आयत 15
और हमने इन्सान को अपने माँ बाप के साथ भलाई करने का हुक्म दिया उसकी माँ ने रंज की हालत में उसको पेट में रखा और रंज ही से उसको जना और उसका पेट में रहना और उसको दूध बढ़ाई के तीस महीने हुए यहाँ तक कि जब अपनी पूरी जवानी को पहुँचता और चालीस बरस को पहुँचता है तो अर्ज़ करता है परवरदिगार तू मुझे तौफ़ीक़ अता फरमा कि तूने जो एहसानात मुझ पर और मेरे वालदैन पर किये हैं मैं

उन एहसानों का शुक्रिया अदा करूँ और ये कि मैं ऐसा नेक काम करूँ जिसे तू पसन्द करे और मेरे लिए मेरी औलाद में सुलाह व तक़वा पैदा करे तेरी तरफ़ रूजू करता हूँ और मैं यक़ीनन फरमाबरदारो में हूँ (15)

कुरान शरीफ की इन आयतों में पाक परवरदीगर ने माँ बाप की हिफाजत के लिए सख्त हुक्म फ़रमाया और इसे अपने कानून के दायरे में रखा कियूनको इंसानी फितरत की एक अहम पहचान को सामने रखते हुवे इसे हुक्म कानून और फर्ज़ की शक्ल दी .

पेदायेश के बाद इन्सान को सब से जियादा लगाव अपनी माँ से होता है फिर अपने बाप से और फिर जेसे जेसे उम्र बढ़ती जाती है माँ बाप से लागव कम होने लगता है शादी के बाद मियां बीवी को एक दुसरे से लगाव होता है फिर बचा पैदा होने के बाद ओरत को पूरा तरह अपने बचों से लगाव बढ़ जाता है और कभी कभी ये भी देखा जाता है के ओरत अपन शोहर से भी दूरी इख़्तियार कर लेती है और मर्द के लिए अपने बाप बनने के बाद सब से ज़ियादो लगाव अपनी अवलाद से हो जाता है इस वक्त मर्द और ओरत ले लिए माँ बाप भाई बहेन सिर्फ एक रिशता बनकर रह जाता है और इनके दरमियाँन सिर्फ फर्ज़ मोजूद रहता है और इस फर्ज़ को पाक परवरदीगर अपने कानून की बंदिश में नहीं रखते तो इन्सान कभी भी इसको दिल से इख़्तियार नहीं करता हुकूमत वालों का कर्तव्य है के कानून के ज़र्य तमाम इंसानों की हिफाजत बख्शना और दुनयावी हुकुमत वाले वोह होंगे जसे इन्सान अपनी मर्जी से हाकम चुने और जो कानून के ज़र्य इंसानी तहज़ीब की रफ्तार को बरकरार रखे और पाक परवरदीगर के कानून को पूरा तरह नाफ्ज़ करें .

मज़मून 9

कानून

पाक परवरदीगर ने इंसानों क सर्व श्रेष्ट (अफज़ल) का दर्जा दिया और इस हसिय्त से इन्सान को रिश्ता और समाज नसीब हूवा हर कोई अपने अपने अमल का ज़िम्मेदार है समाज और इंसानियत के वजूद को पाक व साफ और बरकरार रखने के लिए पाक परवरदीगर ने हर तहज़ीब को कानून के दायरे में रखा .

सूरा निसा 4 आयत 59
ऐ ईमानदारों ख़ुदा की इताअत करो और रसूल की और जो तुममें से साहेबए हुकूमत हों उनकी इताअत करो और अगर तुम किसी बात में झगड़ा करो बस अगर तुम ख़ुदा और रोज़े आख़िरत पर इमान रखते हो तो इस अम्र में ख़ुदा और रसूल की तरफ़ रूजू करो यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अन्जाम की राह से बहुत अच्छा है (59)

इंसानी समाज के फायदे के लिए सरे कानून मुकर्र होए हैं इस लिहाज़ से पाक परवरदीगर रसूल और हकुमत वालों के कानून एक दुसरे की हिमायत करते है पाक परवरदीगर के बताये हुवे कानून किताबी शक्ल में रसूलों के ज़र्य इन्सानी समाज में मुकर्र हुवे और हुकुमत का फर्ज़ हे के वोह असे ठीक ठीक समाज में लागु करें जो बात समाज और इंसानियत के फायदे के लिए नही हिती वोह किसी भी सूरत में इन तीनो के बताये हुवे कानून की तरफदारी नहीं करते . .

रसूल और हकुमत करने वालों का काम हे पाक परवरदीगर के बताये हुवे कानून की निगेहबानी करना और असे समाज में लागु करते हुवे इनसानों को सकून की जिंदगी बख्शना हर कानून का सर्व श्रेष्ट मकसद ये

होता है के इन्सान के आपसी मत भेद को दूर करना इंसानी ज़िन्दगी की नाजायेज़ खुवाहिशत को काबू में रखना और जो कानून इंसानियत या समाज के अमन व सकुन के खिलाफ हो इसे ना मान कर समाज से उखाड़ फेंकना ही बेहतर हे और ये इंसानी फर्ज़ हे .

पाक परवरदीगर ने सर्व श्रेष्ट यानि इंसानी समाज को दायरे में रखकर अपने कानून मानने पर मजबूर किया और " कानून इलाही " रसूलों और हुकुमत वालों के ज़र्य ही समाज में नाफ़िज़ हुवा हुकुमत वालों का खास फर्ज़ हे के वोह समाज में पहेली हुई बुराई गेर अकली बाते और कुसंस्कार वाली सोच को मिटाने के लिए सख्त से सख्त कानून नाफ्ज़ करें और कानून नाफ़िज़ करते वक्त खास तोर पर किसी की भी तरफदारी न करें . समाज में मजहब के नाम पर हजारों किस्म के गेर अकली और कुसंस्कार वाले ख्यालात फेले हुवे हैं और इसकी बदोलत ही इंसानों के दरमियान नफरत की बुनियाद पैदा हुई कानून के ज़र्य इन सारी बातों को ख़ारिज कर देना चाहिए जो गेर अकली हों और समाज के लिए नुकसान दाह . सब से पहले उन सं मज़हबी बातों को मिटाना ज़रूरी है जिन की कोई मज़हबी बुनयाद नहीं है और साइंसदानो ने अपनी तह्कीक्त के ज़र्य इसे गलत साबित किया .सिर्फ सौइंसदानो ने ही नही बलके पाक परवरदीगर भी इन्सानों के दरमियाँन इस सारि बातों को धीरे धीरे मिटा रहे हैं और दुनिया के जियादा से जियादा समझदार और बाशूर लोगों ने इसे रद कर दिया .

इन्सान का सब से पहला फर्ज़ हे के वो ऐसा कोई कम न करे जिस से दोसरे इन्सान या मुख्लूक को तकलीफ हो और किस का नाहक दिल दुखे और नाहक दिल दुखना सब से बड़ा गुनाह है और इस फर्ज़ के दायरे में एक नेक इन्सान के वास्ते बुनियादी तालीम हे सबर और माफ़ी किसी इन्सान के लिए इसके पास पडोस कराबत वाले और मिलने जुलने वाले ही इसके लिए समाजिक दायरा हे और ये दायरा ही इसके पहले फर्ज़ की शुरुआत है.

माँ बाप के साथ भलाई करना , बचों की अछि तरह परवरिश करना और इनको अछि तालीम देना मेहनत से हलाल रजक कमाना पड़ोस और रिश्तेदारों के साथ भलाई से पेश आना इनके दुःख दर्द में काम आना हर जानदार की खिदमत करना अपनी नाजायेज़ ख्वाहिशात को काबू में रखना ओरतों के साथ अच्छा सलूक करना इन सारी बातो को सामने रखते हुवे सारे कानून नाफ़िज़ कए गये हैं और गेब पर इंसानी यकीन की कमजोरी को देखते हुवे हुकुमत वालों पर कुछ सज़ा देने का हक मुकर्र किया गिया है हुकुमत वाले तरह तरह के कानून नाफ़िज़ कर के समाज को पाक व साफ यानि गुनाहों से आजाद रखने की कोशिश करते है पाक परवरदीगर रसूल और हुकुमत वालों के अनुसार हर इंसानी फितरत के लिए कानून मुकर्र हैं और बदलते वक्त और हालात के अनुसार कानून की सच्चाई और गहराई तलाश करें

गुनाहगार इन्सान को गुनाह से रोकने पर इसका दिल दुखता है ऐसा दिल दुखाना गुनाह में शुमार नहीं .

मज़मून 10

शादी का कानून

मर्द ओरत के दरमियान कम से कम दो साल और जियादा से जियादा 6 साल का फर्क होना चाहिए कियून्के शादी सिर्फ जिस्मानी मेल जोल या नस्ल बढ़ाने के लिए नही बलके जिस्म और नस्ल के साथ साथ ये एक दिल का बन्धन भी हे मिया बीवी के दरमियाँ एक ऐसा वक्त भी आता है जब जिस्म से बढ़कर दली तालुकात जियादा कायेम रहते हैं और दली तालुकात से ही इन्सान को जियादा जेहनी सकुन हासिल होता है मिया बीवी के दरमियान भरोसा इज्ज़त क़ुरबानी मोहब्बत परहेज़गारी और इमांनदरी होना बहुत ही ज़रूरी है इस के बगेर दली तालुकात नामुमकिन है और ये सारे करदार मिया बीवी से बचों में मुताकिल होते है ज़हेनी इख्लाफत होने से इसे बंद कमरों में सुलझा लिया जाये ताके इसका असर बचों पर न पड़े इसके बावजूद भी अगर मिया बीवी के दरमियाँन किसी कसम की रंज्शें बढ़ गई हों जो सुलझाने के काबिल नही तो भलाई के साथ एक दोसरे के दरमियाँ तलाक हो जानि चाहिए और इस दोरान एक दुसरे की जयेदाद को आपस में समझदारी के साथ बाँट लेना चाहए . कमाने वाली ओरत हो या मर्द एक दुसरे की मेहनत की कमाई में तलाक के बाद किसी का कोई भी हक नही रहता बचों की ज़िम्मेदारी तलाक के बाद या पहले मिया बीवी पर ही फर्ज़ है और इसे न निभाने से समाजी कानून के ज़र्य दोनों को सज़ा मिलनी चाहए और जी इस फर्ज़ से इंकार करे या मुनकर हो इस से इसकी जयेदाद या कमाई पूरा तरह छीन कर बच्चों की तालीम ओर तरबियत पर खर्च की जाये

माँ बाप के ओपर बचों की सही तालीम देना और अछि परवरिश करना फर्ज़ है और इस लिहाज़ से अपनी हेसियत के मुताबिक बचों की ख्व्हहिश रखना मुनासब है धियान रखना नाहक कत्ल करना गुनाह है लेकिन पाक परवरदीगर की कुदरत के अनुसार परहेज़ के जरिया या मेडिकल साइंस के ज़र्य नाहक कत्ल करने की नोबत आने से पहले ही बचे की पेदायिश पर रोक लग सकती है पैदा करके बचों को सही परवरिश और तालीम से वर्जित रखना सख्त गुनाह में शुमार होता है ऐसी सूरत में इस माँ बाप की अवलाद को जो इनकी परवरिश की हेसियत से बाहर हे इन से लेकर कानून के अनुसार जिन की अवलाद मही अन्हे दे दी जाये और ऐसी सूरत में पैदा करने वाले माँ बाप का कोई हक इन बचों पर नही होगा लेकिन इनकी जय्ग्दाद में इन बचों का पूरा हक होगा .

आज के जमाने में शादी से पहले मर्द ओरत दोनों के खून की जांच होनी चाहए और अपने खानदान में शादी जाएज़ नहीं पाक परवरदीगर ने जहाँ इंसानों को तमाम मुख्लूक के दरमियान हाकिम मुकर्र किया है और इस इंसानी हुकुमत के दरमियान इंसानों को समाजक बन्धन में बंधा इस लिहाज़ से कुछ रिश्तों में शादी जाएज़ नही है

माँ बाप के रुतबा के बराबर ! नाना नानी दादा दादी चाचा चची , मामा मामी खला खालू फूफा फूफी सास ससर और माँ बाप के हम उमर दोस्त

भुई बहिनों के रुतबा के बराबर ! सगी बहेन भाभी साली सगे चाचा मामा खाला और फूफी की बेटी और सोतेले भाई बहेन.

अवलाद के रुतबे के बराबर ! पोता पोती नवासा नवासी बेटा बेटी भतीजा भतीजी भांजा भांजी

दुनया के कुछ लोग कहते हैं के सगे चाचा मामा खाला और फूफी के बचों के दरमियान शादी जाएज़ है लेकिन साइंसदानो की तहकीकात और कुरानी आयात के मुताबिक पहली नस्ल यानि सगे चचा मामा खाला और फूफी के बचों के दरमियान शादी जयेज़ नही है और इसकी बहुत सारी वाजुहत हैं .

खानदानी बीमारियाँ नस्ल दर नस्ल बरकरार रहती हैं .

आपस में जना की नोबत पैदा होती है और घरों में नजयेज़ जिंसी ख्यालात की गंदगी फेलती है जिस से घर का अमन व सकुन बगड़ जाता है

कमज़ोर ज़हेन के बचे पैदा होते हैं

तहज़ीब का फेलाओ नहीं होसकता

तलाक के दोरान घर के रिश्तों में दरार पैदा हो जाती है .

और कुछ लोग ये समझते हैं के आपस में शादी करने से घर की दोलत बाहर नही जाती लेकिन ये सोच सरासर गलत और बे बुनियाद है कियूनके दोलत और शोहरत का मालिक पाक परवरदीगर है और शादी में लेन देन बिलकुल नाज्येज़ है और अगर कोई ख़ुशी से दे तो ये जाएज़ होगा .

सूरा निसा 4 आयत 23
औरतें तुम पर हराम की गयी हैं तुम्हारी माएंऔर तुम्हारी बेटियाँ नवासियाँ और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी फुफियाँ और तुम्हारी ख़ालाएं और भतीजियाँ और भंजियाँ और तुम्हारी वह माएं जिन्होंने तुमको दूध पिलाया है और तुम्हारी रज़ाई बहनें और तुम्हारी बीवीयों की माँए और वह लड़कियां जो तुम्हारी गोद में परवरिश पा चुकी हो और उन औरतों से हैं जिनसे तुम हमबिस्तरी कर चुके हो हाँ अगर तुमने उन बीवियों से हमबिस्तरी न की तो अलबत्ता उननिकाह तुम पर कुछ गुनाह नहीं है और तुम्हारे सुलबी लड़को की बीवियाँ और दो बहनों से एक साथ निकाह करना मगर जो हो चुका बेशक ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (23)

सूरा अहज़ाब 33 आयत 50
ऐ नबी हमने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी उन बीवियों को हलाल कर दिया है जिनको तुम मेहर दे चुके हो और तुम्हारी उन लौंडियों को जो ख़ुदा ने तुमको माले ग़नीमत में अता की है और तुम्हारे चचा की बेटियाँ और तुम्हारी फूफियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामू की बेटियाँ और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियाँ जो तुम्हारे साथ हिजरत करके आयी हैं हलाल कर दी और हर ईमानवाली औरत अगर वह अपने को नबी को दे दें और नबी भी उससे निकाह करना चाहते हों " मगर ये हुक्म सिर्फ तुम्हारे वास्ते ख़ास है और मोमिनीन के लिए नहीं " और हमने जो कुछ मोमिनीन पर उनकी बीवियों और उनकी लौंडियों के बारे में मुक़र्रर कर दिया है हम ख़ूब जानते हैं और ताकि तुमको कोई दिक़्क़त न हो और ख़ुदा तो बड़ा बख़शने वाला मेहरबान है (50)

इन सारी कुरानी आयातों और मोलवी की तस्दीक के अनुसार किसी भी सूरत में इन आयतों को तोडने या घुमाने की कोशिश बेकार है और सगे चाचा मामा खाला और फूफी की अवलादों के दरमियान शादी जाएज़ नही हो सकती कियूनको इस आयत में सिर्फ नबी को मुखातब किया गिया है .

इस आयत में साफ तोर पर कहा गया है यर कानून सिर्फ " रसूल के लिए है उम्त के लिए नहीं " कुछ लोगों ने इस हुक्म को सिर्फ नबी की लिए जान हुब्बा करने वाली ओरत पर लागु करने की कोशिशि करते हैं लेकिन इनकी ये सोच पूरी तरह गलत है कियूनके अरबी ग्रामर के अनुसार इस आयत में कहीं भी " ओकफ व रमूज़ " नहीं हैं जिस से इसका मतलब तोड़ कर अलग अलग पेश किया जाये और इस आयत के हर हुक्म के साथ " और " लगा कर इस आयत के तसलसल को बरकरार रखा ताके इसके माने मतलब में खलल (विघ्न) वाके न हो .

ऐ नबी से शुरुआत करके इस आयत में सिर्फ नबी को ही मुखातब किया गया है रसूल पाक हजरत मुहम्मद ने अपनी फूफी ज़ाद बहेन से शादी की थी और ये कानून सिर्फ नबी पर ही लागु होता है और हजरत बीबी फातमा की शादी उन्हों ने अपने चाचा ज़ाद भाई के साथ की थी और ये इस्ल्ये के हजरत अली और बीबी फातमा का रिश्ता दोसरी नस्ल में शुमार होता है और हजरत अली रसूल पाक के सगे भाई नही थे इस

हिसाब से देखा जाये तो हजरत अली बीबी फातमा के रिश्ते में चाचा लगते थे और पहली नस्ल से ना होने के कारन ये शादी जाएज़ थी .

सुर निसा 4 की आयत 23 में बहनें कहकर तमाम बहनों को जो पहली नस्ल में शामिल हैं यानि चाचा मामू खला और फूफी के बचों के दरमियाँ शादी को ना जयेज़ करार दिया है और इस आयत में कहिं भी सिर्फ " सगी " बहन को मुखातिब नही किया गिया है और काबल घोर (चिंतन) नुक्ता ये हे के पूरी दुनिया के हर समाज में चाचा मामू खाला और फूफी के बसों के दरमियाँन भाई बहेन का ही रिश्ता मुकर्र है .

मज़मून 11

मूंह बोला रिश्ता

मुंह बोला रिश्ता बिलकुल जाएज़ नहीं हैं जबतक इसे दिल से काबुल न किया जाये और कुछ समाजक रिश्ते ऐसे हैं जो उम्र के हिसाब से काबल एहतराम होते हैं और इन्हें अमली तो पर निभा कर समाज को पाक व सुथरा रखना हर इन्सान का फर्ज़ है और इस लिहाज़ से वो सरे रिश्ते इन्सान के फर्ज़ी रिश्ते कहलाते हैं मिसाल के तोर पर अपने से बड़ी उमर वाले इन्सान को बड़े का अहतराम बड़े का दर्जा दिया जाये और अपने से छोटे उम्र के लोगों को भी अपने से छोटे रिश्ते की अहमियत देना चाहए जिसतरह इन्सना अपने अपने घरों में रिश्तों के दायरे से बंधा हुवा होता है ठीक इसी तरह हर रिश्ता के रुतबा का एहतराम करना चाहए ताके समाज की पाकीज़गी बरकरार रहे .

मज़मून 12

वसीयत का कानून

जिसतरह पाक परवरदीगर ने इंसानों को एक दुसरे के साथ जोड़ कर समाजिक बंधन से बंधा है इसीतरह इंसानों के दरमियाँन कुछ फ्रायेज़ भी मुकर्र किये हैं दुनिया में हर मुकर्र शुदा चीज़ पाक परवरदीगर की हे फिर भी इन्सान को इसका इख़्तियार दिया गया है और इस इख़्तियार को पाक परवरदीगर ने कानूनी शक्ल में बांध दिया .

पाक परवरदीगर ने हर इन्सान के लिए एक दाएरा मुकर्र कर रखा है और इस दाएरे के अनुसार वसीयत के कुछ फ्रायेज़ लागु कए गये हैं . इन्सान की अपनी कमाई होई दोलत या विरासत में मली होई दोलत चाहे जेसी भी हो कुछ भी इसके साथ नही जाती इस्ल्ये ज़रूरत के अनुसार इस दोलत को अपनी ज़िन्दगी में कानून के अनुसार बाट देना चाहिए और जीते जी समाजी असूलों के अनुसार इस्तामाल में लाना चाहए .

मिया बीवी या किसी का भी इंतकाल (म्रत्यु) हो जाये तो एक दुसरे की सारी दोलत जो जिंदा हे इसको मिलेगी फिर इन दोनों के इंतकाल के बाद अवलादों में तकसीम होगी और अव्लादों में बेटा हो या बेटी सब को बराबर का हक मिलेगा अव्लादों में अगर कोई विकलांक अवलाद हो तो इसे हिस्से के वक्त इस माज़ूर

अवलाद की जरूर्यत को पहले सामने रखते हुवे इसे स्रष्ठता (फ़ज़ीलत) दी जाये इसके बाद बाकी बचों में बराबर तकसीम की जाएगी बटवारे के वक्त मरने वाले की खवाहिश यानि वसीयत का एहतराम किया जाये और अगर वसीयत न छोड़ जाये तो मंद्रजाबाला तरीका अपनाया जाये मरने वाले के मजबूर माँ बाप भाई बहन जो परने वाले पर इन्हासर करते हों बटवारे के वक्त एक हिस्सा इनके के लिए भी मुकर्र किया जाये मरने वाला मर्द हो या ओरत अगर कोई कर्ज़ छोड़ कर जाता हे तो वोह कर्ज़ इसके कमाई करने वाली अवलाद पर होगा और अगर बचे कमाई करने वाले न हो तो कर्जे वाले से कर्ज़ माफ़ करवाने की दरख्वास्त करनी होगी और कर्ज़ देने वाले का ये फर्ज़ होगा के वोह इनकी मज़बूरी को समझते होए कर्ज़ माफ़ करदे मरने वाला मर्द हो या ओरत अपने जीते जी जो भी दोलत अपने बचों को दी थी बटवारे के वक्त इसकी भी गिनती ज़रूरी हैं जमी हुई दोलत में जेवरात मकान दुकान मशीनरी या कारोबार की पूंजी ज़मीने फर्निचेर और घरेलवे कीमती सामान को भी गिना जाये .

एक बात को ज़रूर धियन में रखे के कराए का मकान दुकान जमीन और कराए का हर वोह सामान जो मरने वाले के नाम है वोह मरने वाले की दोलत में शुमार नहीं होगी कियूनको इस जयेदाद में पूरा तरह इसके माल्क का हक है और इस ने मरने वाले को कराया के तोर पर इस्तामाल करने की इजाजत दे रखी थी इस लिहाज़ से इस कराए की दोलत को कोन इस्तामाल करेगा इस में असली माल्क की इजाजत ज़रूरी है .

सूरा बकरा 2 आयत 180 188
तुम को हुक्म दिया जाता है कि जब तुम में से किसी के सामने मौत आ खड़ी हो बशर्ते कि वह कुछ माल छोड़ जाएं तो माँ बाप और क़राबतदारों के लिए अच्छी वसीयत करें जो ख़ुदा से डरते हैं उन पर ये एक हक़ है (180)
और आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ और न माल को हुक्काम के यहाँ झोंक दो ताकि लोगों के माल में से कुछ हाथ लगे नाहक़ ख़ुर्द बुर्द कर जाओ हालाकि तुम जानते हो (188)

सूरा निसा 4 आयत 7
माँ बाप और क़राबतदारों के तरके में कुछ हिस्सा ख़ास मर्दों का है और उसी तरह माँ बाप और क़राबतदारो के तरके में कुछ हिस्सा ख़ास औरतों का भी है ख़्वाह तरका कम हो या ज़्यादा हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है (7)

पाक परवरदीगर ने इंसानी ज़रुरुत के अनुसार दोलत के इस्तेमाल का हक इन्सान को बख्शा इस लिहाज़ से दोलत के बटवारे के वक्त एक दुसरे की ज़रूरत को अहमियत देना सवाब का कम है और ये नेकी में शुमार है .

महाभारत में क्रष्ण जी का मशहूर कोल " तुम किया लेकर अये हो , तुम्हारे पास किया है , और तुम किया लेकर जावगे " समस्त इंसानों के लिए ये एक मशवरा है और एक तल्ख हकीकत भी हे जो इन्सान समझकर भी समझना नहीं चाहता मोत के बाद इन्सान के साथ इसके अमाल के सिवा कुछ नहीं जाता और इसको जानने के बावजूद इन्सान दुनयावी चीजों की हेरा फेरी से बाज़ नहीं अता .

मज़मून 13

खुर्द नोश का कानून

पाक परवरदीगर ने इंसानों को मुख्तलिफ और अलग अलग किस्म के खानों से नवाज़ा और इन्सान को पूरी तरह से इनके दिए हॉवे रजक का मज़ा उठाने का हक है और इसके तहत पाक परवरदीगर के दिए हुवे रजक को जाया किये बगेर इस्तमाल करना भी ज़रूरी है .अल्लाह ताला के दिए हुवे रिजक को इस्तमाल करते वक्त मोसम और हालात को सामने रखना चाहए .

अपनी सेहत के अनुसार खुराक की आदत डालना अक़ल्मंदी की निशानी है और अछि सेहत पाक परवरदीगर की रहमत हे और ऐसी खुराक कभी भी नही लेनी चाहए जो इन्सान की सेहत को नुकसान पहुंचाती हे और असे होश हवास से बेगाना कर दे किसी भी चीज़ का नशा पूरी तरह नजयेज़ है लेकिन अगर कोई नशीली चीज़ सेहत के लिए इस्तेमाल की जाती है तो वोह जाएज़ होगी और इसकी भी एक मुकर्र शुदा मिकदार होगी ताके वोह इन्सान को जिसमानी फयेदो ही दे .

इन्सना का हाजमा पूरा तरह से सब्जी खोरी की इजाजत देता है फर भी पाक परवरदीगर ने इन्स्नन को जानवरो का गोश्त और मछलियाँ खाने की इजाजत दी और हमारे जिस्मानी निज़ाम को सामने रखते हुवे गोश्त और मछली को पका कर खाने की सहूलत फरमाई और ये सहूलत किसी दूसरी मखलूक को अता नहीं की इसलिए लाल गोश्त जितना भी कम इस्तमाल किया जाये इतना ही इंसानी जिस्म के लिए फायदे मन्द है

दुनिया में मुख्ल्फ़ मोसम होने के कारन पाक परवरदीगर ने मुख्तलिफ किस्म के जानवर और नबातात द्नुनिया में मुकर्र कए और इंसानी ज़रूरत पूरा तरह मोसम पर निर्भर हे . जानवरों का गोश्त जिस्म को गरमी पोह्न्चाते हैं और इंक्स इस्तमाल गर्म मुल्कों में कम होंना चाहए मछली और सब्जी इन्सान को हर मोसम में फायेदा पोहचती हैं .

ज़रूरत से जियादा नहीं खाना चाहिए

खाने से पहले थोडा सा अपनी पि कर गले को तर करके खाना चाहिए

सुबा का नाश्ता जो लोग छोड़ते हैं वोह अपनी सेहत के दुश्मन हैं इसलए सुबह का नाश्ता ज़रूरी है और रात में हल्का खाना इस्तमाल करें

ज़रूरत के अनुसार लाल गोश्त इस्तामाल करना चाहिए

गाये सुवर घोडा ऊँट दुंबा भेड़ और बकरी इन सरे जानवरों का गोश्त अछि तरह पका कर इस्तमाल करें और इन्हें मारने से पहले इनकी तन्दुरस्ती का भी पूरा तरह जायेज़ा ले लें किसी भी जानवर का गोश्त खाने से बीमारी हो तो इसका कम से कम इस्तमाल करें .सूवर का गोश्त जियादा इस्तामाल करने से " tape worm " पैदा होता है जो इंसानी पेट के लिए नुक्संदाह (हानिकारक) हे इस लिहाज़ से इसे कम से कम इस्तमाल में लाना ही बेहतर है .

खाना खाने से पहले हाथ धोना ज़रूरी है और जो लोग छुरी कांटे का इस्तमाल करते हैं इनको चाहिए के खाने से पहले इनकी सफाई का पूरा खयाल रखें .

खाना बर्बाद करना सख्त गुनाह है पाक परवरदीगर की रहमत से इन्सान को खाना सुर्ख़ित रखने की बहुत सारी तरकीब नसीब हुई और जिन के पास ये सहूलत मोजूद नहीं इन्हें चाहिए के वो इतना ही खाना इस्तमाल करें ताके वो जाया न हो . रजक का मालक पाक परवरदीगर है और इस रजक को जाया करना या किसी को खला कर एहसान करना या किसी से खाना छीन लेना सख्त गुनाह है .

मज़मून 14

जिहाद का कानून

हर इन्सान के लिए जिहाद फर्ज़ है और जिहाद का मतलब है पाक परवरदीगर के बताये हुवे हक को दुनया में कायेम करने के लिए जद व जेहद करना और इसका साफ मकसद हे " गुनाह को रोकने की हर मुमकिन कोशिश "

सूरा अल्मयेदा 5 आयत 35
ऐ ईमानदारों ख़ुदा से डरते रहो और उसके क़रीब होने के ज़रिये की जुस्तजू में रहो और उसकी राह में जेहाद करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ (35)
सूरा अल्ह्ज 22 आयत 78
ख़ुदा की राह में जिहाद करो उसी नें तुमको बरगुज़ीदा किया और दीन में तुम पर किसी तरह की सख़्ती नहीं की तुम्हारे बाप इबराहीम के मजह़ब को तुम्हारा मज़हब बना दिया उसी ने तुम्हारा पहले ही से मुसलमान नाम रखा और क़ुराआन में भी ताकि रसूल तुम्हारे मुक़ाबले में गवाह बने और तुम पाबन्दी से नामज़ पढ़ा करो और ज़कात देते रहो और ख़ुदा ही को मज़बूत पकड़ो वही तुम्हारा सरपरस्त है तेा क्या अच्छा सरपरस्त है और क्या अच्छा मददगार है (78)

कुरान शरीफ की सूरा अल्ह्ज की आयत 78 में कहा गिया है " के अल्लाह ने तुमहारा नाम मुस्लमान रखा अगली किताबों में और इस कुरान में " और इस हिदायत से ये भी कहा जा सकता है के " मुस्लमान " शब्द पाक परवरदीगर की भेजी हुई किसी भी किताब में नहीं सिवाए " कुरान " में और ऐसी सूरत में " मुस्लमान " शब्द के अनुसार पाक परवरदीगर की हर किताब में नेक परहेजगार और एक अल्लाह के मानने वालों को ही कहा गया है . मुसलमान शब्द किसी खास जुबान लिबास या ग्रोह के दायरे में सिमटा हुवा नहीं हे मुसलमान शब्द पूरी तरह से नेक परहेजगार ओए एक पाक परवरदीगर पर इमान रखने वाले को कहा गया है और ये शब्द वोही इस्तमाल कर सकता है जिसके अमल में ये सारी खूबियाँ मोजूद हों पाक परवरदीगर की किताबों में अलग अलग जुबान में " मुसलमान " शब्द की पहचान दी गई है लेकिन विशेष तोर पर कुरान शरीफ के इलावाह " मुसलमान " शब्द कहीं भी नही इस्तेमाल किया गया है और पाक परवरदीगर की किताबों में नेक और परहेजगार इन्सान को गुनाहगारों और समाज को नुकसान पोहचाने वाले इंसानों के खिलाफ " जिहाद " करने का हुक्म दिया गया है पाक परवरदीगर के कानून को हक मान कर समाज में इसे नाफ़िज़ करने का हुक्म फरमाया और वोही हुक्म हकुमत वालों के ज़र्य समाज में कायेम किया जाता हे ताके समाज में अमन व सकुन कायेम हो ये बात बिलकुल गलत है के "मुसलमान " शब्द किसी खास ग्रोह के लिए मखसूस है और दुनिया के किसी भी कोने के नेक और परहेजगार इन्सान जो मुहब्बत और इंसानियत को कायेम करने वाले हैं इनको मुसलमान का ख़िताब दिया जा सकता हो और अरबी जुबान के अनुसार नेक परहेजगार और इमान वाले इंसानों को ही मुसलमान का ख़िताब दिया गया है .

सूरा बकरा 2 आयत 216

तुम पर जंग फर्ज़ किया गया अगरचे तुम पर शाक़ ज़रुर है और अजब नहीं कि तुम किसी चीज़ को नापसन्द करो हालाकि वह तुम्हारे हक़ में बेहतर हो और अजब नहीं कि तुम किसी चीज़ को पसन्द करो हालाकि वह तुम्हारे हक़ में बुरी हो और ख़ुदा जानता ही है मगर तुम नही जानते हो (216)

इन्सान के सामने इस बात का साफ होना ज़रूरी है के कोन सा रास्ता पाक परवरदीगर का है ? पाक परवरदीगर ने कुरान शरीफ में हर रसूल और इनकी किताब की मंजूरी दी (सूरा बकरा आयत 136 और सूरा इमरान आयत 84) और अल्लह ने यहाँ तक फरमाया के जो लोग पाक परवरदीगर के भेजे हुवे रसूलों पर इमांन नहीं लाते (सूरा निसा आयत150 /151 /152) वोही ठीक ठीक काफ़िर हैं तो इस लिहाज़ से किसी भी खास उमति या किसी खास रसूल के मानने वालों के खिलाफ लड़ाई करना या इन्हें कत्ल करना या बला वजह इनका नुकसान करना कभी भी जिहाद नही हो सकता पाक परवरदीगर ने कुरान शरीफ और दूसरी किताबों में सिर्फ चंद रसूलों का जिक्र और अनके तजुर्बात का जिक्र फ़रमाया और ये इसलिए के इंसानों को इस से सबक हासिल हो पाक परवरदीगर ने कुरान में जिन रसूलों का जकर फरमाया इस पर और जिन का जकर नही फरमाया उन पर और इनके बुलाये हुवे पाक परवरदीगर के मुख्तलिफ नामों पर इमान लाने का हुक्म फरमाया ताके इंसानों के दरमियान जो मज़हबी ख़यालात के इख्लाफात मोजूद हे वोह मिट जाएँ और इस लिए कुरान शरीफ को इंसानों के दरमियाँन फेसला और तमाम मुखलूक के लिए रहमत कहा गिया है .

सूरा मायेदा 5 आयत 32 33

इसी सबब से तो हमने बनी इसराईल पर वाजिब कर दिया था कि जो श्शख़्स किसी को न जान के बदले में और न मुल्क में फ़साद फैलाने की सज़ा में क़त्ल कर डालेगा तो गोया उसने सब लोगों को क़त्ल कर डाला और जिसने एक आदमी को जिला दिया तो गोया उसने सब लोगों को जिला लिया और उन के पास तो हमारे पैग़म्बर रौशन मौजिज़े लेकर आ चुके हैं फिर उसके बाद भी यक़ीनन उसमें से बहुतेरे ज़मीन पर ज़्यादतिया करते रहे (32)

जो लोग ख़ुदा और उसके रसूल से लड़ते भिड़ते हैं और फ़साद फैलाने की ग़रज़ से मुल्को दौड़ते फिरते हैं उनकी सज़ा बस यही है कि या तो मार डाले जाए या उन्हें सूली दे दी जाए या उनके एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पॉव काट डाले जाए या उन्हें सरज़मीन से शहर बदर कर दिया जाए यह रूसवाई तो उनकी दुनिया में हुयी और फिर आख़ेरत में तो उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब ही है (33)

इन आयातों से साफ ज़ाहिर होता हे के रसूलों के नाम पर या इनके मानने वालों के साथ फसाद करना या जिहाद के नाम पर बेगुनाहों को कत्ल करना सख्त से सख्त गुनाह है और इसकी सज़ा हे के इनके एक तरफ के हाथ और दूसरी तरफ के पैर काटे जाएँ या इन्हें कत्ल कर दिया जाये (कुरान के अनुसार)

जिहाद सिर्फ पाक परवरदीगर के कानून तोड़ने वालों के खिलाफ ही जाएज़ है और ये कानून साफ तोर पर मोहब्बत नेकी परहेज़गारी इंसानियत और अमन व सुकून बिगड़ने वालों के खिलाफ लागु किया जाये इन्सान को अपने ज़ाती गंदे न्फ्सियती ख्यालात को काबू में रखना भी जिहाद है इसलिए पाक परवरदीगर के इस कानून को पूरी तरह से अपनाकर और असे अपने आप से शुरू करते हुवे समाज और सारी दुनिया में लागु करने की कोशिश (जद इ जहद) करें

कुरान शरीफ के अनुसार दुनिया को सिर्फ दो ही ग्रोह में बाटे जा सकता है एक अच्छा और दूसरा बुरा और इस्ल्ये सूरा बकरा की आयत 216 में पाक परवरदीगर ने हक की पहचान का हुक्म फरमाया और इंसानों को सोचने समझने की सलाहियत अता फरमा कर इन्सान के समाने दो राहे मुकर्र कर दी और जिहाद सिर्फ और सिर्फ बुराई के खिलाफ ही जाएज़ है .

सूरा अल्ब्ल्द 90 आयत 10

और हम ने इसे दो रास्ते देखाए (10)

मज़मून 15

साइंस और मज़हब

पाक परवरदीगर की किताबों की तरह सयेंस भी अल्लाह की कुदरत है और इंसानों ने अपनी सालों की मेहनत मुश्क्त तहकीकात और पाक परवरदीगर की मरजी से सयेंसी मालूमात हासिल की और बला वास्ता तोर पर हम यह कह सकते हैं के पाक परवरदीगर हम इंसानों को अहिस्ता अहिस्ता सच्चाई की तलाश में कामयाबी अता फरमा रहे हैं ताके इन्सान को हकीक़त की जानकारी मले और पाक परवरदीगर की दी हुई हर सहूलत और नेमत का फायेदा और लुत्फ़ उठा सके और इसे अपनी सहूलत के लिए इस्तामाल करे पाक परवरदीगर की रहमत और साएन्सदानों की कड़ी मेहनत का नतीजो इंसानों के सामने है .

पाक परवरदीगर सदियों से इंसानों को हर कसम की असयेश के साजो सामान मोहिया करवाते अरेहे हैं मज़हबी किताबों का हर पहलु हक के बगेर अधुरा हैं और जो इन्सान किताबों की हकानिय्त को इंकार करते हैं और तरह तरह की बातें और कहानियों के ज़र्य किताबों के रुतबा को तोलने की कोशिश करते हैं वोह बे बुनियाद गेर अकली और पूरी तरह कुसंस्कार में शुमार है और साएन्स भी हक की तलाश और

साबुत के बगेर अधूरी है में ने भी इसी तरह हक को तलाश करते हुवे मज़हबी किताबों की कुछ बातों को जिनकी गहराई साएन्स की हकीकत को तस्लीम करती है असे बियान करना ज़रूरी समझता हूँ .

सूरा बकरा 2 आयत 29
वही तो वह है जिसने ज़मीन की कुल चीज़ों को पैदा किया फिर आसमान की तरफ़ मुतावज्जेह हुआ तो सात आसमान हमवार बना दिए और वह हर चीज़ से वाक़िफ है (29)

नीचे ज़मीन से असमान की खली जगह तक पाक परवरदीगर ने मुख्तलिफ कसम की गेसों के ज़र्य इन्सानों को तरह तरह से सहूलत और सुरखषा अता फरमाई और साएन्सदानों ने इसे 5 हिस्सों में तकसीम किया है

) एक से 10 kilometer तक Tropo sphere

(2) 32 से 80 Kilometer तक Strato Sphere

80 से 640 kilometer तक Ozone Sphere

640 से 1000 KILO METER तक Ionos Sphere

1000 से जियादा KILOMETER तक Exosphere

इन 5 फिज़ाई हिस्सों को इनकी अलामत की बुनयाद पर और भी दो हिस्सों में तकसीम कर सकते हैं जहाँ पर ज़मीन की कशिश खत्म होती है वहां पर हरारत का अमली तुगयेर हे और इसके जरिया दुमदार सितारे दुनिया से दुरी का फासला बरकरार रखते हैं और इस हरारत के अनुसार फ़िज़ा तेहती को तोलने से सात असमान मिलेंगे इसलए इस हिसाब से सात किसम की तेहों का जिक्र कुरान शरीफ में फरमाया गया है और हर तह के ज़र्य मुख्तलिफ तरीकों से दुनिया की हिफाजत फरमाई .

सूरा अल्कह्फ़ 18 आयत 17

कि जब सूरज निकलता है तो देखेगा कि वह उनके ग़ार से दाहिनी तरफ झुक कर निकलता है और जब ग़ुरुब होता है तो उनसे बायीं तरफ कतरा जाता है और वह लोग ग़ार के अन्दर एक वसीइ जगह में हैं ये ख़ुदा की निशानियों में से है जिसको हिदायत करे वही हिदायत याफ्ता है और जिस को गुमराह करे तो फिर उसका कोई रहनुमा हरगिज़ न पाओगे (17)

कुरान शरीफ की इस आयत पर गोर करें दुनिया की शक्ल जो थोड़ी सी अंडे की तरह है और वोह अपने मदार पर सूरज के गर्द घूम रही है और अपने महवर पर भी घूम रही है और यही है दिन और रात की बुनियाद दुनिया की बनावट अंडे जेसी होने की वजह से सूरज के डूबने और निकलते वक्त सूरज के मुकाम का हेर फेर होता है और इस आयत में गार को मदार के तोर पर पेश किआ हे और कुशदाह जगह का मतलब " Solar System " यानि सूरज और स्यारों के बिच की खाली जगह और इस खली जगह की बदोलत सूरज में पैदा होने वाले "Atomic Reaction" की आवाज़ दुनया तक नहीं पोंचती कियूनके आवाज़ को चलने के लिए किसी ज़र्य की ज़रूरत होती है

सूरज और दुनिया के दरमियान खाली जगह में कोई भी ज़र्य आवाज़ को नहीं मिलता और रौशनी को चलने के लिए किसी ज़र्य की ज़रूरत नही होती इसलिए सूरज में लगातार " Atomic Expolotion " की रौशनी तो दुनिया तक पुहोंचती हे लेकिन आवाज़ नही और यही पाक परवरदीगर की कुदरत है के दुनिया की सुरख्षा के लिए सूरज और स्यारों के दरमियान खाली जगह मुकर्रर रखी .

सूरा अंबिया 21 आयत 33
और वही वह है जिसने रात और दिन और आफ़ताब और माहताब को पैदा किया कि सब के सब एक आसमान में पैर कर चक्कर लगा रहे हैं (33)

सारे स्यारे अपने अपने मदार पर निज़ाम शम्सी के अनुसार सूरज के गर्द घूम रहे हैं और चाँद अपने मदार पर दुनिया के साथ शामिल हे और कोई भी एक दुसरे के साथ नही टकराता यही कुदरती रद व अम्ल की सिलसला बर्हामंड की शुरुआत से चलता अरहा है और यही कुदरत पाक परवरदीगर की बनाई हुई बे मिसाल निशानियों में से है .

इस आयत के अनुसार जिस घेरे का जक्र किया जा रहा है सयेन्सी जुबान में इसे " ऑर्बिट " यानि मदार कहते है और हर सियारा अपने अपने मदार में रह कर सूरज के गर्द घूम रहे हैं और दुनिया भी अपने आप पर घूमते हुवे और अपने मदार के तहत सूरज के गर्द घूम रही है यानि रात और दिन की वजह हे दुनिया के अपने अप पर घूमना यानि दुनिया का जो हिस्सा सूरज के सामने होता हे वहां दिन होता है और जो हिस्सा सामने नहीं होता वहां अँधेरा यानि रात होती है और इस तरह गर्दिश में रहते हुवे दुनिया एक साल में सूरज का पूरा चक्र लगाती है जिसकी वजह से दुनिया में तरह तरह के मोसम का लुत्फ़ इन्सान उठता है . सवाल ये हे के वोह कोण सी ताकत हे जो भारी भरकम दुनिया को या सारे स्यारों को इसतरह से मुकरर कर रखा है और कोयूं ? सूरज के खानदान में अभी तक सिर्फ दुनिया में ही जानदारों का वजूद इंसानी तहकीकात के दायरे में आया है और जानदारों में सब से उम्दाह जानदार है इन्सान और इस इंसानी नाम की मखलूक को मुखतलिफ रंग व रूप से सजाने के लिए पाक परवरदीगर ने सारी कुदरत को इस्तमाल किया ताके इंसानी ज़िन्दगी वीरान और फीकी न हो . दुनया के साथ चाँद को मुक़र्र कर के दुनिया के तवाजन को बरकरार किया गया और ये इस्ल्ये के दुनिया की बनावट पूरी तरह से गोल नही है .

सूरा अंबिया 21 आयत 44

बल्कि हम ही से उनको और उनके बुज़ुर्गों को आराम व चैन रहा यहाँ तक कि उनकी उमरें बढ़ गई तो फिर क्या ये लोग नहीं देखते कि हम रूए ज़मीन को चारों तरफ से क़ब्ज़ा करते और उसको फतेह करते चले आते हैं तो क्या ग़ालिब और वर हैं (44)

आलूदगी की वजह से नार्थ पोल और साउथ पोल की बर्फ अहिस्ते अहिस्ते पिघल रही है और सुमंद्र का पानी बढ़ रहा है जिसके नतीजा में जमीन के किनारे घट रहे हैं और ओजोन लेयर के फटने की वजह से दुनिया की हरारत में बढ़ोतरी हो रही है और यही वजह हे नार्थ पोल और साउथ पोल की बर्फ पिघलने की और इस आयत के अनुसार पाक परवरदीगर दुनिया के किनारे घटाते आरहे हैं.

सूरा इनाम 6 आयत 96 97
गुठली और दाने को चीर है वही मुर्दे में से ज़िन्दे को निकालता है और वही ज़िन्दा से मुर्दे को निकालने वाला है वही तुम्हारा ख़ुदा है फिर तुम किधर बहके जा रहे हो (96)
उसी के लिए सुबह की पौ फटी और उसी ने आराम के लिए रात और हिसाब के लिए सूरज और चाँद बनाए ये ख़ुदाए ग़ालिब व दाना के मुक़र्रर किए हुए किरदा हैं (97)

चाँद सूरज सितारे और स्यारे किसी न किसी तरिके से इन्सान की मदद करते हैं और इन स्यारों के जरिया इंसानों को राह निशान नसीब हुवा तमाम मखलूक रात को आराम करती है सिवाए कुछ मखलूक के और दिन में जागती है ऐसे भी कुछ मुख्लूक हे जो रात को जागती है लेकिन इनकी तादाद कम है रात में असमान की खूबसूरती इंसानी नज़रों को लुभाती है चाँद सितारों से आरास्ता किया गया असमान पाक परवरदीगर के वजूद का यकीन दिलाती है

इस आयत में पाक परवरदीगर ने सूरज और चाँद को हिसाब से रखने की बात की है और दुनिया की शक्ल गोल न होने की वजह से चाँद को बग़ल में मुकर्र किया और सूरज को इस हिसाब से रखा के इसकी तपश से दुनिया को फायेदा पोहचे दुनिया सूरज से न जियादा दूर और न जियादा करीब .

इस सिलसले की कुछ आयतें जो पाक परवरदीगर के वजूद को समझने के लिए हैं .

सूरा अल्नाह्ल 16 आयत 21
उसी ने तुम्हारे वास्ते रात को और दिन को और सूरज और चाँद को तुम्हारा ताबेए बना दिया है और सितारे भी उसी के हुक्म से फरमाबरदार हैं कुछ शक ही नहीं कि समझदार लोगों के वास्ते यक़ीनन बहुत सी निशानियाँ हैं (21)

सूरा यासीन 36 आयत 37 38 39 40
और मेरी क़ुदरत की एक निशानी रात है जिससे हम दिन को खींच कर निकाल लेते हैं तो उस वक़्त ये लोग अँधेरे में रह जाते हैं (37)
और आफताब है जो अपने एक ठिकाने पर चल रहा है ये ग़ालिब वाक़िफ का अन्दाज़ा है (38)
और हमने चाँद के लिए मंज़िलें मुक़र्रर कर दीं हैं यहाँ तक कि हिर फिर के खजूर की पुरानी टहनी का सा हो जाता है (39)
न तो आफताब ही से ये बन पड़ता है कि वह माहताब को जा ले और न रात ही दिन से आगे बढ़ सकती है हर एक अपने-अपने आसमान में चक्कर लगा रहें हैं (40)

दुनिया की शक्ल कुर्दी हे यानी बेज्वी और सयेंस्दानों ने असे साबित कर दिया है और इनकी तहकीकात के अनुसार अलग अलग तुल का पता चलता हैं जेसे के दुनिया का अस्तावानी घेरा 24897 मील और पोलर घेरा इस से 83 मील कम है और इसका स्त्वाई कतर 7926 मील है और इसका पोलार घेरा इस से 26 मील कम है और इस बुनियाद पर कहा जा सकता है दुनिया पूरा तरह से गोल नही हैं और दुनिया की इस शक्ल को Geoids कहते हैं . दुनिया के अंदर के तवाजन को बरकरार रखने के लिए चाँद मुकर्र किया गया है जो अपने महवर पर दुनिया के गर्द घूम रहा है .

सुरज से दुनिया का दूरी 93000000 मील हैं और दुनिया के फिजाई अस्त्र यानि परत की वजह से सूरज की गर्मी जमीन के लिए जिनती ज़रूरत हे इतनी ही असे मिलती हैं

सूरज की बहरी हरारत 6000 centigrade हे और अन्दर की हरारत 20 million centigrade हे और अन्दर की हरारत 20 million centigrade degree हे और सूरज दुनिया से तीन लाख गुना बड़ा है पाक परवरदीगर की कुदरत से दुनिया और सूरज के दरमियान इतना ही फासला मुकर्र है के तमाम मुख्लूक सूरज की तपश से मुस्ताफीज़ (लाभानिवत) हों और कुरानी आयतों के अनुसार चाँद और सूरज किसी न किसी हिसाब से जुड़े हुवे हैं .

सूरा रहमान 55 आयत 35 37
तुम दोनो पर आग का सब्ज़ शोला और सियाह धुआँ छोड़ दिया जाएगा तो तुम दोनों रोक नहीं सकोगे (35)
फिर जब आसमान फट कर तेल की तरह लाल हो जाऐगा जेसे के सुर्ख नरी (37)

कुरान शरीफ की इन आयतों से ओजोन लेयर (ozone layer) की साफ तस्दीक होती है और आलूदगी की वजह से ओजोन लेयर की दरार के बाद किया नतीजा होने वाला है इस का इशारह भी हम लोगों को मिलता है इस आलूदगी की वजह हे chlorofloro carbons और freons 12 केमिकल का जियादा इस्तमाल येह केमीकल ठंडा करने वाली मशीन और आएरो क्राफ्ट इंडस्ट्रीज (Aircrafts) में ज़ियदा इस्तमाल होता है

ओजोन लेयर ज़मीन से 20 किलो मीटर से लेकर 250 किलो मीटर की ऊँचाई तक फेला हुवा एक अस्तर हे जो कम्बल की तरह दुनिया को सूरज से निकली हुई " Ultra Violet Rays " वाली तेज़ रौशनी को ज़मीन तक पोहंचने नही देती और दुनिया के अन्दर की गेस की मिकदार को बरकरार रखती है .

कुरान शरीफ की इस आयत में कयामत के वक्त असमान के फटने का जकर ओजोन लेयर में दरार की तरफ इशारा है और ओजोन लेयर के दरार के बाद सूरज से निकली हुई तेज़ रौशनी जमीन पर पोहंच कर सारी चीजों को जला कर राख कर देगी यहाँ तक के चीजें जलने के बाद जो धुवां निकलता है इस को भी जला देगी और बे धुवां की कलि आग नजर आयेगी और गेस के जलने की वजह से असमान का रंग सुर्ख गुलाब की तरह हो जायेगा सयेंसदानों ने भी इसे साबित कर दिया हे के दुनिया की अनदुरोनी आलूदगी की वजह से ओजोन लेयर अहिस्ता अहिस्ता फट रहा है और दुनिया की हरारत धेरे धेरे बढ़ रही है .

सूरा कमर 54 आयत 1
क़यामत क़रीब आ गयी और चाँद दो टुकड़े हो गया (1)

सूरा कयामत 75 आयत 9

और सूरज और चाँद इकट्ठा कर दिए जाएँगे (9)

ओजोन लेयर की दरार की वजह से कयामत के वक्त दुनिया की हरारत इस हद तक बढ़ जाएगी के इसका असर चाँद पर भी पड़ेगा और रद व अम्ल की वजह से चाँद टुकड़ों में बट जायेगा .

काबिले ग़ोर (चिंतन करना) ! इस आयत में क़यामत का ज़िक्र फरमा कर पाक परवरदीगर ने कयामत के वक्त चाँद की हालत की निशंदाही की हे और इस आयत के साथ जो कहानी जुडी हुई है ओस्वक्त कयामत करीब नही थी और मिजुदा चाँद के शक होने का कोई सबूत भी नही मिलता आज इन्सान के कदम चाँद पर पोहंच गये हैं और इंसानों का तह्कीकी इल्म ये साबित करता है के इस आयत के साथ जुडी हुई कहानी गेर अकली और गेर साबित शुदा है .

सूरा नूह 71 आयत 14 15 16 17 18
हालाँकि उसी ने तुमको तरह तरह से पैदा किया (14)
क्या तुमने ग़ौर नहीं किया कि ख़ुदा ने सात आसमान ऊपर तलें क्यों कर बनाए (15)
और उसी ने उसमें चाँद को नूर बनाया और सूरज को रौशन चिराग़ बना दिया (16)
और ख़ुदा ही तुमको ज़मीन से पैदा किया (17)
फिर तुमको उसी में दोबारा ले जाएगा और निकाल कर खड़ा करेगा (18)

सूरा ताहा 20 आयत 55

हमने इसी ज़मीन से तुम को पैदा किया और इसमें लौटा कर लाएँगे और उसी से दूसरी बार तुमको निकाल खड़ा करेंगे (55)

चाँद की अपनी कोई रौशनी नही होती वोह सूरज की रौशनी से रोशन है और कुरान शरीफ की इस आयत में सूरज को चराग कहा गिया है और इस चिराग की रौशनी से चाँद के रोशन होने की तफसील बियान की गुई है इन्सान इस दुनिया के मुरकाबत (ingrediant) से पैदा होता है जिस तरह अलग अलग कसम के पेड़ पोदे ज़मीनी जुज़ निकाल कर जेते हैं ठीक इसी तरह इन्सान भी बला वास्ता तोर पर ज़मीनी जुज़ का ही नतीजा है

जिसतरह हर ज़मीनी मुख्लूक की पेदायेश ज़मीनी अजज़ा से होती है इसी तरह मोत के बाद हर मुख्लूक ज़मीन में समा जाती है और दुनिया के जियादा से जियादा लोग मोत के बाद जिस्म को जलाते हैं या दफनाते हैं दोनों सूरतों में इंसानी जिस्म को मट्टी ही होजाना हैं .

सूरा अंबिया 21 आयत 30

क्या उन लोगों ने इस बात पर ग़ौर नहीं किया कि आसमान और ज़मीन दोनों बनद थे तो हमने दोनों को खोल दिया और हम ही ने जानदार चीज़ को पानी से पैदा किया इस पर भी ये लोग ईमान न लाएँगे (30)

सूरा अलनूर 24 आयत 45
और ख़ुदा ही ने तमाम ज़मीन पर चलने वाले को पानी से पैदा किया उनमें से बाज़ तो ऐसे हैं जो अपने पेट के बल चलते हैं और बाज़ उनमें से ऐसे हैं जो दो पाँव पर चलते हैं और बाज़ उनमें से ऐसे हैं जो चार पावों पर चलते हैं- ख़ुदा जो चाहता है पैदा करता है इसमें शक नहीं कि ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (45)

सूरा निसा 4 आयत 1
ऐ लोगों अपने पालने वाले से डरो जिसने तुम सबको एक जान से पैदा किया और उनकी बाकी मिट्टी से उनकी बीवी को पैदा किया और उन्हीं दो से बहुत से मर्द और औरतें दुनिया में फैला दिये और उस ख़ुदा से डरो जिसके वसीले से आपस में एक दूसरे से सवाल करते हो और क़तए रहम से भी डरो बेशक ख़ुदा तुम्हारी देखभाल करने वाला है (1)

सूरा अलएरफ 7 आयत 11
हालाकि इसमें तो शक ही नहीं कि हमने तुम्हारे बाप आदम को पैदा किया फिर तुम्हारी सूरते बनायीं फिर हमनें फ़रिष्तों से कहा कि तुम सब के सब आदम को सजदा करो तो सब के सब झुक पड़े मगर शैतान कि वह सजदा करने वालों में शामिल न हुआ। (11)

सूरा अबस 80 आयत 19 20

एक नुत्फा से पैदा किया फिर अंदाजो पर रखा (19)
फिर इसका रास्ता आसन किया (20)

पाक परवरदीगर ने साफ और सधे तोर पर इन्सान को पानी की बूंद से पैदा फरमाने का ज़िक्र किया और साएन्सदानों की तहकीकात भी ये साबित करती है के सारी मखलूक पानी से पैदा हुई है .कुरान शरीफ में अदम और हवा को जन्नत से उतरने का ज़िक्र है तो यकीनन दुनिया में आने से पहले वोह लोग जन्नत में थे तो जन्नत में इनका वजूद किया था ? इंसानों का या फरिश्तों का ? पाक परवरदीगर के कानून के अनुसार इन्सान का जिस्मानी वजूद जन्नत का हक नही रखता इन्सान का जिस्म दुनिया में बना है और दुनया में फना होजाता हैं इसलिए हजरत अदम और हवा का जिस्मानी वजूद दुनिया में कायेम हुवा था और इन दोनों के मिलने से काएनात की सारी मुख्लूक की पेदायेश हुई ,

काएनात की सारी मुख्लूक की बुनियाद हे पानी और ये पानी दो गेसों ह्यद्रोजिन (hydrogyn) और ओक्सिजिन (oxygen) से मिलकर बनते हैं और पाक परवरदीगर ने इन दोनों गेसों को फ़रिश्तो को अदम और हवा के नाम से जननत से दुनिया में उतारा ताके मुख्लूक की पेदायेश हो ये नामुमकीन हे के इन्सान की कोख से दूसरी मुख्लूक और दूसरी मुख्लूक से इन्सान पैदा हो और ये इसलिए के हर मुख्लूक का " जेनेटिक करेक्टर " अलग अलग होता है और बढ़ोतरी नस्ल के लिए अंग की तब्दिल्याँ भी अलग अलग हैं .

बुनियादी तोर पर हर मुख्लूक़ पानी से पैदा हुई है और लाखों करोड़ों सालों के रद व अम्ल , मोसम के तुगयेर (बदलाव) और क़ुदरती गर्दिशों के दोरान हर मुख्लूक़ के खद व खाल और बनावट मुख्तलिफ जुग्राफाई (geographi) हालत के तहत होती है तो इस लिहाज़ से हम कह सकते हैं के अदम और हवा का जिस्मानी वजूद इंसानी नही था .

दुनिया में सब से पहली एक खुलिया वाली जान वजूद में औई और इसकी बुन्याद है पानी . जिसतरह इट पर इट जमा कर इमारत की शक्ल इख़्तियार करती है ठीक इसी तरह एक के साथ एक खुलिया मिलकर मुख्लूक की शक्ल इख़्तियार करती है और इस रद व अम्ल के दोरान मुख्तलिफ जुग्रफाई (geography) हालत के तहत अलग अलग कसम की मुख्लूक वजूद में औई .

एक खुलिया वाली जान "मयेकरो स्कोप "(microscrope) से देखि जा सकती है और वोही एक खुलिया वाली जान मुख्तलिफ मराहल से गुजरते हुवे मुख्लूक की शक्ल वजूद में औई और इसका बदलाव का सिलसिला अभी तक जारी है उधारन स्वरुप जिसतरह इन्सान की लम्बाई छोटी हिती जा रही है और इसकी उम्र भी दिन ब दिन कम होती जारही हैं और इस बदलाव के दोरान इन्सान का सर बड़ा और जिस्म छोटा होता जा रहा है .

सूरा अल्हिजर 15 आयत 26

हम ने इन्सान को काली और सड़ी हुई खनखनाती मट्टी से पैदा किया. (26)

सूरा अल्हज 22 आयत 5

लोगों अगर तुमको दोबारा जी उठने में किसी तरह का शक है तो इसमें शक नहीं कि हमने तुम्हें शुरू-शुरू मिट्टी से उसके बाद नुत्फे से उसके बाद जमे हुए ख़ून से फिर उस लोथड़े से जो पूरा हो या अधूरा हो पैदा किया ताकि तुम पर ज़ाहिर करना क्या मुश्किल है और हम औरतों के पेट में जिस को चाहते हैं एक मुद्दत मुअय्यन तक ठहरा रखते हैं फिर तुमको बच्चा बनाकर निकालते हैं फिर तुम अपनी जवानी को पहुँचो और तुममें से कुछ लोग तो ऐसे हैं जो मर जाते हैं और तुम में से कुछ लोग ऐसे हैं जो नाकारा ज़िन्दगी बुढ़ापे तक फेर लाए जाते हैं ताकि समझने के बाद कुछ भी न समझ सकें और तो ज़मीन को मुर्दा देख रहा है फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो लहलहाने और उभरने लगती है और हर तरह की ख़ुशनुमा चीज़ें उगती है तो ये क़ुदरत के तमाशे इसलिए दिखाते हैं ताकि तुम जानो (5)

सूरा मोमिन 40 आयत 67
वही वह ख़ुदा है जिसने तुमको पहले मिटटी से पैदा किया फिर नुत्फे से, फिर जमे हुए ख़ून फिर तुमको बच्चा बनाकर निकलता है फिर तुम अपनी जवानी को पहुँचो फिर तुममें से कोई ऐसा भी है जो पहले मर जाता है ग़रज़ की तुम मुकर्रर वक़्त तक पहुँच जाओ (67)

इन आयतों में पाक परवरदीगर ने इन्सान को खनखनाती मट्टी पानी की बूंद खून की फटक और बू दार गारे से बनाने का जकर किया है और अज की सयेंसे ने इंसानों के जिस्म में कैल्सियम फॉस्फोरस पोटाशियम अयेरन के अलावाह और भी बहुत सारे अनसार का पता लगाया हैं और ये सारे अनसार मट्टी में सुखी हालत में पाए जाते हैं और खुराक के ज़र्य इन्सान के जिस्म में पोह्चते हैं इंसानी जिस्म का ताक्रीबन्न एक तिहाई हिस्सा पानी से भरा हुवा हैं और वोह पानी खून और खुलिया में जियादा तर मोजूद होता हैं और इसके साथ साथ कुछ अनासर भी पानी के हस्सन में मोजूद हैं सेल के अन्दर cytoplasm Nucleoplasm की शक्ल में पानी के हिस्से भी मोजूद हैं वेसे ही खून के अन्दर केल्शियम, फास्फोरस, मेग्नेजय्म युर्य आयरन और भी कुछ अनासर अलग अलग मिकदार में मोजूद हैं और बाकी हडियाँ और जिस्म का जो सख्त हिससा वोह भी

इन सारे अनासिर से बनते हैं और ये सारे अनासिर अगर मट्टी से निकाले जायें तो इन में बू मिलती है (आयरन को छोड़ कर) और ये सारी बातें जेसे के खनखनाती मिटटी पानी की बूंद बूदार गारा जो पाक परवरदीगर ने कुरान शरीफ में बताया वोह सयेंस की बातें हैं कहानियों का ढेर नहीं और इन सब बातों का साइंटिफिक (scientific) मतलब हैं .

मज़मून 16

मोत के बाद के हालात

इन्सान के पास मोत के बाद के हालात के बारे मं कोई भी मुकमल तह्कीकी जानकारी नही है सिर्फ किताबों के ज़र्य ही मोत के बाद के हालात की जानकारी मिलती है और इस दरयाफ्त को किताबिं के ज़र्य इनसानों तक पोहचाने का मकसद हे इन्सान को सारी उम्र नेकी की राह पर चलाना हे मज़हबी किताब में " जननत व जहुन्म " का ज़िक्र है जननत की रग़ब्त देकर और दोज़ख के अजाब का खोफ दला कर पाक परवरदीगर ने इंसानों को नेक रस्ते पर चलने की तर्गेब (प्रलोभन/फुसलाना) दी और असे चुनने का इख़्तियार भी पाक परवरदीगर ने इन्सान को दिया

मज़हबी किताबों के अनुसार दुनयावी ज़िन्दगी में इन्सान के नेक अमल असे जननत नसीब फरमाते हैं इस बात का कोई सबूत तो नहीं हे लेकिन इस बात पर बगेर सबूत के इमान लाना ही इंसानी समाज के लिए बेहतर है और पाक परवरदीगर का बनाया हुवा हर कानून एक ही मकसद पर आकर खत्म हो जाता है और वोह है इन्सान के नेक अमल और इसकी बदोलत सकून वाली ज़िन्दगी.मोत के बाद वाली ज़िन्दगी की तहकीकात ला हासिल है लेकिन दिनी तोर पर देखा जाये तो पाक परवरदीगर ने अपने थोड़े से राज़ ही इन्सान को नसीब फरमाए इस लिहाज़ से मोत के बाद के हालात के बारे में मज़हबी किताबों में अलग लग कसम की बातें (कहानियाँ) मिलती हैं

यहाँ इस बात को बताना ज़रूरी है के मोत के बाद इंसानी जिस्म का कोई वजूद नही रहता चाहे इसे जलाएं या द्फ्नाएँ मट्टी से बना हुवा जसम मट्टी में समा जाता है और आत्मा यानि रूह की मोत नही होती और वोही जनत या जहन्नुम की हकदार है .

सयेंस की तहकीकात इंसानी जिस्म के साथ साथ इंसानी वजूद के खात्मे की हिमायत करता है लेकिन मोत के बाद के हालात के बारे में अलग अलग किस्म के ख्यालात दुनिया में मोजूद हिने की वजह से इन्सान के सामने मोत के बाद के हालात का कोई ठोस सबूत नही है और दिनी तोर पर ये कहा जा सकता है के मोत के बाद की ज़िन्दगी के बारे में पाक परवरदीगर ने अलग लग खयालात दुनिया में मुकर्र करके इन्सान को अपने राज़ से वंचत रखा और ये सन्देश दिया के दुनयावी ज़िन्दगी के नेक अमल ही इस का नसब अल ऐन हैं .

निबंध 17

इबादत का तारिका और दीन

पाक परवरदीगर इन्सान की इबादत का मोहताज नही जेसे के भगवत गीता में कहा गुया है इन्सान किसी न किसी ज़रुरत या ख्वाहिश के तहत चाहे वोह जननत की ही कियूं न हो इबादत करते हैं फिर भी जो ज्ञानी यानी इल्म वाले इन्सान जिन्हें हक की पहचान हे वोह अपने अम्ल के ज़र्य इबादत कायेम करते है और ऐसे इन्सान कसी तोर तारिका या किसी बन्द्श के मोहताज नही हैं .

गीता अधाये 7 श्लोक 15 16 17

जो पूरा तरह बेवकूफ हैं जो इन्सान में कमतर हैं जिन का ज्ञान माया का शिकार हो गया है और जी गुनाहगारों की नास्त्क प्रक्रति को अपनाने वाले हैं ऐसे पापी गुनाहगार मेरो शरण नही लेते (15)

चार तरह के इन्सान मेरी भगती करते हैं यानि मुसीबत जदाह दोलत की ख्वाहिश रखने वाले इलम की तलाश करने वाले और गायनी यानि अलीम (विद्वान्) (16)

इन में से जो ज्ञानी हे और जो शुद्ध भगती में लगा रहता है वो सब से श्रेष्ट है कियूनके में असे प्यारा हूँ और वोह मुझे पियारा (17)

गुनाहगार इसनान यानि असुर जो पाक परवरदीगर के वजूद को ठुकरा कर और अपनी खुवाहिशत में अंधे हो कर इन्सान और इनसनिय्त को नुकसान पोहंचा कर समाज में ब्दस्कुनी फिलाते हैं इस किस्म का इनसन किसी भी सूरत में नेक यानि इमांन वाला नही हो सकता चाहे वोह कितना ही इबादत का ढोंग कियूं ना रचये .

ज्ञानी इन्सान जो पाक परवरदीगर के हक को पहचान लेते हैं इनके लिए इबादत का तरीका कुछ माने नही रखता और हक तो ये है इबादत के लिए कोई विशेष तारिका भी नही है और मुकर्र शुदा कोई भी तरिका नेक अमल के बगेर ऐसा है जेसे कोई कीचड़ में इमारत खड़ी करने की कोशिश कर रहा हो और गोर करने वाली बात ये है के किसी भी मज़हबी किताब में इबादत का तारिका नही बताया हर मज़हबी किताब ने इबादत के लिए नेकी मोहब्बत इंसानियत परहेज़गारी अदम ताशदुदुद और अमन का तारिका ही चुना लेकिन इसके बावजूद भी इंसानों के दरमियान कुछ इबादात के तारेके रायेज हैं और इन्सान इबादत की बुनियाद को छोड़ कर इन तरीकात के पीछे भागते हैं हेरत की बात है के इन सारे इबादात के तरीकात के ऊपर रसूलों का नाम जोड़ कर इनके असूल और अमल को भुला कर इन्हें भी तनक़ीद का निशाना बनाया

ओंर तनक़ीद करने वालों से मीरा सवाल है जिस तरिके से भी वोह इबादत करते हैं किया वाकये वोह इन तरीकों से पाक परवरदीगर को याद कर सकते हैं और इन तरीकात से इंसानि समाज या इन्सान को अज तक किया फायेदा पोहंचा . किया सिर्फ इबादत करने से जनत की पाक राह हासिल हो सकती हे ?

इबादत के तरीकात जी आज की दुनिया में रायेज हैं वोह इन्सान और इंसानियत के खिलाफ नफरत फेलाने का ज़र्य हैं इबादत का तरीका और मज़हबी रस्म व रवाज सिर्फ इन्सान की जेहनी तसली के सिवा और कुछ नही और ये इंसानों के बनाए हुवे तरीकात हैं ? पाक परवरदीगर का हक नहीं . पाक परवरदीगर का हक तो ये है के वोह इंसानों से अतना चाहते हैं के वोह अपने नेक अमल से अमन व अमान की ज़िन्दगी और समाज कायेम करें और पाक परवरदीगर की कायेम शुदा खुबसुरत दुनिया का लुत्फ़ उठाऐन .

सूरा बकरा 2 आयत 139 148 177
तुम उनसे पूछो कि क्या तुम हम से ख़ुदा के बारे झगड़ते हो हालाँकि वही हमारा भी परवरदिगार है तुम्हारा भी हमारे लिए हमारी कारगुज़ारियाँ और तुम्हारे लिए तुम्हारी कारसतानियाँ और हम तो निरेखरे उसी के हैं (139)
और हर फरीक़ के वास्ते एक सिम्त है उसी की तरफ वह नमाज़ में अपना मुँह कर लेता है बस तुम झगड़े को छोड़ दो और नेकियों मे उन से आगे बढ़ जाओ तुम जहाँ कहीं होगे ख़ुदा तुम सबको अपनी तरफ ले आऐगा बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (148)
नेकी कुछ यही थोड़ी है कि नमाज़ में अपने मुँह पूरब या पश्चिम की तरफ़ कर लो बल्कि नेकी तो उसकी है जो ख़ुदा और रोज़े आख़िरत और फरिश्तों और ख़ुदा की किताबों और पैग़म्बरों पर ईमान लाए और उसकी उलफ़त में अपना माल क़राबत दारों और यतीमों और मोहताजो और परदेसियों और माँगने वालों और लौन्डी ग़ुलाम में सर्फ करे और पाबन्दी से नमाज़ पढ़े और ज़कात देता रहे और जब कोई एहद किया तो अपने क़ौल के पूरे करे और फ़क्र व फाक़ा रन्ज और घुटन के वक़्त साबित क़दम रहे यही लोग वह हैं जो दावे ईमान में सच्चे निकले और यही लोग परहेज़गार है (177)

सूरा अल्ह्ज 22 आयत 67
हमने हर उम्मत की इबादत के वास्ते एक तरीक़ा मुक़र्रर कर दिया कि वह इस पर चलते हैं फिर तो उन्हें इस दीन में तुम से झगड़ा न करना चाहिए और तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ बुलाए जाओ बेशक तुम सीधे रस्ते पर हो (67)

सूरा मायेदा 5 आयत 48
और हमने तुम पर भी बरहक़ किताब नाज़िल की जो किताब उसके वक़्त में मौजूद है उसकी तसदीक़ करती है और उसकी निगेहबान है जो कुछ तुम पर ख़ुदा ने नाज़िल किया है उसी के मुताबिक़ तुम भी हुक्म दो और जो हक़ बात ख़ुदा की तरफ़ से आ चुकी है उससे कतरा के उन लोगों की ख़्वाहिशे नफ़सियानी की पैरवी न करो और हमने तुम में हर एकके रासता एक शरीयत और ख़ास तरीक़े पर मुक़र्रर कर दिया और अगर ख़ुदा चाहता तो तुम सब के सब को एक ही उम्मत बना देता मगर ख़ुदा का मतलब यह था कि जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें तुम्हारा इम्तेहान करे बस तुम नेकी में लपक कर आगे बढ़ जाओ और तुम सब को ख़ुदा ही की तरफ़ लौट कर जाना है (48)

1) आयत नम्बर 2/139 में पाक परवरदीगरने इलान किया है के वोह सब का मालिक हैं और अनके मामले में किसी कसम का फितना फसाद जाएज़ नही है

2) आयत नम्बर 22 / 67 में पाक परवरदीगर ने फरमाया तरीकात इबादत केसे ही कोयूं न हों पाक परवरदीगर को कोई फर्क नही पड़ता कियूनके वोह दुनिया के जरे जरे में है

3) आयत नम्बर 2 / 177 के अनुसार नेकी की बुनयाद हे अल्लाह और कयामत ,फ़रिश्ते , किताबों और रसूलों पर इमां लाने पर हैं और इसकी वजह ये है .

अलिफ़ ! अल्लाह और क़यामत : पाक परवरदीगर ने अपने आपको ज़ाहिरी तोर पर कभी भी नही पेश किया सिर्फ आम इंसानों के लिए इनकी मोजुदगी का एहसास ही काफी है और ये एहसास ही असे गुनाहों से रोक कर समाज को पाक व साफ बनाते हैं इसलए अनके अद्रिश वजूद पर इमान लाना इन्सान का पहला फर्ज़ है दुनिया और दुनिया की हर मुकर्र शुदा चीज़ फानी है और इस हक पर इमान लाने का मकसद इन्सान अपनी ख्वहिशत नफरत लालच हसद , घमण्ड और गुस्से पर काबू पाए .

कुरानी हुक्म के अनुसार हर कोई अपने अपने इबादत के तरीकात और रसूलों को मान कर चले और एकदूसरे के रसूल को बड़ा या छोटा ठहराने की कोशिश ना करे कियूनके ये हक पाक परवरदीगर ने किसी भी इन्सान को नही दिया किसी भी किताब या रसूल और अनके तरीकात को बुरा भला कहने का हक या ज़रुरत इन्सान को नही इसलए तमाम इंसानों से मेरो गुज़ारिश है के कुरानी आयत 2 / 177 पर ठीक से गोर फरमाएं और इसे अपनी अमली ज़िन्दगी में शामिल कर लें .

ब ! किताबें और रसूल : इंसानों के दरमियाँन इख्ल्लाफत और नफरत मिटाने के लिए ही पाक परवरदीगर ने सब रसूलों और तमाम किताबों पर इमान लाने के लिए कहा और इस सिलसले में कुरान शरीफ की सूरा 5 की आयत 48 में पाक परवरदीगर ने साफ तोर पर इलान किया है के दुनिया में सारे मंज़ूर शुदा तरीकात इबादत उन्हों ने ही मुकर्र किये हैं और हम इंसानों को किसी भी तरिका इबादत या किसी भी रसूल या किसी भी किताब से नफरत या असे मनसुख करने का कोई हक नही पाक परवरदीगर के सारे तरीकात इबादत का तजज़िया करना इन्सान के बस में नही हे और जो ये कम करते हैं वोह यकीनन पाक परवरदीगर के हुक्म के खिलाफ वर्जी हैं और समाज में नफरत फसाद और ब्द्स्कुनी की बुनियाद डालते हैं और पाक परवरदीगर नफरत और फसाद से राज़ी नही . कुरान शरीफ की आयतों से ये भी साफ ज़ाहिर होता है के कोई भी इबादत का तरीका नेकी से बढकर नही और सब से उम्दाह तरिका इबादत है मुख्लूक की खिदमत और हर वक्त पुर अमन व अमान . इन्सान इबादत के ऐसे तरिके को अपनाये जिस से किसी भी मुख्लूक को तकलीफ न हो और न ही तहज़ीब की रफ्तार पर रुकावट बने .

गीता अधयाए 6 शलोक 7

जिस ने मन को जीत लिया उस ने पहले से ही परमात्मा को पा लिया कोयूनके इस ने शान्ति को पा लोया और ऐसे व्यक्ती के लिए दुःख सुख , गर्मी सर्दी , इजत जील्त सब बराबर है .

सब से बेहतरीन इबादत का तारिका है के मन को काबू में रखकर अपने आपको गुनाहों से आज़ाद रखना और हमेशा अमन व सकून कायेम रखना और इस पैग़म को लोगों तक पहुंचना हर नेक इन्सान का कर्तव्या है .

चिंतन करना (1)

सुरह इमरान 3 आयात 7

वही अल्लाह ताला है जिस न तुम पर किताब उतारी जस म मज़बूत आयात है जो कताब क असल हैं और बाज़ मुताशाबा हैं पस जिसके दलों म कजी है वोह इस की मुताशाबा आयातों क पीछे लग जाते हैं फितने की तलब म और ओंकी मुराद की तलाश म हालांके अनकी हकीकी मुराद को सिर्फ अल्लाह ही जानते हैं कोई दोसरा नहीं जनता और मज़बूत इमान वाले कहते हैं क हम तुम पर इमान ला चुके और ये हमारे रब की तरफ से है और नसीहत तो सिर्फ अक़लमंद ही हासिल करते हैं .

सूरा रोम 39 आयत 23

अल्लाह न ओतारी सब से अछि किताब अवल स आखिर एक सि है दोहरे बियान वाली इस से बाल खडे होते हैं उनके जो अपने रब से डरते हैं फिर इन की खालें और दिल नरम पडते हैं याद खुदा से जीस में अल्लाह कि हिदायत है राह देखाए जिसे चाहे और जिसे अल्लाह गुमराह करे इसे कोई राह देखाने वाला नहीं .

कुरान की सूरा 3 की आयात 7 में पाक परवरदीगार ने स्पष्ट बताया " वज़ह मज़बूत आयतें जो कितब की असल हैं और बाज़ मुताशाबा " इस सिलसिले म कुरान की साफ़ और असल आयतें इंसानी हकूक और इंसानी फयेदे के लिए नाजिल की गुई हैं और साथ साथ कुछ आयातों को मुश्ताबा (यानि शक व शुबा वाली) करार दिया गया है और असकी वशेष कारन है के पाक परवरदीगर ने शैतान से वादा किया था कि कयामत तक इसके मुनक्रों पर ग़ालिब रखने का और ईसी कारन कुरान शरीफ की बहुत सारी आयतें जीन का मतलब रहस्ये कि तोर पर पेश किया गया है .

उधारण स्वरुप " तुम्हारी ओरतें तुम्हारी खेतयां है और अपनी खेती म जिस तरह चाहे अओ और अपने लिए आगे भेजो और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो के तुम सब ऊस से मिलने वाले हो और इमान वालों को खुशखबरी सुना दो . इस आयत में (2 / 223) सिर्फ ओरत कहकर सारी ओर्तों की सुरक्षा का आदेश दिया है यानि जिस तरह खेती की सुराख्षा करने से अछि फसल मिलती है ठीक इसी तरह घर की ओर्तों की सूरख्षा और शिक्षा से नेक और अच्छी नस्ल की बुन्याद होती है . अरबी जुबान में " नसा " का मतलब ओरत और ओरत से मुराद माँ बहेन बीवी और बेटी जो एक मर्द की पनाह म रहती हे .

अगर इस आयात को शैतानी पहलू से देखा जाये तो यकीनन इस आयात में ओरत से मुराद हे बीवी और जिस तरह चाहे इस्तेमाल करने की इजाज़त है किया कोई नेक ओरत अपने अप को इस तरह और बी इजत और गंदे तारिका से इस्तमाल होने पर गर्व महसूस करेगी ?

यह सवाल कसी ओरत या बाप या कसी भाई से कर के देखें ? किया ये लोग अपनी बहन बेटी या माँ को चीजों की तरह गंदे और बे इज्ज़त तरीकों से इस्तमाल होते हुवे बर्दाश्त कर सकते है ? और सब से वशेष बात यह है कुरान शरीफ की आयातों की जो तस्दीक पाक परवरदीगर के कानून क विरुद्ध है उसे इंसानों ने खुद ही मनसूख कर दिया फिर सवाल ये अता है की पाक परवरदीगर इन आयातों को सीधे तोर पर कियूं नहीं पेश किया और पेह्लियों के तोर पर कियूं छोड दिया ?

इन्सान को पाक परवरदीगर ने सरव श्रेष्ट दिमाग़ दिया और सोचने समझने की ताकत दी जो समस्त प्राणियों से श्रेष्ट है और इसके साथ साथ हर तरह की सुख सुभेदा भी प्रदान की इन्सान के सामने नेकी और बदी को रखकर एक तरफ इन्सान की वीरान और एक्सां जिंदगी से निजत दी और दूसरी तरफ नेकी और बदी के फेसले के लिए उत्तम मस्त्छ दिया और कुरान शरीफ म भी बार बार ताकीद की " अक्लमन्दों के लिए

आयातों की गहराई समझना आसान है " निशानियाँ हाँ जाननी वालों क लिए / निशानियाँ हैं सुनने वालों के लिए / निशानयाँ हैं अक्ल वालों के लिए "

गंदे जहन वाला इन्सना आयतों की गलत तस्दीक करके आपस में फितना फसाद की बुनियाद डालते हैं .

चिंतन करना (2)

सूरा मायेदा 5 आयात 51 / 82

ए इमान वालों यहूद और नुसरा को दोस्त न बनाव वोह आपस म एक दुसरे क दोस्त हैं और तुम म जो कोई इन से दोस्ती करेगा तो वोह इन्ही म से है बेशक अल्लाह बेइन्सफों को रह नहीं देता(51)

ज़रूर तूम मुसलमानों का सब से बढकर दुश्मनी में यहूदियों और मुशरिकों को पाओगे और ज़रूर तुम मुसलमानों की दोस्ती म सब से जियादा करीब अन्को पाओगे जो कहते हैं हम नुसारा हैं और ये इसलिए की इन में अलीम और दरवेश हैं और वोह गरूर नही करते (82).

इन दोनों आयतों म नुसरानियों को कभी दोस्त और कभी दुशमन के तोर पर पेश किया गया है पाक परवरदीगर ने इन दोनों आयतों के जरया खुफिया पैग़ाम दिया है और वोह है (1) कसी कोम के गलत और गुनाहगार इन्सान से दोस्ती न करो (2) और अलीम और दरवेश कसी भी कोम के कियूं न हों ईन्को दोस्त की हेसियत देनी चाहिए .

पहली आयात म यहूदी और नस्रानियों को एक दुसरे का दोस्त कहा गया है और दूसरी आयात म मसलमानों की दोस्ती म नुसरानियों को दोस्त बनाया गया है तो दोस्त क दोस्त या दोस्त के दुशमन को इस नज़र से देखना चाहिए और दोस्ती पाक परवरदीगर की पसंदीदा चीजों म से एक चीज़ है अच्छे ख़यालात वाले इन्सान इंसानियत भाई चारह वाली ज़हिनियत के लोग अलीम और मकमल इमान वाले तमाम लोग एक दुसरे के दोस्त हैं और यही वर्तमान दुनिय का असूल है और इस असूल को दुनिया के ज़ियादो से ज़ियादो लोगों ने इख़्तियार किया .

अमाल की बुनियाद पर दोस्त और दुश्मन का फेसला इन्सान खुद कर लेता है .

आयातों की गलत तस्दीक इंसानों के दरमियन नफरत की बुन्याद पैदा करती है और पाक परवरदीगर के रहम व कर्म से मुझे आयातों का मतलब नसीब हूवा और में चाहूँगा के नेक जहन वाले इन्सान जसे पाक परवरदीगर ने सोच और समझ अता फरमाई है वोह मोजूदा समाज इंसानियत और आयतों की रौशनी म मेरे ख़यालात का फेसला करें .

चिंतन करना (3)

सूरा बकरा 2 आयात 19

या जेसे असमान से अतरता पानी के इस म अन्धेरयाँ हें और गरज और चमक अपने कानो म उँगलियाँ डाल रहे है कडक के सबब मोत क डर से और अल्लाह काफ्रों को घेरे हूवे है .

इस आयात म " असमान से अतरता पानी " का मतलब पाक परवरदेगार की तमाम कुदरती चमतकार जो इन्सान के फैदे की लिए दुनिया म मोजूद हैं और इस में खास तोर पर पाक परवरदेगार की हदायत जो किताब की शक्ल म दुनिया म मोजूद है और इस म कुछ गेब हैं और कुछ डर बताने वाली बातें और कुछ ऐसी हिदायत जो इन्सान को सकून देती हैं और गुनाहगार इन्सान पाक परवरदीगर की रोशन हिदायत को न मानने के सबब अज़ाब के खोफ से कानों म उँगलियाँ डाल राखी हैं और पाक परवरदीगर अपने नाफ्रमानों को बदसकूनी की ज़िन्दगी देकर अपनी अज़ाब के दायरे में घेर रखा है इस आयत म वर्ष के साथ पाक परवरदीगर की रहमत की तूलना की गुई है .

चिंतन करना (4)

सूरा बकरा 2 आयत 28

भला तुम कीयूकर खुदा के मुनकर होगे तुम मर्दों (जहन) थे इस ने तुम्हे (जहन) जलाया फिर तुम्हे मोत देगा फिर तुम्हे ज्ल्येगा और फर इसकी तरफ लोट जाओगे .

तुम कियूं नही खुदा के हुकम की तामील करोगे जब के तुम्हारा जान मर्दों था इस ने तुम्हारे जान को रोशन किया फिर तुम्हारी मोत अयर्गी फिर तकलीफ और बद सुकूनी देगा तुम्हारे गुनाहों के सबब तकलीफ से नजात के लिए अंत में पाक परवरदीगर की रह इख़्तियार करनी होगी इस म ही निजत है .

चिंतन करना (5)

सूरा बकरह 2 आयात 34

और जब हम ने फरिश्तों को हुकुम दिया के अदम को सजदा करो तो सब ने सजदा किया सिवाए इब्लीस ने के मुनकिर हूवा ग़रूर किया और काफरों म हो गया .

सारे फरिश्तों ने पाक परवरदीगर के आदेश के अनुसार इन्सान को सजदा किया कियूनको इन्सान के अन्दर पाक परवरदीगर की रूह (नूर) मोजूद थी लेकिन फ़रिश्ते इब्लीस ने अहंकार में अंधे हो कर नाफ्रमानी करते हूवे इन्सान को सजदा करने से इंकार किया और काफ़िर का दर्जा हासिल हूवा .

विशेष ! इस आयात के अनुसार काफरों की दो विशेष सिफत (1) अहंकार (2) और अल्लाह के हकम की नाफरमानी .

चिंतन करना (6)

सूरा बकरा 2 आयात 35 / 36 / 37

और हम ने फरमाया ए अदम तुम और तेरी बीवी इस जनत म रहे और खाये इस में से बे रोक टोक जहाँ तुम्हारा दिल चाहे मगर इस दरख्त के पास ना जाना के हद से बढ़ जाने वालों म से हो जाओगे तो शैतान ने इस से इन्हें लगजिश दी और जहाँ रहते थे वहां से अन्हे अलग कर दिया और हम ने फरमाया नीचे अतरो " आपस म एक तुहारा दुसरे का दुश्मन " और तुम्हें एक वक्त तक जमीन में ठरना और बरतना है फिर अदम ने सीख लिए अपने रब से कुछ कलमे तो अल्लाह ने इनकी तोबा कबूल की बेशक वोही तोबा कबूल करने वाला मेहरबान .

(अल्फ) जननत में शैतान की मोजुदगी (ब) जननत से इन्सान को दुनया में उतरा (त) जननत की मट्टी से इन्सान का जन्म हूवा .

इस आयत के बर्तमान अनोवाद के अनुसार बहुत सवाल खड़े हो सकते हैं और उन में विशेष सवाल ये हैं .

जननत में भी ऐसा पेड़ है जस में शैतान मोजूद हैं तो किया शैतान जननती है ?

पाक परवरदीगर की नाफरमानी और अहंकार के कारण शैतान को जननत से निकाला गया तो जननत म शैतान का वजूद(पेड़) कहाँ से आया ?

इस पेड़ के बारे में मुख्ल्फ़ बियनों में कहीं गंदम और कहीं सेब का ज़िकर है लेकिन कुरान शरीफ में उसे पेड़ कहा गिया है इस आयत में " आपस में एक तुम्हारा दुसरे का दुश्मन " कहा गिया है तो कोन किस का दुशमन ?

आयत के अनुसार हजरत अदम ने पाक परवरदीगर से कुछ कलमे सीखे वो किया हैं ?

सवालों के अनुसार बर्तमान अनुवाद अंधी एकिद्त की बुन्याद पर टका हूवा है लेकन इस्लाम और रसूल पाक के आदर्श के अनुसार अंधी अकीदत शर्क में शुमार होती है इस लिहाज़ से हजरत अदम और अममा हूवा को सीधे तोर पर जननत में रहने वाले फरिश्तों का दर्जा दिया गया है और इन्सान की पैदाएश के बारे में कुरान शरिफ्फ़ की आयातों और वोज्ञान की तहकीकात पर गोर करने से ये परमान होता है के इंसानी जसम दुनिया म ही वजूद म आया है और इसकी शुरुएअत है पानी यानि H2O तकरीबन 108000 साल पहले सूरज से निकली हूई दुनिया ठंडी होने के बाद पानी वजूद में आया और पानी से ही दुनिया की कदीम एक खुलिया वाली जान बनी और सालों बाद बहुत सारे खुलीयो से मलकर मखलूक की शक्ल की तखलीक हूई. ह्यद्रोजिन और अक्सेजन ये दोनों गेसे 2: 1 के तनासब से मलकर पानी बना और यही पानी मुखलूक की बुनियाद है

इस लिहाज़ से में कह सकता हूँ के ह्यद्रोजिन और आक्सीजन दोनों ही जननत के फ़रिश्ते थे और दुनयावी नाम अदम और हवा के नाम से मनसूब हूवे

जननत म इंसानी फ़रिश्ते यानि अदम और हवा के साथ साथ शैतानी फरश्ते इब्लीस की रूह को भी मुकर्र किया गया और इसे पाक परवरदीगर ने इंसानों को समझाने की लिए " पेड़ " को बतूर अलामत पेश किया और इंसानी रूह के फ़रिश्ते की साथ शैतानी रूह के फ़रिश्ते को भी जन्नत से दुनिया में उतरा गया इसलिये हर इन्सान के अंदर ही शैतान के वजूद की बुनियाद है और कयामत के वक्त तक इंसानी वजूद की साथ साथ शैतानी वजूद का भी अंत हो जायेगा .

नोट ! सिर्फ इंसानी रूह की पेदएश जननत म हूई है और इंसानी जसम का वजूद दुनिया की मट्टी से बना . किरदार के तोर पर आक्सीजन और ह्य्द्रोजें एक दुसरे के विपरित हैं और इस लिहाज़ से कुरान शरीफ की

इस आयत में " एक दुसरे का दुशमन " कहा गिया है और जब यह दोनों आपस में मलते हैं तो " पानी की बूँद " की सष्टि होती है .

इस आयत म कुछ कलमे सिखने का मतलब !

बर्तमान सोच के अनुसार हजरत अदम को रसूल पाक के वसीले से माफ़ी मिली यह रवायत पूरी तरह कुरान के खिलाफ बे बुनियाद और ग़ैर अकली हैं और पाक परवरदीगर के असूलों के भी वरूध है . मज़हबी किताबों के अनुसार हर जान को अपने करमों की सज़ा और जज़ा खुद भगतनी पड़ती है और समस्त रसूलों ने बराह रास्त पाक परवरदीगर और इनकी हिदायत को ही वसीला माना इस लिहाज़ से इन्सान के लिए नेकी सिखाने वाला रसूल होता है और वो नेकी का सबक रसूलों को पाक परवरदीगर की तरफ से हासल होता है . इसतरह पाक परवरदीगर की तरफ से कुछ नेकी के रास्ते इन्सान के जेहन में डाले गये हैं ताकी इसे सकून हासिल हो और इस रह के कुछ तरीकात के कामों का जक्र इस आयत में किया गया है गोर फरमाएं इंसानों की जज़ा और सज़ा का फेसला उसके अमल पर निर्भर है और ये कानून ज़ुबानी कुछ कलमे पढ़ लेने से बदल नही जाता .

सूरा बकरा की दूसरी आयत जस में कहा गया है के हजरत अदम ने अपने रब से कुछ कलमे सीखे जो अर्श इलाही पर लखे हूवे थे और इन कलमों की वजह से इन्हें माफ़ी मली की रावयेत इस आयत से पूरी तरह गलत साबित होती है हजरत अदम ने सीधे तोर पर कुछ कलमों से मुराद इन्सान के जीने के कुछ वशेष तारीके सीखे जो इन्सान को जिस्मानी और रूहानी ख़ुशी के साथ साथ सुख चैन की ज़िन्दगी देते हैं .

चिंतन करना (7)

सूरा बकरह 2 आयत 60

और जब मूसा ने अपनी कोम से पानी मांगा तो हम ने फरमाया ऐ मूसा इस पथर पर अपना असा मार तो इस में से बारह चश्मे बह निकले हर वर्ग ने अपना घाट पहचान लिया खाव और पीओ खुदा का दिया और जमीन में फसाद उठाते ना फेरो .

जब मूसा ने अपनी कोम से पानी (हिदायत) माँगा तो हम ने फरमाया इस पथर (मुर्दाह) समाज पर अपनी असा (रोशन हिदायत) मारो तो इस में बारह चश्मे (मानने वाले) बह निकले और हर ग्रोह (इन्सान) ने अपना अपना घाट (मकसद) पहचान लिया खाओ और पियो (अल्लाह की हिदायत) खुदा का दिया और जमीन में फसाद उठाते न फेरो .

हजरत मूसा ने निजत की राह (पानी) मांगी तो अल्लाह ने गुनाह और जुल्म से लत पत समाज (पथर) पर अपनी हिदायत (असा) के जरिया गुनाहों की खिलाफ जिहाद का हुक्म दिया इन्सान की सामने हक आने पर उस जमाने और उस जगह के लोग बारह किस्म के ख्यालात (चश्मे) में बट गये और हर कोई हक को पहचानते हूवे शर्क को छोड़ कर एक पाक परवरदीगर के वजूद को पहचाना .

चिंतन करना (8)

सूरा बकरा 2 आयत 63

और जब हम ने तुम से अहद लिया और तुम पर तूर को ओंचा किया तो जो कुछ हम तुम को देते हैं ज़ोर से इसके मज़मून को याद करें इस उमीद पर के तुम्हे परहेज़गारी मले .

इस आयत में पाक परवरदीगर ने फरमाया !

जब वोह तुम (इन्सान) से अहद लेते हैं (किताब की जरया) और तुम पर तूर (पहाड़ जेसा शैतान) को ओंचा किया और जो कुछ तुम को देते रहते हैं इसको मज़मून को याद करो इस उम्मीद पर के तुम्हे परहेज़गारी मले यानि पहाड़ की तरह मज़बूत और बड़े शैतान से बचने के लिए अल्लाह की दी हुई रोशन हिदायत जो किताब के जरया इंसानों तक पोह्न्ची इस पर मजबूती से अमल कर के शैतान से बचा जा सकता है .

इस आयत में पहाड़ की ओंचाई और बड़ाई की तुलना शैतानी ताकत से की गई है और इस से बचने का तारिका भी इंसानों को बताया गया है .

चिंतन करना (9)

सूरा बकरा 2 आयत 124
और जब अब्राहिम को इसके रब ने कुछ बातो से अजमाया तो उस ने वोह पूरी कर दी फरमाया के में तुमको लोगों का इमाम बनाने वाला हूँ कहा और मीरी ओलाद को फरमाया मेरा एहद ज़ाल्मों को नही मलता .

हज़रात इब्राहीम के बाद इनकी अल ओलाद ज़ुल्म की हद पार करचुकी थी और पाक परवरदीगर ने इनकी दुआ ख़ारिज करते हूवे इनकी अल अवलाद को नबूवत से महरूम रखा और असके बाद रसूल पाक हजरत मुहम्मद की पैदाइश एक कंवल की तरह एक उन्होनी कुदरत थी और ये इब्राहीम की ओलाद के लये एक बेहतरीन मोका था फिर भी इतहास सख्शी हे के इस मोका को नकारते हूवे और शैतान के कदमों पर चलते हूवे इनकी नस्ल रसूल पाक के नाम पर इंसानियत पर ज़ुल्म करती गई जो अज तक जारी है और ये बिलकुल रसूल पाक के ख्यालात और असुलों के खिलाफ है और इस सिलसिले में कुरान शरीफ की ये आयत बड़ी बेहतरीन तर्जुमानी करती नज़र अति है .

चिंतन करना (10)

सूरा अल्ह्ज 22 आयत 52 / 53

हम ने अप से पहले जस रसूल और नबी को भेजा उसके के साथ ये हूवा के जब वोह अपने दिल में कोई आरजू करने लगातो शैतान इसकी आरजू में कुछ मला देता पस शैतान की मिलावट को अल्लाह दूर कर देता है फिर अपनी बातें पककी कर देता है अल्लाह दाना और हिकमत वाला है (52)

ये इसलए के शैतानी मिलावट को अल्लाह अजमाइश का जरिया बना दे जन के दलों में बीमारी है या जन के दिल सख्त हैं बे शक जालिम लोग सख्त गुमराही में हैं .(53)

कुरान शरीफ की हिदायत दुनिया के तमाम इंसानों के लये है और ये कसी वशेष उमति के लए नही इस हसाब से जो हुक्म अल्लाह का नही अल्लाह ने इसे तमाम दुनिया के इंसानों के दरमियन लागु कर के देखा देते हैं के कोन से ख्यालात अल्लाह के हैं और कोन से शैतानी . उधारन के तोर पर कुरान की एक आयत में अल्लाह ने फरमाया " काफ्रों को जहाँ पाव कत्ल करो " इस आयत को गल्त तरीके से पेश करने पर कुछ लोग कहते हैं के कुरान के फर्मंब्रदार कहेलवाने वाले लोगों की सिवा बाकी सब लोग काफर है या इन्हें काफर का दर्जा दिया गया है हकीकत में जो कुरान का फ्रमंब्रदार होगा वो कभी भी दुसरे उमत के लोगों को काफर का दर्जा नही देगा जिसका उधारन रसूल पाक की जिंदगी से मलती है ओन्हों ने मक्का और मदीना में बसे हूवे यहूदी सितारा परस्त और नुस्रानी के अच्छे लोगों को कभी भी काफर नहीं कहा और न इन पर ज़ुल्म किया कुरान की आयत " काफ्रों के कत्ल का हकम " सिर्फ गुनाह गारों का कत्ल है और इसकी शुरूअत होती हैं अल्लाह के हुक्मो को न मानने लोगो के ख्यालात का कत्ल करना"

इसकी विशेष जानकारी " काफ़िर " वाले अध्याए में मिलेगी .

चिंतन करना (11)

सूरा बकरा 2 आयत 187

तुम्हारे लिए जाएज़ कर दिया गया रोज़े की रात में अपनी बीवी से बे पर्दों होना वो तुम्हारा लिबास है और तुम उनके लिबास अल्लाह ने जान लिया की तुम खयानत करते हो सो इस ने तुम्हें माफ़ कर दिया और तुम से दरगुजर किया पस अब उन से मिलो जो अल्लाह ने तुम्हारे लये लिख दिया है तलब करो और खाओ पियो यहाँ तक के स्पष्ट हो जाये तुम्हारे लिए फज्र की सुफेद धारी से सियाह धारी फर तुम रात तक रोज़ा पूरा करो और उन से ना मलो जब तक तुम एताकफ़ में हो मस्जिदों में ये अल्लाह की हदें हैं पस इनके करीब न जाओ इस तरह अल्लाह वज़ह करता है अपने हुकुम ताके तुम परहेजगार बनो .

इस आयत में अल्लाह ने मर्द ओरत को एक दुसरे का लिबास कहकर मर्द और ओरत दोनों के हकूक समाज में बराबर रखे .

चिंतन करना (12)

सूरा बकरा 2 आयात 196

हज और उमरह अल्लाह के लिए पूरा करो फिर अगर तुम रोके जाओ तो क़ुरबानी भेजो जो मयेस्सर अये और अपने सर न मंडाव जबतक क़ुरबानी अपने मुकाम तक ना पहुँच जाये फिर जो तुम में बीमार हो और इसके सर में तक्लीफ तो बदला दे रोज़ा या खेरात या क़ुरबानी फिर जब तुम इत्मीनान से हो तो जी हज से उमरह मिलाने का फयेदोह उठाये उस पर क़ुरबानी है जेसे मेयेस्सर आये फिर जिसे म्क्दूर ना हो तो तीन रोज़े हज के दोनीं में रखे और सात जब अपने घर पलट कर जाये ये पुरे दस हूवे ये हुक्म इसके लिए है जो मक्काह का रहने वाला न हो और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो के अल्लाह का अज़ाब सख्त है .

हज और उमराह एक निशानी है क़ुरबानी की और क़ुरबानी इस हद तक होनी चाहिए जहाँ पर इन्सान अपने आपको खुदा की राह में कुर्बान कर दे एक इन्सान को सब से ज़ियादो प्यार और चाहत अपने अप से

होती हैं इस लिहाज़ से जेहनी तोर पर नेकी परहेज़गारी मुख्लूक की खिदमत और मुहबत और खुदा की रह में इन्सान अपने आपको जब तक कुर्बान न करे तब तक इसका तवाफ़ जो खुदा को घेर कर बनता है वोह पूरा नही होता और ये पूरी तरह से इन्सान के अमाल पर निर्भर है सर मुंडवाने से अल्लाह को तो कौई फैदा नही होता लेकिन इन्सान को ज़ोनी तसली ओर जिस्मानी लाभ ज़रूर मलता है और सर मुंडवाना एक रस्म है जो इन्सान को क़ुरबानी की बंदिश म बांध देती है ताकि इस रस्म की जरये अपनी न्फ्स्यानी खावाश को सदा की लिए कुर्बान कर दे और इंसानियत को लाभ पोहंचे .

इसका एक उधारन

भारत वर्ष का एक राजा जिसका नाम " हर्ष वर्धन" था जो एक वशेष दिन अपनी समस्त दोलत को यहाँ तक के अपने जसम की कपड़े भी दान कर देते थे .

राज घराने में पैदा होने के बाद भी " गोतम बुध " ने अपनी रियासत को छोड़ कर अपने आपको इंसानियत की राह में कुर्बान कर दिया था . क़ुरबानी की और भी उधारन रसूल पाक की जिंदगी में भी मलती है .

चिंतन करना (13)

सूरा बकरा 2 आयत 213

लोग एक उम्मत थे फिर अल्लाह ने नबी भेजे खुश खबरी देने वाले और डर सुनाने वाले और अनके साथ बरहक किताब नाजिल की ताके इनका फेसला करे लोगों के दरम्यान जिस में ओन्हो ने इक्त्लाफ़ डाला और जिन्हें किताब दी गयी थी उन्हों ने इख्त्लाफ़ नही किया मगर इसके बाद इनके पास स्पष्ट एह्कामत अगेय आपस की जिद के कारन पस अल्लाह ने इन लोगों को हिदायत दी जो इमान लाये इस सची बात पर जीस में इन्हों ने इख्त्लाफत किया था अपने अजन से और अल्लाह हिदायत देता जसे वोह चाहिता हैं सीधे रस्ते की तरफ .

इंसानों के दरम्यान तमाम इक्त्लाफत को दूर करने के लिए नस्ल दरनस्ल अल्लाह ने नबियों के जरये एक ही आदेश बार बार दुनिया में पोंचाया ताके इन्सान नेकी और बदी की पहचान कर सके लेकन तमाम नब्यों के जरये एक ही दीन भेजने के बावजूद इंसानों के दरमियन इख्त्लाफत बरकरार रहे और खास तोर पर नब्यों और इनके करदार को लेकर जो मतभेद थे वोह अभी भी बरकरार है लेकिन अफ़सोस की बात है के ना समझ इंसानों ने ये जानने की कोशिश ही नही करता के समस्त नबी और इनकी किताबों में किया फर्क है और वोह किस बुनियाद पर आपस में लड़ते है ?

पाक परवरदीगर ने इंसानों के दरम्यान की नफरत को देखते हूवे बार बार नबयों के जरया अपना आदेश भेज कर इन्सान को अपना दीन यद् दलाया फिर भी इन्सान इस दीन को लेकर आपस में ही टुकड़ों में बट गये. तारिख गवाह है के हर नबी के निधन पर इन्ही के मानने वाले ने हकीकत को तोड़ मोड़ कर पेश किया और अल्लाह के दीन को बिगाड़ने की कोशिश की पाक परवरदीगर के दीन को तो बिगाड़ ना सके लेकिन खुद आपस में टुकड़ों म बट गए और चूर चूर हो गए और इसका प्रणाम ये हूवा के नफरत , अशांति और फासाद का जीवन प्राप्त किया .

कुरान शरीफ की इस आयत में पाक परवरदीगर ने साफ तोर पर इंसानों की इस फितरत को बयान किया है और यकीनन ये किताब (कुरान) तमाम नफरतों और इख्लाफत का फेसला करने वाली किताब है और इस किताब के अनुसार दुनया में दो ही ग्रोह का जक्र है (1) नेक परहेजगार और अच्छे इन्सान (2) और दुसरे बदकार और गुनाहगार इन्सान .

इतनी साफ और सुथरी हिदायत के बावजूद कुरान शरीफ के रखवालों और फरमानबरदारी करने वाले लोगों ने पाक परवरदीगर की फरमाबरदारी का ढोंग रचाते हूवे खुद ही फिरकों में बट गए तारीख का अध्यन करने से हमें ये भी पता चलता है के सिर्फ खिलाफत की लडाई में लाखों बेगुनाह इंसानों का कत्ल किया गया कभी सास ने दामाद के खिलाफ जंग की और कभी दोस्त ने दोस्त पर हमला किया और कभी भाई ने भाई को कत्ल किया मेरे जहन में एक ही सवाल गूंजता है अगर खियालात एक है और पाक परवरदीगर का हुक्म एक है तो आपस में ये फसाद कियूं ? ना मानने वालों के लिए अपने ख्यालात के एलावो कसी के ख़यालात की सच्चाई नज़र नही अति चाहे इस में हक कितना ही गेहरा कियूं ना हो .

चिंतन करना (14)

सूरा बकरा 2 आयत 226 / 227 / 228

इन लोगों के लिए जो अपनी ओरतों के पास ना जाने की कसम खाते है इंतजार करना चाहिये चार महिना फिर अगर रजू करें तो बेशक अल्लाह बख्शने वाला है (226)

अगर उन्हों ने तलाक का इरादा कर लिया तो बेशक अल्लाह खूब सुनने वाला है (227)

तलाक याफ्ता ओरतें इंतजार करें तीन हेज़ और इनके लये जाएज़ नहीं के वोह छिपा लें जो अल्लाह ने उनके रहमों में पैदा किया अगर वोह अल्लाह और योम अखरत पर इमान रखती हैं और ओनके खानदान की वापसी के हकदार हैं इस में अगर वोह बेहतरी करना चाहे और ओरतों के लिए हक है जेसे ओर्तों पर मर्दों का हक है दसतूर के मुताबक और मर्दों का उन पर दर्जा है और अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है (228) .

मर्दों को जिस्मानी तोर पर ओरतों पर फजीलत है और बाकी हर अम्ल में ओरत और मर्द का हिस्सा बराबर रखा गिया है तलाक के मामले में भी अल्लाह ने ओरत को इतना ही हक दिया है जितना के मर्द को .

मर्द अगर कसी बुनियाद पर बीवी को तलाक दे सकता है तो ओरत को भी ओतना ही हक है के वोह मर्द से खुला ले सकती है ताकि कसी की तरफ से नजयेज़ ना हो दोनों फरीक जब एक दुसरे से खुश नहीं तो रजामंदी से अलग होने की इजाजत है .

चिंतन करना (15)

सूरा बकरा 2 आयत 238

निगेबानी करो सब नमाज़ों की खास तोर पर दरमियान वाली नमाज़ की और अल्लाह के सामने अदब से खड़े रहो .

इस आयत का गहरा मतलब है इन्सान की जन्दगी से यानि इन्सान की पूरी ज़िन्दगी एक नमाज़ है और इस जन्दगी में पाक परवरदीगर के समस्त नियमों का पालन करना और असके आगे गर्दन झुकाना ही नमाज़ है

इस लिहाज़ से हम इंसानी ज़िन्दगी को तिन हिसों में बाँट सकते है बचपन जवानी और बडहापा इंसानी जीवन में ये अक्सर देखा जाता है के वोह जवानी के वक्त गुनाह में जियादा लुप्त रहता है इस लिए अल्लाह ने " दरमियान वाली नमाज़ " का खास तोर पर जक्र फरमा कर इन्सान को जवानी के वक्त पर भी अपने इमान पर कायेम रहने की ताकीद फरमाई और यही हे " दरमियन वाली नमाज़ "

चिंतन करना (16)

सूरा बकरा 2 आयत 285

रसूल इमान लाया इस चीज़ पर जो इसकी तरफ अल्लाह की तरफ से उतरी और मोमिन भी इमान लाये इसके फ़रिश्ते इसकी किताबों और इसके रसूलों पर इमान लाये और इस के रसूलों में से कसी में फर्क नही करते उन्हों ने कह दिया के हम ने माना और एतात की हम तेरी बखशीश चाहते है ए हमारे रब और हमें तुम्हारी तरफ ही लोटना है .

इस आयत में अल्लाह ने फरमाया के रसूल और मोमिन भी हर इस हुक्म पर सचचे दिल से यकीन और इमान रखते है जो उनकी तरफ इनके परवरदीगर ने (किताबें और रसूल) भेजी वो इन में से कसी में फर्क नही करते और फरिश्तों पर भी इमान रखते है और यही लोग मोमिन है जो अल्लह के भेजे हूवे हक को पहचानते है और जो लोग रसोलों किताबों में फर्क रखते हैं वोहि लोग कुफ्रिय्त का अजाब झेलते है सारे दीन पाक परवरदीगर के हैं और इस में किसी कसम का फर्क या नफरत की गुन्जयेश नही.

इस आयत की गहराई को समझने के लिए गीता और कुरान की चंद आयत उधारण स्वरुप

गीता अध्याए 4 शलोक 6 7 9

में अजन्मा हूँ और मेरी रूहानी सूरत कभी भी नही बिगडती और में तमाम जानदारों का मालिक हूँ और में हर युग में अपनी असली रूहानी सूरत में अवतार लेता हूँ (6)

जब कभी और जहाँ कहीं भी धर्म की कमी होती है और अधर्म में इजाफा होता है इस वक्त में जन्म लेता हूँ इमान वालो की सुरख्षा करने के लिए और गुनाहगारों का नाश करने और धर्म के नियेमों को फिर से कायेम करने के लिए में हर युग में अवतार लेता हूँ (7)

मेरे अवतार और मेरे कर्म देव्या रूहानी है इस तरह जो लोग इस हकीक़त को जान लेते है वोह जिस्म छोड़ने पर दोबारह इस संसार में जन्म नहीं लेता बलको वोह मेरे परम धाम को पा लेता है (9) .

सूरा निसा 4 आयत 150 / 151

बे शक जो लोग इंकार करते हैं रसूलों का और चाहते हें के अल्लाह और इसके रसूलों की दरमियाँ फर्क निकालते हैं और कहते हैं के हम कसी को मानते हैं और कसी को नहीं और चहते हैं के इसके दरमियाँन राह निकालें (150)

यही लोग असली काफर हैं और हम ने काफ्रों के लिए ज़िलत का अजाब तयार कर रखा है (151)

चिंतन करना (17)

सूरा इमरान 3 आयत 19

बेशक अल्लाह की नज़दीक इस्लाम ही दीन है और जिन्हें किताब दी गयी उन्हों ने इख्तालफ़ नही किया मगर इसके बाद जबके इनके पास इल्म अगया आपस की जिद से और जो अल्लाह की आयत का इंकार करे तो बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है

पाक परवरदीगर के हुक्मों के आगे सर झुकाना और इसे पूरी तरह से अपनाना (इस्लाम) ही समस्त लोगों का दीन होना चाहीए कियूंको इन्सान के लाभ के लिए ही अल्लाह ने नस्ल दर नस्ल रसूलों के जराए अपनी आदेश के आगे गर्दन झुका कर इसे पूरा तरह अपनाने का मशवरा दिया फिर भी इन्सान ने इनके मुश्वारा को ठुकरा कार अपने हातों अपना और समाज का सुकून बरबाद करते हैं और किताबों और रसूलों को लेकर आपस में फूट डालते हैं .

चिंतन करना (18)

सूरा इमरान 3 आयत 10

तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा की गुई है के तुम नेक बातों का हुक्म देते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह पर इमान रखते हो अगर अहल किताब भी इमान लाते तो इनके लिए बेहतर था उन में इमान वाले भी हैं लेकिन अक्सर तो फास्क हैं .

तमाम इंसानों में नेक परहेजगार और अमन चाहने वाले लोग एक उममति यानि ग्रोह और यही ग्रोह सब से श्रेष्ट हैं .

इस आयत में पाक परवरदीगर ने अहले किताब में भी इमान वालों का जक्र किया है बर्तमान दुनिया में जतने अममति या ग्रोह हैं सब के पास किताब हैं और हर अममति में अछे और बुरे लोग भी शामिल हैं इस बुनियाद पर हम कह सकते है की समस्त इंसानी अमल को दो हिससो में बंटा जा सकता है यानि अछे इंसानों का ग्रोह और बूरे इंसानों का ग्रोह .

चिंतन करना (19)

सूरा निसा 4 आयत 91

तुम कुछ लोगों को ऐसा पाओगे जिन की चाहत है तुमसे भी अमन में रहें और अपनी कोम में भी अमन से रहें जब कभी फितना अंगेजी की तरफ बलाए लोटाये जाएँ तो ओंधे मुह इस में डाल जाते हैं पस ये लोग अगर तुम से किनारहकशी ना करें और तुम से सुलह न करें और अपने हाथ तुम से न रोकें तुम उन्हें पकड़ो और मार डालो जहाँ कही भी पायें यही वोह है जिन पर हम ने तुम्हें ज़ाहिरी हुज्जत फ्रमुई .

पाक परवरदीगर ने फरमाया हर कोई अपने अपने अमल का खुद ज़िम्मेदा है फिर भी इन्हें कत्ल का आदेश कियूं दिया ? और ये कियूं ? हर सवाल के पीछे एक मकसद हैं और ये विशेष मकसद है के अगर कोई गुनाह की वर्द्ध आवाज़ ना उठाये तो गुनाह का सिलसिला चलता रहेगा मेरे खियाल से ये गुनाहगार इंसानों को बांधने की एक मजबूत चेष्टा है जो गुनाहगारों को मोत से डरा कर कुछ हद तक गुनाहों से रोक सकती है और शयेद इसलिए आजकी दुनिया में नेक और परहेजगार इंसानों का वजूद बरकरार है

चिंतन करना (20)

सूरा इनाम 6 आयत 166

और वोही है जस ने तुम्हें ज़मीन में नायेब बनाया और बाज़ को बाज़ से बुलंद किया ताके वोह तुम्हे इस में अजमाए जो इस ने तुम्हें दिया बेशक तुहारा रब जल्द सज़ा देने वाला और मेहरबान है .

इस आयत में अल्लाह ने उन किस्मत वाले हुनर मंद लोगों का जीकर किया है जो अपने अपने दायेरे में खलीफा की हेसियत रखते हैं और अपनी हुनर में यकता और बेमिसाल हैं उधारन स्वरुप डाक्टर कंप्यूटर इंजिनियर ,साइंटिस्ट और वकील हालांके इन पेशों से बहुत लोग जड़े हूवे हैं लेकिन इन में कोई एक ही ऐसा इन्सान होता है जो ऐसा कारनामा अंजाम देता है जो सभो को पीछे छोड़ देता है जेसे के बच्चे तो क्लास में बहुत होते हैं लेकिन फर्स्ट तो एक ही अता है अल्लाह उन्हें ये ज़हानत और खूबी देकर अजमाते हैं .

चिंतन करना (21)

सूरा एराफ 7 आयत 2 , 3

एक किताब तुम्हारी तरफ उतारी तो अस में तुम्हारे सिने में कोई तंगी न रहे और तुम इसके जरिए डर सुनाओ और इमान वालों को नसीहत (2)

इसकी पेरवी करो जो तू हरी तरफ तुम्हारे रब की तरफ से उतरी और इसे छोड़ कर और हाक्मों के पीछे न जाओ बहुत ही कम नसीहत कबूल करते हो .(3)

इस आयत के ज़रिया अल्लाह ने सिर्फ किताब के हुक्मो पर कायेम रहने का हुक्म फरमाया जो अल्लह की तरफ से उतरी इस सिलसिले में कुरान शरीफ की एक और आयत है (3/7) जिस में फरमाया गया है के इस आयात में कुछ साफ आयात हैं और कुछ मुश्ताबा जन के दलों में कजी हैं वोह मुशतबह वाली आयतों की गहराई ढूंढे गा पाक परवरदीगर की मर्जी के मुताबक ही कुछ विशेष इंसानों को इन आयातों की गहराई नसीब होती है .

कुरान शरीफ की आयतें साफ और सीधी हैं और ये हर दोर के लिए मुकमल हैं पाक परवरदीगर की मर्जी से बदलती हूई दुनिया की साथ साथ कुरान शरीफ की हर आयत हर बदलते हूवे समाज पर लागु हो सकती है ओर इन आयतों के साथ कोई भी तारीखी सबूत जोड़ना सरासर नादानी है दुनिया में जो कुछ भी होता है पाक परवरदीगर की मर्जी से होता है और हर दोर में दुनिया का अधियन करने से ही आयातों की गहराई की सच्चुई सामने अजाति है इन्सान का दीमाग दन बदिन तरक्की कर रहा है और अल्लाह की मर्जी से कुरानी आयतों का मतलब इन्सान खुद बखुद समझ रहा है और असके लिए किसी भी तारीखी दस्तावेज़ की ज़रूरत नहीं आयतों की गहराई को समझना पाक परवरदीगर और हर इन्सान का ज़ाती मामला है और पाक परवरदीगर जसे जितनी गहराई आता फरमाते हैं वोही इसकी किस्मत इस में कसी कसम की दख्ल अंदाजी या ज़ोर जबरदस्ती गुनाह है .

चिंतन करना (22)

सूरा एराफ 7 आयत 4

और कितनी ही बस्तियां हम ने हलाक कर दीं हैं तो उन पर हमारा अज़ब रात को आया जब वोह दोपहर को सोते थे .

दोपहर में असमान में सूरज जियादा चमकता है इस तरह बुरे इन्सान काफिर के पास पाक परवरदीगर की चमकती हूई सोशनी हिदायत बनकर जब अति है तब वोह इसे दरगुजर करते हैं यानि सोते रहते हैं फिर

जब इनकी जन्दगी गुनाहों से भर जाती है यानि रात तब पाक परवरदीगर का अज़ाब काली रात बनकर काफरों को ढांप लेता है .

इस आयत में " रात " का मतलब है गुनाहों से भरी हुई जिन्दगी कोयूनके अल्लाह लोगों के गुनाहों पर अज़ाब देते हैं और " दोपहर " यानि चमकती हुई रौशनी से मुराद अल्लाह की हिदायत जो के साफ और शफाफ रौशनी की तरह होती है इस वक्त इन्सान इसे इनकार कर देते हैं यानि सोते रहते हैं जब पाक परवरदीगर इसे रसूलों और किताबों के जरया दुनया में फेलाते है

चिंतन करना (23)

सूरा एराफ 7 आयत 25 / 26 / 27

फरमाया इस में तुम जियो गे इस में मरोगी और इस में से निकले जाओगे (25)

ऐ अवलादे अदम हम ने तुम पर उतारी एक लिबास वोह जो तुमहारी शर्म की चीज़े छुपाये और एक वोह जो तुम्हारी अरौएश हो और परहेज़गारी का लिबास वोह सब से भला ये अल्लाह की निशानियों में से हैं के वोह नसीहत माने .(26)

ऐ अवलादे अदम खबरदार तुम्हे शैतान फितने में न डाले जेसे तुमहारे माँ बाप को जननत से निकला और उतरा दिए इनके लिबास के इनके शर्म की चीजें उन्हें नज़र पडें बेशक वोह और इसका खानदान तुम्हे वहां से देखते हैं और बेशक हम ने शैतान को इनका दोस्त बनाया जो इमान नही लाते .(27)

इस आयात में इन्सान की " शर्म की चीज़े " से मुराद इन्सान के गुनाह जिसको इन्सान हमेशा छुपाने की कोशिश करता हे और ये इसकी फतरत है .पाक परवरदीगर के हुक्म के मुताबक परहेज़गारी के लिबास के ज़रया इन सारी शिर्क की चीजों से इन्सान आजाद रह कर शैतानी फितने से बच सकता है इस दुनिया में इन्सान पैदा होता है और फना होता है और इसी दुनिया से इसकी रूह को उठाया जाता है . इन्सान की कमाई हूई दोलत शहरत और शान व शोकत इसके साथ नही जाती लालच हसद हवस अहंकार गुस्सा ये सारी चीजें इन्सान की शर्म की चीज़े हैं जो सिर्फ परहेज़गारी के लिबास ही छिप सकती हैं .

चिंतन करना (24)

सूरा अल्शोरा 42 आयत 7

इस तरह तुम्हारे पास अरबी कुरान भेजा ताकि तुम गवां के रहने वालों को और जी लोग इसके इर्द गर्द हैं उनको रास्ता देखाओ और इन्हें कयामत के दीन का भी जीस में कोई शक नही खोफ दलाओ उस दिन एक फरीक जनत में होगा और एक फ्रीक दोज़ख में

सूरा तुघाबन 64 आयात 2

वोह हे जिस ने तुम्हें पैदा किया सो तुम में कोई काफर और कोई मोमिन और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है

सूरा एराफ 7 आयात 30

एक फिरके को राह देखाई और एक फरके की गुमराही साबत हो गई उन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर शैतान को वाली बनाया और समझते ये हैं के वोह राह पर हैं .

इन आयातों से ये साबित होता है के दुनिया में दो ही ग्रोह हैं एक इमान वाले परहेजगार इन्सान और दुसरे बेइमान इन्सान यानि काफर जिन्हों ने अल्लाह की हिदायत ना मान कर शैतान को अपना दोस्त बना लिया और वोह समझते हैं के वोह सीधे रास्ते पर हैं .

चिंतन करना (25)

सूरा अल ऐराफ़ 7 आयत 194 / 197

बेशक जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा वोह तुम्हारे जेसे बन्दे हैं फिर इन्हे पुकारो तो चाहिए के वोह तुम्हे जवाब दें (194)

और असके सवा जिसको तुम पुकारते हो वोह कुदरत नहीं रखते तुम्हारी मदद की और ना वोह खुद अपनी मदद कर सकें (197)

पाक परवरदीगर के हुक्म के सिवा जो इन्सान अपने तरह के किसी इन्सान के हुक्म के मुताबिक गलत काम करे तो ये इस इन्सान की ज़ाती बेवकूफी है और इस आयत में खास तोर पर इनलोगों के बारे में बताया गया है जो लोगों को गुमराह कर के गलत रास्ते पर चलाते हैं और कुछ वक्त के लिए बेवकूफ इन्सान अन्हे अपना नसब उलऐन समझते हैं लेकिन मुसीबत के वक्त इनकी मदद पाक परवरदीगर के सिवा कोई भी नही करता कोयूनको जिनको वोह अपना मददगार समझते हैं वोह इनकी मदद नही कर सकते .

चिंतन करना (26)

सूरा अनफल 8 आयत 1 / 41

ए महबूब तुम से गनिमातों के बारे में पूछते हैं तुम फरमाव गनिमातों का माल्क अल्लाह और रसूल हैं तो अल्लाह से डरो और आपस में मेल रखो और अल्लाह रसूल का हुक्म मानो अगर इमान रखते हो (1)

और जान रखो जो गनीमत लो तो इसका पांचवां हिस्सा अल्लाह और इसके रसूल क्राबत वालों और यतीमो और मोहताजों और मुसाफिरों का है अगर तुम इमांन लाये अल्लाह पर और ऊस पर जो हमने अपने बंदे पर उतारा फैसलों के दीन जिस दन दोनों फोजें मली थी और अल्लाह सब कुछ कर सकता है (41)

इन आयातों में " गनिमतों का माल " का मतलब जो इन्सान गुनाह कर के नजायेज़ तारिके से दोलत कमाते हैं यानि चोरी डाका और लूट मार से और जब इनहो ने गुनाहों से तोबा कर ली तो इनकी गुनाहों से कमाई हूई दोलत अल्लाह और रसूल की होती थी ताके वोह इस दोलत को नेक और जौएज़ कामों में इस्तमाल करें कियूनको इस दोलत को ठकरा कर या पानी में बहा कर जाया करने का हुक्म नही और पाक परवरदीगर ने लूटना गुनाह फरमाया है इसलए इस आयत में " गनिमातों का माल " का मतलब इमांन लाने से पहले नाज्येज़ तारिके से लुटी हुई दोलत .

चिंतन करना (27)

सूरा बनी इस्रायल 17 आयत 1

पाक है वोह जो अपने बन्दे को रातों रात ले गया मसजिद हराम से मसजिद अक्सा तक जिस के इर्द गर्द हम ने बरकतें रखीं ताके हम इस से अपनी निशानियाँ देखाए बेशक वोह सुनने वाला देखने वाला है (1)

सूरा नज्म 35 आयत 1से 10

सितारे की कसम जब वोह गाएब होने लगे तुम्हारे रफीक न बहके न भटके और वोह अपनी कवाहिश से बात नही करते वोह सिर्फ वही है जो भेजी जाती है इसको सिखाया उस सख्त कुवत वाले ताकत वाले ने फिर इस ने कसद किया और वोह सब से बुलंद किनारे पर था फिर वोह नजदिक होवा फिर और नजदीक होवा तो दो कमान के दो किनारों के फासले के बराबर रह गिया या इस से भी कम तो इस ने वही की अपने बन्दे पर जो वही की

इन आयतों के बर्तमान तर्जुमा की मताबिक ये कहा जाता है के रसूल पाक हजरत मुहम्मद अल्लाह से मलने के लिए मेराज पर गये थे लेकिन ये रवायत सरासर बेबुनयाद और गलत है और ये रवायत अल्लाह के रुतबा को भी घटाती है काएनात के जरे जरे में अल्लाह मोजूद है और अगर रसूल पाक मेराज में गये थे तो जिस जगह रसूल पाक रहते था किया अल्लाह वहां मोजूद नही था ?

इस रवायत के अनुसार अल्लाह की कोई खास या वशेष रहने की जगह है तो किया अल्लाह महदूद है ? किया वोह ला महदूद नही है ? ये सारे वाकेअत रसूल पाक को ज़हनी तोर पर नसीब हूवे थे और मक्का में जिस्मानी तोर पर मोजूद रहते हुवे इन्हें ज़हनी तोर पर रातों रात मदीना से मसजद हराम और मसजद अक्सा तक का सफर कराया गया .

ओस आयत में सितारों से मुराद रसूल हैं और रसूलों का काम है खुद सीधे रास्ता पर रहते हुवे इंसानों को इसकी पहचान देना .

चिंतन करना (28)

सूरा नहल 16 आयत 48 / 49

और किया उन्हों ने ग़ोर नही किया के जो चीज़ अल्लाह ने बनाई हे इसकी परछाई दाहने और बायें झुकती हैं और अल्लाह को सजदा करतो हैं और इसके हजूर ज़लील हैं (48)

और अल्लाह को ही सजदा करते हैं जो कुछ असमानों में है और जो कुछ जमीन में है चलने वाला और फरिश्ते और वोह गरूर नही करते (49)

इस आयत में "परछाईं " से मुराद है इन्सान का ज़मीर जो कभी नेकी और कभी बुराई की तरफ झुकता रहता है और जब इन्सान नेकी की रह अपनाता है तो वह अल्लाह को सजदा करते हैं यानि इसके हुक्मों को मानते हैं और जब वह बदी की रह अपनाता हैं तो वह अल्लाह के अजाब से जलील होते हैं और वह मकमल इमान वाला ज़मीर जो हर सूरत में अल्लाह के हुक्मो पर सजदा करते हैं और इसे अपनाते हैं फरश्ते और कुदरत की तरह और यही लोग हैं यानि फरश्ते और इन्सान जो गरूर नही करते .

चिंतन करना (29)

सूरा बनी इजराइल 17 आयत 77

दस्तूर इनका जो हम ने तुम से पहले रसूल भेजे और तुम हमारा कानून बदलता नही पाओगे

सूरा अंबिया 21 आयत 92

ये तुम्हारी उमत है जो हकीक़त में एक है और में तुम सब का परवरदीगर पस मेरी ही इबादत करो .

पाक परवरदीगर ने तमाम रसोलों के जरया एक ही दीन दुनिया में इंसानों तक पोहचाया और इस आयत (17 / 77) में पाक परवरदीगर ने सीधे तोर पर फरमाया के इनका कानून हर दोर में एक्सान रहा है और इसी कानून को रसूलों ने दुनया के हर कोने में पोहचाया और लागु किया .

तमाम इमान वाले इन्सान जो नेकी मुहब्बत परहेज़गारी इंसानियत और सुकून की रह पर चलते हैं चाहे वोह दुनया के कसी भी कोने के कियूं न हों इन सभों का दीन एक ही है और वोह कसी भी रसूल के मानने वाले ही कोयूं न हों उनका रब और दीन एक ही है .

चिंतन करना (30)

सूरा नूर 24 आयत 35

अल्लाह नूर है असमानों और जमीन का इसके नूर की मसाल ऐसी है जिसे एक ताक के इस में एक चराग वो चिराग एक फानूस में है और वो फानूस गोया एक सितारह है मोती सा चमकता रोशन होता है बरकत वाले पेड़ जेतून से जो न पूरब का न पछिम का करीब है के इसका तेल भडक उठे अगरचे असे आग न छोवे नूर पर नूर है और अल्लाह अपने नूर की राह बताता है जसे चाहता है और अल्ला मीसालें बयान करता है लोगों के लिए और अल्लाह सब जानते है .

एक एटम से जुड़ कर ही कसी की शक्ल बनती है एटम के अंदर एलेक्ट्रोंन प्रोटोन और न्यूट्रॉन मोजूद होता है और इन तीनों की दरम्यान एक ताकत है जो एक दुसरे को जोड़ कर रखती है और मुख्तल्फ़ चीजों को अलग अलग शक्ल देती है जिस तरह एक इट से दूसरी इट को जोड़ कर इमारत की शक्ल बनती है और वही ताकत अल्लाह के नूर की ताकत है इस बुनियाद पर हम कह सकते हैं के अल्लाह हर जगह मोजोद है ताकों में चिराग जिस तरह पुरे ताक को रोशन करता है ठीक इसी तरह ब्रह्माण्ड के सारे सितारे फानूस की तरह टके हूए हैं और अल्लाह के नूर की रौशनी और ताकत से समस्त ब्रहमांड रोशन है

जेतून के पेड़ से बहुत लाभ है इसके तेल से चिराग जलते हैं इसतरह अल्लाह के नूर की ताकत से सारा ब्रह्माण्ड चल रहा है अल्लाह हर जगह मोजूद है न ये पूरब में और न पछम में जब गुनाहों के दलदल में दुनिया डूब जाएगी तब अल्लाह का अजाब कयामत बनकर भडक उठे गा इस वक्त नेक और परहेजगार इंसानों को दोज़ख की आग नही छु पायेगी और इसे अल्लाह के नूर पर नूर की खुशा हासिल होगी .

चिंतन करना (31)

सूरा अहज़ाब 33 आयत 4

कसी आदमी के सिने में अल्लाह ने दो दिल नही रखे और अपनी जिन बिवयों को तुम माँ कह दो इन्हें अल्लाह ने तुम्हारी माँ नही बनाया और न तुम्हारे ले पालकों को तुम्हारा बेटा बनाया ये तो तुम्हारे अपने मंह का कहना हैं और अल्लाह हक बातें बताता है और वोह रह दिखता है .!

पाक परवरदीगर के दरबार में मुंह बोले रिश्ते की कोई अहमित नहीं कोई भी रिश्ता चाहे वो कसी कसम का हो इसे दिल से नीभाने का हुक्म है कोई भी रिश्ता कियूं न हो हर रिश्ता पाक परवरदीगर की मर्जी से ही मुकर्र होता है और इसकी मर्जी को दिल से निभाना और अमली जिंदगी में असे हमेशा के लिए कायेम रखना इमान वालों के फर्ज में शुमार होता है उधारन स्वरुप अगर कोई मर्द कसी ओरत को अपनी बहेन या बेटी समझे और बाद में इस से शादी कर ले तो ये सरासर गुनाह है इस रिश्ता को हमेशा दिल से कबूल करें और असे सगी बहन बेटी का रुतबा देने के साथ साथ असे विरासत में भी हिस्सा देना चाहेए

सारे रिश्ते अद्रनाये हैं और इन्हें दिल से ही मानना चाहेये कियूनके यही पाक परवरदीगर का हुक्म और फरमान है .

चिंतन करना (32)

(32)

आज के दोर में कुछ मोजुदा ख्यालात मज़हब के नाम पर समाज में नाफ्ज़ है जिसकी इजाज़त मज़हब नही देता और न ही रसूलों के किरदार से साबित होता है जेसे के कुछ लोग सोचते हैं के गेर कोम के लोगों को दावत में नहे बुलाना चाहए चाहे वो इफ्तार की दावत हो या पूजा की और इस स्लसले में वह लोग अपनी तरफ के गेर अकली और समाज के नुकसान वाले ख्यालात पेश करते हैं .

एक दुसरे के तेहवार में शिरकत करना समाज के लिए फायदे मंद है . इस से समाज में तहज़ीब का इख्लाफात दूर होता है और भुई चारह की फिजा कायेम होती है और एक दुसरे के करीब आने का मोका मिलता हैं तारीख गवाह है के गोरा / काला , अमीर/ गरीब , छोटा / बड़ा , सभों के लिए रसूल अल्लाह की दावत और रहम ओ कर्म एक सा होता था और हर रसूल ने दुसरे कोम के लोगों को भी दावत के जरया अपनी अच्छाई पेश करने का हुक्म दिया और वेदक समाज ने भी कामों के आधार पर इंसानों को चार वर्ग में बाटा और उनके दरम्यान कोई भी गेर बराबरी का सलूक जाएज़ नही रखा लिकन ब्रहामणों ने अपने मतलब के लिए इनको चार तबको में छूवा छूत के बहाने बाँट दिया .

चिंतन करना (33)

आखरी खुतबा

1940 से पहले जो हदीस की किताबें लखी गुई थी चाहे वोह बुखारी शरीफ हो या मुस्लिम शरीफ इस में रसूल पाक हजरत मोहम्मद के आखरी खुतबा के अल्फाज़ ये थे " में तुम लोगों के दरम्यान एक चीज़ छोड़ कर जा रहा हूँ अगर तुम ने इसे मज़बूती से पकड़े रखा तो कभी गुमराह नही होगे " वोह किया चीज़ है ? किताब अल्लाह !

लेकिन आजकल जो हदीस की किताबों के जो एडिशन छप रहे हैं इस में आखरी खुतबा के तोर पर नए अल्फाज़ जोड़े गाए हैं और वोह ये हैं " में तुम में दो चीज़े छोड़ कर जा रहा हूँ एक किताब अल्लाह दूसरी मेरी सुन्नत " और " में तुम में दो चिज़ीं छोड़ कर जा रहा हूँ एक किताब अल्लाह और दुसरे मेरे अहल बेत "

दुनिया के तमाम इंसानों और इंसानी रहमत के लिए है कुरान और कसी भी रसूल ने नही चाहा के किताब अल्लाह को छोड़ कर इनकी परस्तिश की जाये इस लिहाज़ से में दावे की साथ कह सकता हूँ के रसूलों ने

अपना ज़ाती रहन सहन अपने मानने वालो पर नही थोपा लेकिन कुछ कासा बद्स्त और मेदा परस्त लोगों ने रसूल अल्लाह के नाम और किरदार को अपनी दोकानदारी का ज़रया बनाया .

चिंतन करना (34)

रसूल पाक हजरत मुहम्मद की शादी के वाक़यात काबल ग़ोर हैं ? कुछ किताबें ये फरमाती हैं के अप ने हजरत खतीजा की ज़िन्दगी में कोई दूसरा निकाह नही किया और हजरत खतीजा 25 साल तक रसूल अल्लाह की ज़ोजिय्त में रहीं और खतीजा की वफात 65 साल की उम्र में रमज़ान 10 हिजरी में हूई उसवक्त रसूल पाक की उम्र 50 साल की थी .

सूल पाक हज़रात मुहम्मद की बाकी 10 शादियों की मुख्ल्फ़ तारीखों पर ग़ोर फरमाएं

हजरत सुदा : हजरत खतीजा के इंतकाल के कुछ दिनों बाद

हजरत आयेशा : 2 हिजरी या 3 हिजरी

हजरत हफ्सा : 2 हिजरी या 3 हिजरी

हजरत ज़ेनाब : रमजान 3 हिजरी

हजरत जुवारिया : 5 हिजरी या 6 हिजरी

हजरत उम हबिबह : 6 हिजरी या 7 हिजरी

हज़रत साफिया : इनकी कोई तारीख नही है

हजरत मेमोना : ज़िक्दाह 7 हिजरी

हज़रात उम सलमा : शवल 2 हिजरी या 3 हिजरी या 4 हिजरी

हजरत जेनब बनत ह्ज्श : ज़िकदाह 3 हिजरी या 5 हिजरी

नोट : ब हवाला फज़येल अमाल

रसूल पाक की इन सारी शादियों में इख्त्ताफात है जब हजरत खुतेजा की वफात 10 हिजरी में हूई और इनकी ज़िन्दगी में अप ने कोई निकाह किया ही नही तो 2 हिजरी से लेकर 10 हिजरी तक शादियों के वाकेयात कहाँ से मिलते हैं .

हेरत की बात है के जब रसूल पाक की उम्र 50 साल की थी तो इनकी शादी हजरत आयेशा से (जिनकी उम्र 6 साल की थी) बताई गई और जब हजरत आयेशा की उम्र 18 साल की हुई तो रसूल पाक की वफात हुई .

रसूल पाक को रहमत अलअमीन कहा जाता है तो 18 साल की आयशा पर किया रहमत छोड़ी ज्ब्को अप ने अपनी पूरी जवानी हजरत खुतेजा की साथ गुजारी ?

सवाल ये अता है के अचानक 50 साल की उम्र में आपको इतनी शादियों की किया ज़रूरत थी ? एक और वाकेया कुरैशी ओरत हजरत सूदा हैं जिन से रसूल पाक ने निकाह का इरादाह किया लेकिन उन्हों ने बचों की मजबूरी के तहत इनकार फरमाया कियूनके वोह नही चाहती के अनके बचे रसूल पाक के सरहाने शोर मचाएं इसका कोई तारीखी सबूत नहीं है और इस बात को रसूल पाक के नाम से जोड़ कर इनकी शान में बेअदबी और गुस्ताखी की गुई है .

हज़रत हफ्सा जब बेवाह हो गयी तो इनके वालिद उमर ने हजरत अबुबकर से निकाह की दरख्वास्त की लेकिन कोई साफ जवाब न पाया तो हजरत उस्मान की तरफ रजूए किया तो उन्हों ने इंकार कर दिया हजरत उमर की शिकायत पर रसूल पाक ने इनकी बेटी से खुद निकाह किया और हजरत उस्मान का निकाह अपनी बेटी उम कुलसूम से कर दिया .

इस तरह के और भी वाकेअत मुख्ल्फ़ किताबों में मलते हैं जिसकी की कोई भी तारीखी बुनियाद नहीं है. पचास साल की उम्र तक एक बीवी से गुज़ारा करने के बाद अचानक " प्रस्तुत " का सिलसिला शुरू हो गया इन सारी झूटी कहानियों को रसूल पाक के पाक दामन के साथ जोड़ कर कुछ लोगों ने अपने गंदे ख्यालात पर कामयाबी पाई .

इस सिलसले का एक वाकेया बांदी मरीया का भी है जिस से रसूल पाक की एक ओलाद हजरत इब्राहीम की पैदाइश का जक्र भी है जी 8 हिजरी में है शादी के बगेर मुबशरत गुनाह यानि ज़ना है जो अल्लाह का कानून हैं तो किया रसूल पाक ने मरीया से शादी की थी ? किया अल्मों ने असे बीवी का दर्जा दिया ? बांदी और बीवी का फर्क किया आलिमों को मालूम नहीं ? हकीकत तो ये है के ये सारे वकेअत रसूल पाक की जिंदगी में ज़हूर नही हुवे और जब पहली बीवी की जिंदगी में रसूल पाक ने कोई दोसरी शादी की ही नही तो 8 हिजरी में बांदी मरीया से अवलाद का जक्र कहाँ से आता है .

चिंतन करना : रसूल अल्लह की पहली बीवी खतोजा का इन्तकाल 10 हिजरी में हूवा ठीक इसी तरह हजरत क्रष्ण जी पर भी जन्सी इल्ज़ामात लगये गये थे विष्णु पूरण में हजरत क्रष्ण को सीधे तोर पर " योनी भक्त " का ख़िताब दिया गया थे जबके महाभारत में हजरत क्रष्ण जी का राधा के साथ मोहब्बत का कोई जक्र नहीं मिलता और राधा रिश्ते में इनकी "मामी" लगती थी और सनातन धर्म के मुताबक मामी का रिश्ता मा के बराबर होता हैं इस लिहाज़ से जान बुझकर तारीख को गलत तारिका से पेश किया गया हैं और कसी गंदे जहन के इन्सान ने अपनी गन्दी जन्सी खवाइश को कामयाब करने के लिए ये सारे घिनोने वाकेयात रसूल अल्लाह के नाम से जोडे हैं .

हक ए इलाही यही है के हजरत क्रष्ण जी के साथ राधा की पाक और रुहानी मुहब्बत थी और अनके दरम्यान कोई जिस्मानी तालुक नहीं था

चिंतन करना (35)

सूरा मुहम्मद 47 आयत 15

अहवाल उस जननत का जिस का वादा परहेज़गारों से है इस में एसी पानी की नहरें हैं जो कभी न बिगड़ें और ऐसी दूध की नेहर जिसका मज़ा न बदला और ऐसी शराब की नेहर जिस के पीने में लज्ज़त है और ऐसी शाहेद की नहरें जो साफ की गई हैं और अनके लिए इस में हर कसम के फल हैं और अपने रब की मगफरत के ऐसे चेन वाले इनके बराबर होंगे जिन्हें हमेशा आग में रहना है और इन्हें खोलता हूवा पानी पिलाया जायेगा के आंतों के टुकड़े टुकड़े कर देगा !

कुरान शरीफ की इस आयत में पाक परवरदीगर ने बड़े खूबसूरत अंदाज़ में जननत यानि अपने नूर की अफादियत को बयान फरमाया और इस सिलसले में इन्सान को नेकी और परहेज़गारी की हिदायत फरमाई और ईनके नक्श कदम पर चलने वालों को जननत का वादा दिया और इस वादे को बियान करते वक्त पानी दूध शराब और श्हेद की मिसाल बयान फरमाई

पानी की नहरें जो कभी न बिगड़ें :

मेरी नज़र में इन्सान की इमान वाली जन्दगी और पाक परवरदीगर की बताई हूई साफ और सुथरी हिदायत के साथ पानी की तुलना की कियूनको पानी का कोई रंग बू या अपनी शक्ल नही होती और इन्सान की बुनियाद है पानी ठीक इसी तरह अल्लाह का नूर और हिदायत भी है और इस नूर की कोई शक्ल नही दुनिया में पानी का वजूद कभी खत्म नही होगा सिर्फ हालात का तुगेयेर बरकरार रहता है .

पाक परवरदीगर का वजूद सारे ग्रोह उमति या तबका से मुबररह है .

पानी को जिस तरह से भी रखें वो वोही शक्ल इख्त्यार कर लेता है ठीक इसी तरह पाक परवरदीगर को किसी भी शक्ल में ढाल सकते हैं .

दूध की नहरें जिसका मज़ा न बदला :

जिस तरह दूध फायेदे मंद और मजेदार होता है इसी तरह पाक परवरदीगर की हिदायत से जो लाभ होता है इसके ज़रये अमन व अमान वाली ज़िन्दगी का मज़ा ले सकते हैं जो हर इन्सान की चाहत है .

ऐसी शराब की नहरें जिस के पीने में लज़त है और ऐसी शहेद की नहरें हें जो साफ की गुई हैं .

यहाँ पर इस शराब का जक्र है जिस का नशा पाक परवरदीगर की नूर की तलाश में बेचेन और इन्सान को मदहोश कर देता है और जसे पि कर अल्लाह से मुहब्बत का मज़ा नसीब होता है और ऐसी किस्मित वाली रूह को साफ सुथरा शेहद की तरह मीठा और फायदे मंद बना कर अल्लाह अपनी जननत यानि अपने वजूद में दाखिल कर लेता है पाक परवरदीगर से मोहब्बत करने वालों का दूसरों से किया मुकाबला .

चिंतन करना (36)

कुछ लोग एक दुसरे की मज़हबी किताबों का मुताला करने से कतराते हैं और तमाम कसम का बहाना देकर अपने ख़यालात को साबित करने की कोशिश करते हैं सारी मज़हबी किताबों ने अछि बातें और नेक ख्यालात की रह बताई तो फर इसके अध्ययन से नफरत कियूं ? इस समाज में ये एक अहम् वजह है या कमी है के इन्सान एकदूसरे की किताबों का मुताला (अध्ययन) नही करते और इस वजह से लोग एकदूसरे के खलाफ नफरत उगलते हैं . कमज़ोर इमान वाले इन्सान दूसरों की तहज़ीब का मुताला करने से डरते हैं और दूसरों की अछुई को मंजूरी देने से भी डरते हैं ! इमान से खारज होने के डर से ?

कुरान शरीफ का पाठक गीता नहीं पढ़ता और गीता पढने वाला कुरान शरीफ नही पढ़े गा ?

चिंतन करना ! किस डर से ? किया इन किताबों में खराब बातें लिखी हुई हैं या खराब बातें सिखाई जाती हैं ? मुंह से तो हर कोई कहता हे के सारे दीन अल्लाह के हैं लेकिन असे दिल से कबूल कोई नही करता और खास तो पर " दीन मुहमदी " जहालत और दुसरे मज़ाह्ब के किताबों की बेहुर्मती की इजाज़त नहीं देता और रसूल पाक के एक कथन के अनुसार " तालीम हासिल करने के लिए अगर चीन जाना पड़े तो जाओ .

इसके साथ कुरान शरीफ की कुछ आयतें

सूरा अल्कहफ़ 18 आयत 57

इस से बढ़कर ज़ालिम कोण जसे इसके रब की आयतें यद् दिलाई जाएँ तो इन से मुंह फेर ले और इसके हाथ आगे भेज चुके इसे भूल जाये हम ने इनके दिलों में गिलाफ कर दीये के कुरान न समझें और इनके कानो में गरानी और अगर तुम हिदायत की तरफ बुलाओ तो जब भी हरगिज़ रह न पाए .

सूरा यासीन 36 आयत 9

और हम ने अनके आगे दीवार बना दी और अनके पीछे एक दीवार और इसे ऊपर से ढँक दिया तो इन्हें कुछ नहीं सूझता ,

चिंतन करना (37)

रसूल पाक हजरत मुहम्मद जब नमाज़ अदा करते थे तो नवासा रसूल आपके कंधे पर सवार हो जाते थे जिसकी वजह से अप अपना सजदा लम्बा कर देते थे और हजरत कृष्ण जी का बच्चो के साथ बचपना यानि बाल लीला इन्सान के दल व दिमाग को छु जाता है जो मनुष बचों से मोहब्बत नहीं करता या बचों के साथ बेरहमी से पेश आता है यकीनन वोह इन्सान शैतान का भाई है बचों से नोकरों का काम करवाना इन्हें तालीम से दूर करना अनके साथ संगदिली से पेश आना गलत तालीम देना मार पीट कर मज़हबी आयतें याद करवाना मज़हब के नाम पर बच्चों से चंदा करवाना बचों में नफरत की बुनयाद डालना ये सब गुनाह में शुमार होता है और जो ये कम करते हैं अन्हें कानून के ज़र्य सख्त से सख्त सज़ा मिलनी चाहिए .

चिंतन करना (38)

जम्हूरय्त की अज़ीम अल शान मिसाल

बशिन्दगन मदीना (जिस में यहूदी मुसलमान मुशर्क और सितारा परस्त) के दरमियान इख्लाफात को सामने रखते हूए हिजरत के पहले साल रसूल पाक हजरत मुहम्मद ने तमाम मदीना के लोगों की मोजूदगी में एक अहद नामा मुर्तब फरमाया था और इस अहद नामे से अनके जम्हूरी ख़यालात की बेहतरीन मिसाल दुनिया वालों को मली और इस ख़यालात को अज दुनया के ज्यादा से ज़यादह लोगों ने अपनाया .

ये अहाद नामा मन्द्रजा ज़ेल हैं

तमाम मदीने वाले बाहर वाले दुश्मन का मुकाबला मल कर करेंगे .

यहूद करेश और मुस्लमान कोई किसी के दुश्मन को पनाह नही देगा .

मदीने का कोई भी कबीला कसी दुसरे के दीन व मजहब जान व माल में मुदाख्ल्त नहीं करेगा और न कसी को नुकसान पहुंचाए गा .

मदीने के हर झगड़े और फसाद के फेसले की ज़िम्मेदारी रसूल पाक पर थी .

बाहर के दुश्मन के साथ जंग के अखराजत (खर्चे) या फायेदा तमाम मदीने वाले बराबर के हकदार होंगे.

मदीना के यहूदी कुरेश और मुस्लमान एक दुसरे के दोस्त को अपना दोस्त समझें गे .

मदीना के अन्दर खून रेज़ी (रक्तपात) हराम क़रार दी गुई और मजलूम(अत्याचारित) की खिदमत सब पर फर्ज . इस अहद से साफ ज़ाहिर होता है के रसूल पाक की कोशिश एक अमन व अमान और गुनाहों से पाक समाज कायेम करना था ओर हर कोई अपने मज़हब और माल का हकदार है और इस में कोई झगडा नहीं

इन्सान का फर्ज हे के वोह गुनाह के खिलाफ जहाद करे और मजलूम की सहायता करे और एक दुसरे की अच्छाई को अपनाकर समाज को पाक व साफ़ रखें

चिंतन करना (39)

समाजीक मसला

उत्तर पच्म्म हिंदुस्तान म " सिन्धु " नदी के किनारे जो आबादी थी वहां से " हिन्दू " शब्द आया है . ग्रीक राजा सिकंदर हिंदुस्तान आया तो इस ने सिन्धु नदी के किनारे रहने वालों को " हिन्दू " कहकर पुकारा कियूनको वोह लोग " स " को " ह " कहकर पुकारते थे इसलिये वहीँ से हिन्दू सिन्धु बन गया और सिन्धु नदी के किनारी रहनी वाले लोग " अरिया" थे और अन लोगों का धर्म सनातन था यानि जो शुरू से चलता आरहा है .

वेदक युग में अरिया रशी मुनि गय भेंस और घोडे के गोश्त को उम्दो (उत्तम) खाना समझ कर सोम रस के साथ खाना पसंद करते थे हिन्दुस्तानी तारीख गाये को लेकर फिरको बटकर फसाद की गवाही देती है हेरत की बात तो यह है के भारत के दो विशेष फरके " हिन्दू / मुसलमान " दोनों की धरम की किताबों म खुराक

के तोर पर गाये के गोश्त को उमदाह करार दिया है वैदिक युग में आर्य रशी मुनि गोश्त खाना बेहद पसंद करते थे विशेष तोर पर गएँ भेंस घोरा भेड और बकरी उधारन की तोर पर रग वेद 11.17. 6 शलोक में देवता इंद्र को भेंस के गोश्त से खुश करने का जकर पाया गिया है .

इस सिलसले में मेरे खियालत ये हैं के गाये भेंस घोडा भेड़ बकरी और सूवर कसी भी कसम का गोश्त कियूं ना हो ये पूरी तरह इंसान की ज़ाती पसंद और नापसंद पर होना चाहए और गोश्त का इस्तमाल करते वक्त मोसम हालात और सेहत को सामने रखना चाहिए .

चिंतन करना (40)

गीता अधाये 7 शलोक 24 / 25

कम अकल लोग मुझे ठीक से ना जानने के कारण सोचते हैं के में यानि परम पुरुष भगवान पहले निराकार था और अब इस रूप को धारण किया है अपनी कम अकली की वजह से वोह मेरे अवनाशी और अज़ीम कुदरत को नहीं जानते (24)

में कम अक़ल और मुर्ख लोगों के सामने कभी ज़ाहिर नही होता इनके लिए मं हमेशा मेरी योग माया शक्ति के दुवारा छपा रहता हूँ इस्ल्ये वोह नही जान सकते के में अजन्मा और अविनाशी हूँ .

गीता की इन आयतों से साफ ज़ाहिर होता है के पाक परवरदीगर की कोई वषेश शक्ल नहीं लेकिन जो लोग इनकी विशेष शक्ल देने की कोशिश करते हैं वोह कम अक्ल हैं इस ल्हाज़ से पाक परवरदीगर को इंसानी शक्ल देने वाले लोग गीता के अनुसार कम अक्ल हैं पाक परवरदीगर की न कोई शक्ल है और न कोई उनके रहने का कोई विशेष अस्थान अल्लाह ताला की मोजुदगी दनियाँ के जरे जरे में हे इन्सान अपनी कम अकली की वजह से पाक परवरदिगार के नाम पर इमारत बना कर अपने मकसद की अनुसार इबादतगह बनाते हैं और फर यही इबादतगह इंसानों के दरमियन नफ़रत और फसाद का कारन बन जाती है .

.